इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

इन्दिरा गांधी
राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
समाज कार्य विद्यापीठ

BSW-121
व्यावसायिक समाज कार्य और इसके मूल्य

खंड

3

समाज कार्य के मूल्य-I

इकाई 1
समाज कार्य के एक मूल्य के रूप में मानवता की सेवा 5

इकाई 2
समाज कार्य के एक मूल्य के रूप में सामाजिक न्याय 15

इकाई 3
समाज कार्य के एक मूल्य के रूप में मानव सम्बन्धों का महत्व 26

इकाई 4
समाज कार्य के एक मूल्य के रूप में व्यक्ति का मूल्य और गरिमा 37

इकाई 5
समाज कार्य के एक मूल्य के रूप में सत्यनिष्ठा 49

इकाई 6
समाज कार्य के एक मूल्य के रूप में सुयोग्यता/सक्षमता 60

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

विशेषज्ञ समिति

प्रो. सुषमा बत्रा
समाज कार्य विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. आर. आर. पाटिल
समाज कार्य विभाग
जामिया मिलिया, नई दिल्ली

डॉ. बीना एन्थोनी रेजी
अदिति महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. संगीता शर्मा धोर
डॉ. भीम राव अम्बेडकर कालेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. ग्रेशियस थोमस
समाज कार्य विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. रोज़ नेम्बियाकिम
समाज कार्य विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. सोम्या
समाज कार्य विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. जी. महेश
समाज कार्य विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. सायन्तनी गुईन
समाज कार्य विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण दल

इकाई लेखक

1&2 डॉ. अनीष कुरियन
3,4&5 डॉ. मालाथी अदुसुमाली एवं डॉ. नमिता जैनर
6 डॉ. शीबा जोसफ

विषय संपादक
डॉ. प्रशांत कुमार घोष
समाज कार्य विभाग
विश्व–भारती

खंड संपादक
डॉ. सायन्तनी गुइन
इग्नू, नई दिल्ली

भाषा संपादक
डॉ. नीतू
शिक्षा विभाग
नई दिल्ली

कार्यक्रम एवं पाठ्यक्रम संयोजक
डॉ. सायन्तनी गुइन
इग्नू, नई दिल्ली

मुद्रण निर्माण

श्री. कुलवंत सिंह
सहायक कुलसचिव (प्रकाशन)
समाज कार्य विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

अक्टूबर,2020

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2020

ISBN-81-

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफ (मुद्रण) द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के बारे में और अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–*110 068 से प्राप्त की जा सकती है।*

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से निदेशक, समाज कार्य विद्यापीठ द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेजर कम्पोजिंग : राजश्री कम्प्यूटर्स, वी–166ए, भगवती विहार, उत्तम नगर, (नजदीक सेक्टर 2, द्वारका), नई दिल्ली–110059

खंड 3 का परिचय

''समाज कार्य के मूल्य–I'' BSW-121 का खंड तीन है। यह छः इकाईयों से मिलकर बना है।

प्रथम इकाई 'सेवा' मानवता की सेवा, मूल्य के सिद्धान्तों तथा समाज कार्य के प्रमुख सेवा क्षेत्रों का वर्णन करती है। यह आगे मानवता की सेवा, मूल्य के महत्व को रेखांकित करती है। द्वितीय इकाई 'सामाजिक न्याय'; सामाजिक न्याय की अवधारणा का अन्वेषण करती है। इकाई 3 ''मानव सम्बन्धों के महत्व'' के विषय में है। यह इकाई समाज कार्य में मानव सम्बन्धों के महत्व का एक मूल्य तथा आचार नीति के रूप में विश्लेषण करती है। यह मानव सम्बन्धों की सम्पर्क प्रणाली का विश्लेषण करती है। इस इकाई में एक प्रभावी सम्बन्ध की विशेषताएं तथा समाज कार्य अन्तःक्षेप सम्बन्धों का उपयोग करने के सिद्धान्तों पर विचार–विमर्श किया गया है। इकाई 4 'व्यक्ति की गरिमा तथा मूल्य' गरिमा की अवधारणा का वर्णन करती है तथा एक समाज कार्य मूल्य के रूप में व्यक्ति की गरिमा तथा मूल्य के अर्थ का मूल्यांकन करती है। यह इकाई मानवीय गरिमा प्राप्त करने की चुनौतियों पर प्रकाश डालती है तथा मानवीय गरिमा हेतु चुनौतियों से निपटने में समाज कार्यकर्त्ताओं की भूमिका का वर्णन करती है। पंचम इकाई 'सत्यनिष्ठा', समाज कार्य व्यवसाय हेतु सत्यनिष्ठा का एक नीति–संहिता के रूप में वर्णन करती है। यह केस उदाहरण सहित सत्यनिष्ठा के व्यक्तिगत, सामाजिक तथा पेशेवर अर्थ का अन्वेषण करती है तथा समाज कार्य व्यवसाय में सत्यनिष्ठा के अभ्यास की सीमाओं पर प्रकाश डालती है। इस खंड की अंतिम इकाई 'सक्षमता' है। यह सक्षमता के अर्थ, सोपानों, प्रकार तथा निर्धारक तत्वों का वर्णन करती है। इस इकाई में, सक्षमता के नैतिक सिद्धांतों तथा समाज कार्य अभ्यास में मूल सक्षमताओं पर भी विचार–विमर्श किया गया है।

सम्पूर्ण रूप में कहा जाए, यह खंड आपको समाज कार्य के मूल्यों की एक विहंगम अवलोकन प्रदान करेगा।

इकाई 1 समाज कार्य के एक मूल्य के रूप में मानवता की सेवा

*अनीष कुरियन

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1 1 प्रस्तावना

1.2 मानवता की सेवा के लिए अवधारणा और स्वरुप

1.3 समाज कार्य के अंश के रूप में मानवता की सेवा

1.4 मानवता के लिए सेवा के मूल्य के सिद्धांत

1.5 समाज कार्य के प्रमुख सेवा क्षेत्र

1.6 सारांश

1.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निम्न को समझने में सक्षम होंगे:

- मानवता की सेवा के मूल्य को समझने;
- मानवता की सेवा के मूल्य के सिद्धांतों की व्याख्या को समझने;
- समाज कार्य के प्रमुख सेवा क्षेत्रों की व्याख्या करने;
- मानवता की सेवा के मूल्य के महत्व को प्रविष्ट करने ।

1.1 प्रस्तावना

समाज कार्य व्यवसाय का उद्देश्य लोगों के साथ काम करके मानव क्षमतावादी विकास और मानवीय जरुरतों को संपूर्ण करना है और लोगों को व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण के सर्वोत्म संभव स्तर प्राप्त करने के लिए सक्षम करना है। इसका लक्ष्य प्रत्येक व्यक्ति, समूह, परिवार और समुदाय को सक्षम बनाना और सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संसाधनों के लिए न्यायसंगत पहुंच उपलब्ध कराना है। समाज कार्य विकास, समूह कार्य, सामुदायिक कार्य, सामाजिक विकास, समाज कार्य, समाज कार्य नीति विकास, शोध, समाज कार्य शिक्षा, इन क्षेत्रों में पर्यवेक्षी और प्रबंधकीय कार्य हो सकते हैं। एक समाज कार्यकर्त्ता होने के नाते एक अत्याधिक जिम्मेदारी होती है क्योंकि यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें किसी व्यक्ति की जिंदगी और अन्य के हित पर कार्य किया जाता है।

मानवता की सेवा समाज कार्य का आधार है जो मानव कल्याण के उद्देश्य से संबंधित है। समाज कार्य व्यवसाय का लक्ष्य है कि लोगों के लिए सेवाओं की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिए मानवता की खोज का मूल्य कार्यरत हो जिसमें से अन्य सभी मूल्य भी उत्पन्न हों और सेवा वितरण प्रणाली में व्यवसायी और एजेंसियों के बीच अभिगमता, उत्तरदायित्वता और समन्वय में सुधार करने का प्रयास करता है। सहायता

*डॉ. अनीष कुरियन, अम्बेडकर विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

प्रक्रिया में, समाज कार्य व्यवसाय, मानवता के प्राथमिक मूल्य और उद्देश्य के रूप में सेवा प्रदान करता है। एक अभ्यासगत् व्यवसायिक समाज कार्यकर्त्ता यह मानते हैं कि दूसरों की सेवा करना स्व–हित से ज्यादा ज़रुरी है और उपभोक्ता की आवश्यकताओं को अपने स्वयं के व्यक्तिगत हितों से आगे रखते हैं।

1.2 मानवता की सेवा की अवधारणा और स्वरुप

मानवता समाज में मात्र एक–दूसरे के बीच मधुर संबधं बनाए रखने के बारे में नहीं है परंतु यह स्थायी मूल्य के माध्यम से समाज के बीच एक संबधं के निर्माण से तात्पर्य है। मानवजाति, जरुरत के समय जुनून और सहानुभूति दिखाने के बारे में नहीं है, लेकिन जीवन के सभी क्षेत्रों में प्रेम और सम्मान के पक्ष में है। मानवता, मानव कल्याण और सभ्यता के प्रतीक के लिए मात्र एक शब्द ही नहीं है, बल्कि यह मानवीय व्यवहार और उसकी रचनाओं के क्षितिज से भी परे है। यह मानव जाति के प्रत्येक प्रयासों में मस्तिष्क के साथ ह्रदय द्वारा उपयोग के पक्ष में है। मानवता को सामान्य रूप से परोपकार के रूप में माना जाता है। मानवता के लिए सेवा केवल विकलांगों, असहाय या गरीबों की विपरीत परिस्थितियों के प्रति परोपकार के शब्दों तक ही सीमित नहीं है बल्कि उन सभी को जो भी मानसिक और भावनात्मक रूप से प्रभावित हैं। हालांकि ये समाज के उच्च स्तर से भी हो सकते हैं, इन्हीं कार्यों से समस्याओं को पृथक कर सीमित करना ही नहीं है। सबसे महत्वपूर्ण गतिविधि मे व्यक्ति को अपने सभी साथी सदस्यों की सेवा के लिए शामिल होना चाहिए।

सामान्य शब्दों में 'सेवा' शब्दों से तात्पर्य व्यक्तियों परिवारों तथा समुदायों जिन्हें विशेष सहायता की आवश्यकता होती है, को व्यक्तियों, परिवारों सार्वजनिक अथवा प्राइवेट एजेन्सियों के माध्यम से विभिन्न कार्यक्रम उपलब्ध कराना है। हर समाज में सामाजिक और आर्थिक असुरक्षाएं हैं जो वृद्धावस्था, बेरोजगारी, विकलांगता, निराश्रय या परिवार के लिए कमाने वाले की मृत्यु के साथ होती है। निजी और सार्वजनिक कल्याणकारी संगठनों के साथ–साथ धार्मिक और समाजसेवी संगठन जरुरतमंदो को सहायता प्रदान करते हैं। सेवा विकलांगों, असहाय या गरीबी के प्रति शब्दों तथा कार्यों से दया दिखाता नहीं हैं, बल्कि उन सभी को भी जो मानसिक और भावनात्मक रूप से प्रभावित हैं। हालांकि ये समाज के उच्च स्तर हो सकते हैं। अतः सेवा एक ऐसा मूल्य है जिसकी अपेक्षा प्रत्येक समाज कार्य कार्यकर्त्ता से की जाती है। एक पेशेवर समाज कार्यकर्त्ता द्वारा प्रदान की गई सेवा का उद्देश्य व्यक्तियों, परिवारों और समूहों को प्रभावी कार्यप्रणाली के लिए अपनी क्षमताओं को पुनः स्थापित या विकसित करने में सहायता करना है और वह आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समुदायों का समर्थन करने के लिए कार्य करता है। समाज कार्य क्षेत्र में लोगों और सामाजिक संस्थानों के बीच पारस्परिक विचार–विमर्श पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। जो एक व्यक्ति को जीवन के आवश्यक कार्यों को पूरा करने तथा लक्ष्यों को पहचानने की क्षमता पर प्रभाव डालता है।

सेवा एक व्यापक शब्द है जो विभिन्न व्यवसायियों द्वारा की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों को दर्शाता है। समाज कार्यकर्त्ता भी एक तरीके से इस श्रेणी में निम्न हो सकते हैं, जहां मानव सेवा, समुदाय और आवश्यकता वाले व्यक्तियों की आबादी वाले के क्षेत्र के रूप में सेवा से परिभाषित है, लेकिन समाज कार्य में सेवा का भिन्न अर्थ है। समाज कार्य व्यवसायिक मूल्य के रूप में समाज कार्यकर्त्ता अपने समय को लोगों के साथ सीधे बातचीत करते हुए, उनकी कठिनाइयों के बावजूद उन्हें समाज में कार्य करने में सहायता प्रदान करते हैं। समाज कार्यकर्त्ता प्रत्येक व्यक्ति को एक विशेष व्यक्ति के रूप में सहायता करने और उनकी कठिनाईयों को रेखांकित कर सुलझाने की एक प्रक्रिया को निर्धारित करने की कोशिश करते हैं, न कि हर बाधा को दूर करता है। इसके

लिए न केवल उच्च स्तर की करूणा तथा धैर्य की आवश्यकता होती है, वरन उस समुदाय तथा मामले, जिसकी सेवा की जाती है, के लिए उपलब्ध संसाधनों की विशिष्ट जानकारी होना भी आवश्यक है।

1.3 समाज कार्य के मूल्य के रूप में मानवता की सेवा

समाज कार्य मूल्य आधारित व्यवसाय है। एक व्यवसायकर्त्ता का जीवन मूल्यों पर आधारित है। एक समाज कार्यकर्त्ता का जीवन भी मूल्यों पर आधारित और निर्देशित है, जो कुछ मानकों, सिद्धांतों और विश्वास को निर्धारित करता है। मूल्य एक रोड़ नक्शे के समान है जो जीवन के लिए किसी के दृष्टिकोण और दिशा में बदलाव लाते हैं (थॉमस, 2016)। व्यावसायिक नैतिकता के क्षेत्र में 'नैतिक मूल्य' आमतौर पर सामान्य नैतिक सिद्धांतों का रूप लेते हैं, कि कैसे व्यवसायियों को उन सभी लोगों के साथ व्यवहार करना चाहिए, जिनके साथ वे काम करते हैं और सही या गलत अभियान को किस प्रकार चुनना चाहिए। विजिलैट (1974), मूल्यों को'समाज कार्य अभ्यास का आधार' मानते हैं। जब एक व्यवसायिक कार्यकर्त्ता अपनी क्षमता के अनुरुप कार्यरत होता है, तो समाज कार्यकर्त्ता व्यक्तिगत लक्ष्यों या लाभ से पहले व्यवसायिक सेवाओं को वरीयता देते हैं और समाज के लिए अनुशासित और उत्तरदायित्व तरीके से अपनी शक्ति और अधिकार का उपयोग करते हैं।

दूसरों की सेवा समाज कार्य के मुख्य मूल्यों में से एक है, जिसमें से अन्य मूल्य विकसित होते हैं। सभी समाज कार्यकर्त्ता जानते हैं कि दूसरों की सेवा स्व–हित से अधिक महत्वपूर्ण है और इसलिए वे अपने मुवक्किल की आवश्यकताओं को अपनी आवश्यकताओं से अधिक वरीयता देते हैं।

व्यावसायिक अभ्यास में, समाज कार्यकर्त्ता व्यक्तिगत लक्ष्यों या लाभ से पहले व्यावसायिक सेवा प्रदान करते हैं, और समाज कार्य व्यवसाय, ज्ञान और कौशल में योगदान करता है, जो संघर्षों के प्रबंधन और संघर्ष के व्यापक परिणामों में सहायता करता है।

समाज कार्यकर्त्ता स्व–हित से ऊपर उठकर दूसरों को सेवा प्रदान करते हैं। समाज कार्यकर्त्ता अपने ज्ञान, मूल्यों और कौशल से लोगों की जरुरत में मदद करते हैं और सामाजिक समस्याओं का समाधान करते हैं। (एन.ए.एस.डब्ल्यू., 2008) 'स्वयं से पहले सेवा' व्यवसायिक समाज कार्यकर्त्ताओं का लक्ष्य है क्योंकि वे अपने हृदय में सेवा के मूल्य को आत्मसात करने और इसे व्यवहार में स्पष्ट करने के लिए प्रशिक्षित होते हैं (थॉमस, 2016)।

समाज कार्यकर्त्ता अपने व्यावसायिक नैतिक संहिता के अनुसार जरुरतमंद लोगों को अपनी सेवाएं प्रदान करते हैं और पेशे के सिद्धांतों और मूल्यों के अनुसार पेशेवर कौशल, विधियों और तकनीकों का प्रबंधन करते हैं (रॉय और कुरेन, 2016)।

1.4 मानवता की सेवा के मूल्य के सिद्धांत

समाज कार्यकर्त्ताओं के लिए नैतिकता की संहिता में मानवता की सेवा के नैतिक सिद्धांत निम्न हैं: (थॉमस, 2015)

1. समाज कार्यकर्त्ताओं को स्वयं के बलिदान की भावना के साथ मनुष्य के प्रति भाईचारे के आदर्श पर अपनी सेवा प्रदान करना चाहिए।
2. समाज कार्यकर्त्ताओं को यह स्वीकार करना चाहिए कि सेवा देना स्व–हित से अत्यधिक महत्वपूर्ण है और इसलिए अपने व्यक्तिगत हित से पहले दूसरों की जरुरतों को रखना चाहिए।

3. समाज कार्यकर्त्ताओं को उनके मुवक्किल समूहों, समूहों, परिवारों, और समुदायों में व्यक्तियों का उपचारात्मक, निवारक, विकास, भावनात्मक और सहायक सेवाएं प्रदान करनी चाहिए।

4. देश के प्रति कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए, समाज कार्यकर्त्ताओं को देश और उसके नीति निर्माताओं को लोगों के लिए कल्याणकारी नीतियां तैयार करने के लिए अपनी सेवाओं को विचार करना चाहिए।

5. समाज कार्यकर्त्ताओं को व्यवसाय के सैद्धांतिक आधार पर मानवता के लिए सेवाएं प्रदान करवानी चाहिए, जिसमें सभी बारह मूल्य शामिल हैं, इन बारह मूल्यों तथा तकनीकों की व्यवसाय द्वारा विशेष रूप से पहचान की गई तथा विकसित किया गया है।

6. समाज कार्यकर्त्ताओं को उन सभी प्रणालियों और संस्थानों के माध्यम से लोगों से जुड़ना चाहिए जिससे समिति के माध्यम से उन्हें सेवाएं, संसाधन, समर्थन और मानवता के अवसर प्रदान करते हैं

समाज कार्यकर्त्ता अपने व्यावसायिक नैतिकता की संहिता के अनुसार जरुरतमंद लोगों को अपनी सेवाएं प्रदान करते हैं और व्यवसाय के सिद्धांतों और मूल्यों के अनुसार व्यावसायिक, कौशल, विधियों और तकनीकों का प्रबंधन करते हैं।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणी : क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।
ख) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) समाज कार्य के मूल्य के रूप में 'सेवा' को स्पष्ट करें?

.....

.....

.....

2) 'सेवा' मूल्य के क्या सिद्धांत हैं?

.....

.....

.....

.....

1.5 समाज कार्य के प्रमुख सेवा क्षेत्र

समाज कार्य व्यवसायिक व्यक्तियों, समूहों, परिवारों और समुदायों का उपचारात्मक, निवारक, विकास और सहायक सेवाएं प्रदान करते हैं। समाज कार्य व्यवसाय के मूल्यों को ध्यान में रखते हुए इन सेवाओं को प्रदान किया जा रहा है। समाज कार्यकर्त्ता ग्राहकों की विविध आबादी की, जो हर उम्र से संबंधित होते हैं और उनकी समस्याओं की विस्तृत श्रृंखला है, एक अभ्यास आधारित व्यवसाय होने के कारण समाज कार्य हमेशा अपने सशक्त सैद्धांतकीय आधार पर सेवाएं प्रदान करता है जिसमें वह मूल्य, विधियां, सिद्धांत तथा तकनीकें सम्मिलित हैं जिनकी व्यवसाय द्वारा विशेष रूप से पहचान की गई है तथा जिन्हें विकसित किया गया है।

समाज समाज कार्यकर्त्ता व्यक्तियों में भावात्मक, व्यवहारिक या मानसिक स्वास्थ्य विकारों के सैद्धांतिक रूप से निदान करने के लिए कठिन परिस्थितियों, भावनात्मक तनाव या उनके जीवन में महत्वपूर्ण बदलाव के साथ सामना करने वालों को समर्थन प्रदान करने से लेकर कर्तव्य की एक व्यापक क्षमता का प्रदर्शन करते हैं। वे न केवल व्यक्ति की परिस्थिति का सामना करने में सहायता करते हैं, अपितु व्यवसायिक समाज कार्यकर्त्ता उनके लिए अधिवक्ता है और प्रभावित व्यक्तियों के लिए बहुमूल्य संसाधन और सहायता के अन्य साधनों की खोज करते हैं। व्यावसायिक समाज कार्यकर्त्ताओं द्वारा प्रदान की जाने वाली कुछ प्रमुख सेवाएं हैं:

बालक और परिवार के लिए सेवाएं

बालक और परिवार कल्याण को समाज कार्य के व्यवसाय के भीतर अभ्यास का एक विशेष क्षेत्र माना जाता है, और समाज कार्य व्यवसाय के सिद्धांतों और मूल्यों को आमतौर पर उन नीतियों के साथ उपयुक्त होता है जो आधुनिक बच्चे के कल्याण संगठनों को निर्देशित करता है। समाज कार्यकर्त्ता बच्चों के साथ ही उनके माता–पिता और अभिभावकों को सहायता प्रदान करते हैं। समाज कार्यकर्त्ता बच्चों और परिवारों के लिए संसाधनों के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं, और स्थानीय और राज्य एजेंसियों और सामुदायिक संगठनों के साथ संपर्क करने में सहायता करते हैं। बच्चे और परिवार पर कार्यरत समाज कार्यकर्त्ता माता–पिता के साथ उनके मामलों पर कार्रवाई में भी सहायता करते हैं और सकारात्मक परिजन कौशल के बारे में सलाह देते हैं।

समाज कार्यकर्त्ता उन बच्चों को सहायता और चिकित्सा भी प्रदान करते हैं जिन्होंने आघात, नुकसान, या पारिवारिक झगड़ों का अनुभव किया है। बच्चे और परिवार कल्याण एजेंसियों में समाज कार्यकर्त्ता बच्चों और परिवारों के लिए विभिन्न सेवाओं की योजना और वितरण को भी शामिल किया गया है, जैसे परिवार का समर्थन, आवासीय देखभाल, वकालत और दत्तक ग्रहण और पालन देखभाल कार्यक्रम, साथ ही साथ बाल संरक्षण। समाज कार्यकर्त्ता यह सुनिश्चित करते हैं कि बच्चों को सुरक्षित घर में निवास मिल रहा है और एक स्वस्थ पारिवारिक माहौल में उनकी मूलभूत आवश्यकताएं पूरा हो रही हैं। सेवा का मूल्य सुनिश्चित करता है कि ये सेवाएं एक प्रभावी और व्यवसाय के माध्यम से वितरित की जाती है।

विद्यालयी समाज कार्य

विद्यालयी समाज कार्य की स्कूल से जुड़े मुद्दों और निजी समस्याओं से जुड़े छात्रों की सहायता करने में विशेषज्ञता है जो स्कूल और घर पर उनके जीवन को प्रभावित करते हैं। समाज कार्य व्यवसाय, सामुदायिक संसाधनों और छात्रों जिन्हें विशेष सेवाओं की आवश्यकता होती है उनके बीच समाज कार्य मध्यस्थता करवाने में सहायता करते हैं। छात्र सहायता सेवाओं को विद्यालयी समाज कार्य मुख्य एवं जटिल हिस्सा माना जाता है। विद्यालय के समाज कार्यकर्त्ताओं का लक्ष्य छात्रों के समग्र कार्यों और शैक्षणिक प्रदर्शनों का, विकास करना है। विद्यालय के समाज कार्यकर्त्ता उनकी शैक्षिक क्षमता जानने के लिए छात्रों की सहायता, सामाजिक समूह के एक भाग के रूप में काम करते हैं।

वृद्धावस्था और प्रौढ़ावस्था के साथ समाज कार्य

वृद्धावस्था के समाज कार्यकर्त्ता वृद्ध लोगों के लिए सेवाएं प्रदान करते हैं और विभिन्न पहलुओं में उनका समर्थन करते हैं। समाज कार्यकर्त्ता जो अधिक आयु वर्ग के लोगों की सहायता करते हैं, उन्हें समाज में स्वस्थ और खुशी से जीने में मदद करते हैं। सेवा का मूल्य समाज कार्यकर्त्ताओं को प्रौढ़ लोगों की अनुभव आधारित जरुरत समझने और सेवाएं प्रदान करते हुए, पर्याप्त सहानुभूति देने में सक्षम बनाता हैं। चाहे घर हो या वृद्धाश्रम,

बुजुर्गों को समाज कार्यकर्त्ताओं की सेवाओं की आवश्यकता होती है। शहरी और ग्रामीण परिवार के बुजुर्गों के सामने आने वाली समस्याओं की प्रकृति कुछ हद तक भिन्न होती है। समाज कार्यकर्त्ता ही है जिन्होंने सेवा के मूल्य को आत्मसात किया है। जो कि विभिन्न कार्यक्रमों और सेवाओं के माध्यम से बुजुर्गों को अत्यन्त महत्वपूर्ण सेवा प्रदान करते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य सेवाएँ

मानसिक स्वास्थ्य समाज कार्यकर्त्ता वह है जो मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं और नशे की लत के शिकार लोगों के साथ कार्य करते हैं। समाज कार्यकर्त्ता, मानव तंत्र के प्रति अपने ज्ञान के साथ, मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं वाले व्यक्तियों के साथ होने वाले विकारों का समाधान करने में विशेष रूप से प्रभावी हो सकते हैं। मानसिक स्वास्थ्य में काम करने वाले समाज कार्यकर्त्ता विभिन्न प्रकार की सेवाओं की योजनाओं और वितरण में भागीदारी करते हैं जैसे व्यवसायियों के बीच सांझेदारी का निर्माण, देखभाल करने वाले और परिवार; समुदाय के साथ सहयोग करना, आमतौर पर मुवक्किल के लिए सहायक वातावरण बनाने का लक्ष्य निर्धारित करना; पर्याप्त सेवा, उपचार मॉडल और संसाधनों का पक्षधर; चुनौतीपूर्ण और गरीबी, रोजगार, आवास, और सामाजिक न्याय के मुद्दों को संबोधित करने के लिए सामाजिक नीति बदलती है; और निवारक कार्यक्रमों के विकास का समर्थन इसके अंतर्गत शामिल है। मानसिक स्वास्थ्य व्यवस्था आमतौर पर स्वास्थ्य देखभाल के तीन व्यापक क्षेत्रों में सेवाएं प्रदान करता है; रोकथाम, उपचार और पुर्नवास। सेवा का मूल्य व्यवसाय के समाज कार्यकर्त्ताओं को एक क्षेत्र विशेष में अभ्यास करने का आग्रह करता है या सेवा प्राप्तकर्ताओं को अधिकतम लाभ सुनिश्चित करने के लिए सर्वोतम ग्राहक उपभोक्ता के रूप में, परिवार, और सामुदायिक आवश्यकताओं के विपरीत तीनों की सीमाओं को पार करता है।

चिकित्सा और सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएँ

चिकित्सा समाज कार्यकर्त्ता उन लोगों की मदद करते हैं जिनके पास गंभीर या पुरानी स्वास्थ्य समस्यांए हैं। वे व्यक्तियों और परिवार को बीमारी से निपटने के तरीकों के बारे में सलाह देते हैं। वे नर्सिंग के द्वारा पोषण कक्षाएं और चिकित्सा जैसे बीमार व्यक्तियों और उनके परिवार की सहायता के लिए सेवाएं उपलब्ध करवाते हैं। स्वास्थ्य समस्याएं किसी व्यक्ति को शरीर से कहीं अधिक मन से प्रभावित करती है। समाज कार्यकर्त्ता इस तरह की जरुरतों को पूरा करने में लोगों की मदद करने में सक्षम होते हैं और इसलिए हम ऐसे कई स्थानों पर समाज कार्यकर्त्ता पाते हैं जहां स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराई जाती हैं। वे चिकित्सा और स्वास्थ्य देखभाल के समाज कार्यकर्त्ताओं के रूप में जाने जाते हैं।

सामुदायिक समाज कार्यकर्त्ता

सामुदायिक विकास क्षेत्र में समाज कार्यकर्त्ता अभ्यास के कई क्षेत्रों में और विभिन्न प्रकार की व्यवस्था प्राप्त हो सकती है। समाज कार्यकर्त्ता जो सामाजिक विकास या सामाजिक समस्याओं से निपटने के लिए प्रणालीगत मुद्दों को हल करने के लिए दृष्टिकोण प्रयासों का आयोजन करते हैं। कई मामलों में वे समाज कार्य व्यवसायों में व्यक्त की गई व्यक्तिगत समस्या–सुलझाने की प्रथाओं से संबंधित हो सकता है। सामुदायिक समाज कार्य में अधिकारिक गतिशीलता और सामाजिक संबधों को समझने से संबंधित है जो विभिन्न संरचनाओं और समुदायों के बीच संबंधो को नियंत्रित करते हैं और संरचनात्मक

परिवर्तन के माध्यम से सामाजिक न्याय प्राप्त करने के लिए कार्यरत होते हैं।

सामुदायिक समाज कार्यकर्त्ता समुदायों को सर्वोत्तम तरीके से कार्य करने में सहायता करते हैं। कुछ व्यक्तियों के साथ सीधे–सीधे कार्य करते हैं, साथ ही जरुरतों के आंकलन, समूह कार्य, समाज कार्य और समुदाय के बाहर के संसाधनों के लिए संदर्भ बनाने की आवश्यकता होती है। इसलिए समुदाय संगठन को एक अंतनिर्हित समाज कार्य अभ्यास पद्धति के रूप में माना जाता है। इसलिए सामुदायिक संगठन एक एकीकृत समाज कार्य अभ्यास पद्धति के रूप में मान्य है, जहां बहु–स्तरीय व्यवसाय अभ्यास द्वारा वे एकीकृत करना सीखते हैं।

प्रवासी जनसंख्या और शरणार्थी

प्रवासियों को ज्यादातर एक नए और संकट भरी स्थिति में जीवन को समायोजित करने में सहायता की आवश्यकता होती है। समाज कार्यकर्त्ता उन्हें आवास, रोजगार और अन्य संसाधनों को प्राप्त करने में सहायता करते हैं। विभिन्न शहरी केंद्रो में बेघर, संपूर्ण देश के मुवक्किल और शरणार्थी शिवरों में सेवा भाव से और व्यावसायिक रूप से गुण–संपन्न योग्य समाज कार्यकर्त्ताओं के हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है। भारत में अधिकांश कर्मचारियों की संख्या असंगठित क्षेत्र में हैं, लगभग 40 प्रतिशत प्रवासी मजदूर जनसंख्या से संबंधित है। भारत में तीव्रता से औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के परिदृश्य में प्रवासियों की स्थिति बदल रही है। समाज कार्यकर्त्ता सेवा और सामाजिक न्याय के मूल्य को ध्यान में रखते हुए सामाजिक श्रमिकों को प्रवासी और शरणार्थियों को सुविधा प्रदान करते हैं और सेवाएं प्रदान करते हैं।

औद्योगिक व्यवस्था

एक व्यवसायिक समाज कार्यकर्त्ता की सेवाएं जो कर्मचारियों को अपनी समस्याओं से संघर्ष करने में सहायता करते हैं और सामान्य व्यक्ति के लाभकारी के रूप में कार्य की प्रवृत्ति बनाए रखने के लिए सक्षम बनाते हैं विभिन्न कार्यकर्त्ताओं के कार्य क्षेत्रों जैसे कॉर्पोरेट क्षेत्र और उसके कार्यालयों में कार्यकर्त्ताओं विभिन्न प्रकार की मानवीय समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कार्य से संबंधित तनाव से अलग, अपने परिवार की समस्याओं, बच्चों की देखभाल, शिक्षा से संबंधित, माता–पिता, विवाह और स्वास्थ्य से संबंधित, विषयों पर अपने परिवार से दूर औद्योगिक केन्द्रों में रहने वाले कर्मचारियों को इन समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इनके अतिरिक्त किसी भी प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, जैसे समय पर वेतन नहीं मिलना है, और नशा और नशीली दवाओं के दुरुपयोग और अनुपस्थिति सहित व्यक्तिगत समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। औद्योगिक व्यवस्था में व्यवसायिक समाज कार्यकर्त्ता, सेवाएं प्रदान करते हैं; कर्मचारी अपने आंतरिक संसाधानों को विकसित करने में सहायता करता है; और यदि आवश्यक है तो कार्य परिस्थितियों में परिवर्तन लाने के लिए तो उसमें सहायता करते हैं; सामुदायिक सेवाओं के लिए प्रत्येक संस्थान के रूप में कार्य करने के लिए उनकी व्यक्तिगत और पारिवारिक समस्याओं में सहायता करना; उपयुक्त कामकाजी परिस्थितियों और नीतियों को विकसित करने में प्रबंधन की सहायता करना और इसी तरह श्रमिक और कल्याण सेवा के बीच संपर्क के रूप में कार्य करते हैं। ऐसे में सभी व्यावसायियों के लिए, मानवता की सेवा का मूल्य अत्याधिक महत्व है जो उन्हें उद्योगों में मानव और कल्याण के पहलुओं को लाने में सक्षम बनाता है।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणी : क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) समाज कार्य व्यवसाय के प्रमुख सेवा क्षेत्रों को सूचीबद्ध करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) बालक और परिवार कल्याण सेवाओं में समाज कार्यकर्त्ताओं की प्रमुख भूमिकाएं क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

1.6 सारांश

समाज कार्यकर्त्ता व्यक्तियों, परिवारों और समूहों और समुदायों के सदस्यों की, समाज में कार्य करने के लिए उनकी क्षमताओं को पुर्नस्थापित करने में सहायता करता है। व्यावसायिक समाज कार्यकर्त्ता सामुदायिक विकास कार्यक्रमों, ग्रामीण विकास, मुद्दों और बच्चों, महिलाओं, शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वच्छता, स्व सहायता समूह, आदिवासी विकास, बेघर लोगों के लिए पुर्नवास, प्राकृतिक आपदा से प्रभावित लोगों के लिए पुर्नवास और मानव निर्मित आपदाओं, वृद्धों की देखभाल, बाल श्रम के बचाव और पुर्नवास, अनाथ और विधवा और इसी तरह की मुददों की देखभाल करते हैं। व्यवसायियों के लिए इन क्षेत्रों में सेवा कार्य करने के लिए, मानवता सेवा का मूल्य बहुत आवश्यक है। केवल समर्पण, प्रतिबद्धता और देश भक्ति के साथ ही समाज कार्यकर्त्ता विशेष रूप से विकासशील देशों में मानवता की सेवा के लिए स्वयं को शामिल कर सकते हैं।

समाज कार्यकर्त्ता प्रणाली और संस्थाओं के साथ लोगों से जुड़ते हैं जो व्यक्तियों और परिवारों के लिए सेवाएं, संसाधन, समर्थन और अवसर प्रदान करते हैं। इन सभी समाज कार्यकर्त्ताओं द्वारा प्रदान किए गए समर्थन सेवा के मूल्य पर आधारित हैं। जब समाज कार्य, सेवा मूल्य के साथ किया जाता है, कार्यकर्त्ता के मस्तिष्क और हृदय से अपने लोगों और प्रणालियों के सर्वोत्तम हित में कार्य करते हैं। तकनीकी शब्दों में इसे समाज कार्यकर्त्ता द्वारा 'व्यवसायिक सेवा' कहा जाता है, जो लोगों को समाज कार्य व्यवसाय के सभी मूल्यों को ध्यान में रखते हुए सेवाएं प्रदान करता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि मानवता के लिए मूल्य के साथ समाज कार्य करके अभ्यास किया जा सकता है (रॉय और कुरेन, 2016)।

1.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

कोड ऑफ एथिक्स, ऑस्ट्रेलियन एसोसिएशन ऑफ सोशल वर्कर्स,(2010), 12/10/2014 से www.aasw.asn.av/document/item/120 के द्वारा संरक्षित किया गया है।

एथिक्स, एकाउन्टेबिलिटी एंड द सोशल प्रोफेशन, बैकस, एस. (2004), लंदन : पालग्रावे

ए कोड ऑफ एथिक्स फॉर सोशल वर्क, बी.ए.एस. डब्ल्यू (ब्रिटिश सोशल वर्कस संघ) (1975)

ए कोड ऑफ एथिक्स फॉर सोशल वर्क : द सेकेंड स्टेप, डी.एस. वारसन, लंदन, आर.के. पी.में प्रदर्शित है।

'सोशल वर्क वेल्यूज': द मोरल कोर्ट ऑफ द प्रोफेशन : विसमन, सी (2003), ब्रिटिश जरनल ऑफ सोशल वर्क, 34(1) : 9–123

लॉ फार सोशल वर्कर्स, ब्रायने, एच.एवं कॉर, एच (2003), 8th ed.ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

कोड ऑफ एथिक्स, केनेडियन एसोसिएशन ऑफ सोशल वर्कर्स (2005), 10/5/201 से www.casw_acts.ca/sites/default/files/.../casw_doce%2001%&ethics.pdके द्वारा परिलक्षित

कोड ऑफ एथिक्स, नेशनल समाज कार्यकर्त्ता संघ, 15/06/2016 से http:www.socialworkers.org/pubs/code/code.asp द्वारा संरक्षित

सर्विस टू ह्यूमैनिटी, रॉय, संजय एवं कुरेन, अनीश (2016), सोशल वर्क द वेल्यू बेस्ड प्रोफेशन, थॉमस ग्रेशियस (ई.एंड एस), जयपुर रावत पब्लिकेशन्स में प्राप्त है

प्रोफेशनल इम्पेरियलिज्म : सोशल वर्क इन द थर्ड वर्ल्ड, मिडग्ले (1981) : लंदन : हिनेममन

सोशल वर्क वेल्यूज एंड एथिक्स, टीमर एफ.जी.(2006), न्यू यॉर्क : कोलंबिया विश्वविद्यालय प्रेस

प्रमोटिंग इक्वेलिटी : चेलेंजिग डिस्क्रकीमिनेशन एंड ऑपरेशन इन द ह्यूमन सर्विसेस, थॉम्पसन, एन. (2003), बेसिंगस्टोके : मैकमिलन पब्लिकेशन

थ्योरी एंड प्रेक्टिस इन ह्यूमन सर्विसेस, थॉम्पसन (2000), फिलाडेल्पियाः ओपन यूनिवर्सिटी प्रेस

कोड ऑफ एथिक्स फॉर सोशल वर्कर्स : थॉमस ग्रेशियस (2015), न्यू दिल्ली : इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी

कोर वैल्यूज इन प्रोफेशनल सोशल वर्क, थॉमस गेशियस(2016), सोशल वर्क वेल्यूबेस्ड प्रोफेशन, थॉमस ग्रेशियस (इंएंड एस) में, जयपुर रावत पब्लिकेशन

बिटवीन वेल्यूज एंड सांइस : एडुकेशन फॉर द प्रोफेशनल ड्यूटिंग ए मोरल क्रीसिस ऑर इस प्रूफ टुथ? विजिलेंट, जे. (1974), जरनल ऑफ एडुकेशन फॉर सोशल वर्क, 10(3): 107–15

1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) मानवता की सेवा, समाज कार्य का मूल आधार है जिसका उद्देश्य मानव-कल्याण है। दूसरों की सेवा करना समाज कार्य के आधारभूत मूल्यों में से एक है, जिससे अन्य मूल्य पोषित होते हैं। समाज कार्य मुवक्किलों की सेवा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु मानवता की सेवा के मूल्य की अपेक्षा करता है तथा सेवा प्रदाता प्रणाली में पेशेवर एजेन्सियों के मध्य पहुँच, जवाबदेही तथा समन्वय में सुधार करने का प्रयास करता है।

2) मानवता की सेवा के मूल्य के सिद्धांत है :

- समाज कार्यकर्त्ताओं को आत्म-बलिदान के तत्व सहित, मनुष्य के भाई-चारे के आदर्श पर अपनी सेवाएँ प्रदान करनी चाहिए।
- समाज कार्यकर्त्ताओं को यह जानना चाहिए कि दूसरों की सेवा करना, आत्म-हित से बढ़कर होता है अतः उन्हें अपने व्यक्तिगत हित पर दूसरों की सेवा करने को प्रमुखता देनी चाहिए।
- समाज कार्यकर्त्ताओं को अपने मुवक्किलों–व्यक्तियों को व्यैक्तिक रूप से, समूह में परिवारों में तथा समुदायों में सुधारात्मक, निवारणकारी, विकासात्मक, भावात्मक तथा सहयोगी सेवाएँ प्रदान करनी चाहिए।
- राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व को ध्यान में रखकर समाज कार्यकर्त्ता को व्यक्ति उन्मुख कल्याण नीतियों का निरूपण करने में, राष्ट्र तथा इसके नीति–निर्माताओं की हर संभव मदद करने हेतु अपनी सेवाओं का विस्तार करना चाहिए।
- समाज कार्यकर्त्ताओं को व्यवसाय के सैद्धांतिक आधार पर आधारित मानवता की सेवा प्रदान करनी चाहिए जिसमें व्यवसाय द्वारा विशेष रूप से चिन्हित तथा प्रोन्नत सभी बारह मूल्य तथा सिद्धांत, बारह प्रविधियाँ तथा तकनीकें सम्मिलित है।
- समाज कार्यकर्त्ता को उन प्रणालियों तथा संस्थाओं से सम्बद्ध करना चाहिए जो मानवता हेतु सेवाएँ, संसाधन, सहयोग तथा अवसर प्रदान करती हैं।

बोध प्रश्न II

1) समाज कार्य व्यवसाय के प्रमुख सेवा क्षेत्र हैं :

- बालक तथा परिवार सेवाएँ
- विद्यालय समाज कार्य
- वृद्धावस्था तथा प्रौढ़ावस्था के साथ समाज कार्य
- मानसिक स्वास्थ्य सेवाएँ

इकाई 2 समाज कार्य के एक मूल्य के रूप में सामाजिक न्याय

इकाई की रूपरेखा

*अनीष कुरियन

2.0 उद्देश्य

2 1 प्रस्तावना

2.2 सामाजिक न्याय की अवधारणा और प्रकृति

2.3 समाज कार्य के मूल्य के रूप में सामाजिक न्याय

2.4 समाज न्याय मूल्य के सिद्धांत

2.5 समाज कार्य में सामाजिक न्याय के मूल्य की अभिव्यक्ति

2.6 सारांश

2.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निम्न को समझने में सक्षम होंगे:

- सामाजिक न्याय की अवधारणा को समझने;
- सामाजिक न्याय के मूल्य को समझने;
- सामाजिक न्याय के मूल्य के सिद्धांत की व्याख्या करने;
- मानवता के लिए सेवा के मूल्य के महत्व को प्राप्त करने में।

2.1 प्रस्तावना

सामाजिक न्याय की अवधारणा समाज कार्य के अभ्यास पर केन्द्रित है। समाज कार्य ने हमेशा सामाजिक न्याय के मुद्दों पर ध्यान दिया है। यह व्यवसायिक समाज कार्य की मुख्य निधि है। शुरुआत से, समाज कार्यकर्त्ता 'मामला और कारण' के बीच जटिल संबंधों को सुलझाने सामाजिक परिवर्तन जो संरचनात्मक खामियों को दूर करने में और व्यापक समाज में अन्याय जो व्यक्ति की समस्याओं को बढ़ावा देते हैं उन्हीं से ही जंग लड़ते रहते हैं। समाज कार्यकर्त्ता सूक्ष्म या व्यक्तिगत और छोटे या बड़े पैमाने पर, दोनों स्तरों पर सामाजिक न्याय के लिए प्रतिबद्ध होते हैं। समाज कार्यकर्त्ताओं के राष्ट्रीय संघ के अनुसार सामाजिक न्याय समाज कार्य का एक अंतर्निहित मार्गदर्शक सिद्धांत है जो अनिवार्य रूप से समान अर्थव्यवस्था राजनीतिक और सामाजिक अधिकारों का विकास करता है। समाज कार्यकर्त्ता, उन लोगों की मदद करने के सामान्य उद्देश्य से, जिन्हें सर्वाधिक मदद की आवश्यकता है, अनेक महत्वपूर्ण तरीकों से असमानता एवं शोषण/दमन से लड़ने की कोशिश करता है। (एन.ए.एस.डब्ल्यू, 2014)।

सरल शब्दों में सामाजिक न्याय, अन्याय और विविधता को चुनौती देने के साथ ही एक न्यायपूर्ण समाज को विकसित करना है। यह तब होता है जब सभी व्यक्ति एक समान मानव भाव को दर्शाते हैं, और इसलिए सबके पास न्यायसंगत समाधान का अधिकार है,

*डॉ. अनीष कुरियन, अम्बेडकर विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

उनके मानव अधिकारों के लिए समर्थन और सामुदायिक संसाधनों का उचित आवंटन और यह दृष्टिकोण समाज कार्य व्यवसाय द्वारा सह–विभाजित/प्रसारित किया जाता है। समाज कार्यकर्त्ता का उद्देश्य है हर किसी के लिए लक्ष्य तक पहुंचकर नए आयामों को खोजना और अवसर प्रदान करना, विशेष रूप से जो समाज में अन्यायपूर्ण सामाजिक परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं। आई.एफ.एस.डब्ल्यू (2004) द्वारा प्रस्तावित समाज कार्य की वैश्विक परिभाषा के अनुसार, 'समाज कार्य एक अभ्यास आधारित व्यवसाय और एक शैक्षणिक अनुशासन है जो सामाजिक परिवर्तन और विकास, सामाजिक सामंजस्य और व्यक्ति के सशक्तिकरण और मुक्ति को बढ़ावा देते हैं। सामाजिक न्याय के सिद्धांत, मानवाधिकार सामूहिक जिम्मेदारी और विविधता का सम्मान, समाज कार्य पर वह केन्द्रित है। समाज कार्य; सामाजिक विज्ञान, मानविकी और स्वदेशी ज्ञान के सिद्धांतों पर दबाव डालना, समाज कार्य व्यक्तियों और संरचनाओं को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और पूर्ण रूप से विकसित करने में संलग्न रहते हैं। वैश्विक परिभाषा से स्पष्ट हो गया है कि सामाजिक न्याय मूल्य, समाज कार्य अभ्यास का हमेशा मुख्य लक्ष्य रहा है।

2.2 सामाजिक न्याय की अवधारणा और प्रकृति

समाज कार्यकर्त्ता, उन लोगों की मदद करने के सामान्य उद्देश्य से, जिन्हें सर्वाधिक मदद की आवश्यकता है, अनेक महत्वपूर्ण तरीकों से असमानता एवं शोषण/दमन से लड़ने की कोशिश करता है। सामाजिक न्याय की स्थिति में, व्यक्ति के खिलाफ भेदभाव नहीं किया जाता है, लिंग, यौनाकर्षण विषयक, धर्म, राजनीतिक संबद्धता, आयु, जाति, धारणा, असमर्थता, आरोपीय, सामाजिक वर्ग, सामाजिक आर्थिक परिस्थिति या पृष्ठ को विशेषताओं के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाता न ही उनके कल्याण को बाधित किया जाता है। सामाजिक न्याय की अवधारणा काफी हद तक महान लोगों की शिक्षाओं तथा यहूदी, इसाई, इस्लाम, बौद्ध, सिक्ख, जैन तथा हिन्दू धर्म सहित संसार के महान धर्मों से उपजी है। ईसाई धर्म, इस्लाम, बौद्ध धर्म, सिक्खवाद, जैन धर्म और हिंदूवाद सहित एक महान धर्म के लिए न्यायिक अवधारणा है

उदाहरण के लिए, सामाजिक न्याय आरंभिक उपनिषदों और वेदों के समय की प्रथा हिंदूवाद पर केन्द्रित था, उसी समय बाइबिल में भी जयंती वर्ष के संदर्भ में दृष्टव्य है जब दास मुक्त किए गए थे, तब उनके ऋण और दायित्वों को नष्ट कर दिया गया था और मूल मालिक को उनकी जमीनें लौटा दी गई थीं। यह पुर्नवितरण मुख्य रूप से व्यक्तियों के बीच था और सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हुआ था। इस्लाम में पांच स्तम्भ होते हैं, ज़कात या दान देने वाले भी सामाजिक अवधारणा के संकल्प में निहित है। गरीबों के लिए दान और सहायता (सामाजिक न्याय से संबंधित अवधारणाएं) दृष्टव्य है और यही ऐतिहासिक रूप से सभी धार्मिक विश्वासों के महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है (सिंह एवं कुरान, 2016)।

कल्याण ग्राहय–रहित या पूर्वभावना नहीं है। अरिस्टोल (384–322 बी.सी.) ने कहा कि न्याय एक सिद्धांत जो लाभों के वितरण को विनियमित करके सामाजिक व्यवस्था सुनिश्चित करता है। भारत में मौजूद 'वर्ण व्यवस्था में इसी प्रकार की न्यायिक अवधारणाएं देखी जा सकती हैं। सामाजिक न्याय के इन विचारों के अनुसार समाज में असमान वर्ग से व्यवहार असामान्य ही देखे जा सकते हैं। इन विचारों ने समाज की व्यवस्था को चुनौती तो नहीं दी परंतु उसके अंतर्गत ढ़ाल दिया। सामाजिक रूप से सिर्फ समाज में, कभी भी और जहां कहीं भी उनका अस्तित्व इतिहास में प्रदर्शित हुआ, वही समतावादी, संरचनात्मक रूप से गैर–अहिंसक और यथार्थवादी रूप में सामने आए (केंतर, 1972) इससे तात्पर्य है कि सभी लोगों के सम्मुख समान अधिकार, समान जिम्मेदारियां

और जीवन के सभी क्षेत्रों, संसाधनों के नियंत्रण सहित; व्यवसाय और उत्पादन का संगठन; अभिशासन; और पुर्नरुत्पादन में समान अवसर प्राप्त हैं। समानता से यह तात्पर्य नहीं है कि सब कुछ बांटा गया है और समान हिस्से किए गए हैं, लेकिन यह वितरण अलग–अलग मतभेदों के लिए सोच समझ कर किया गया है, और सभी की विभिन्न आवश्यकताओं को समान रूप से स्वीकार किया गया है (डेविड जी.गिल, 2004)।

रॉवलस के अनुसार (2003), 'सामाजिक न्याय, स्वतंत्रता की समानता, अधिकार और अवसर के प्रति सुरक्षा के आश्वासन के लिए हैं, साथ ही समाज में कम से कम लाभ पर सदस्यों की देखभाल करने से है। इस प्रकार, जो कुछ भी हो रहा है चाहे वह नागरिक स्वतंत्रता, मानवाधिकार स्वस्थ्य और संतुष्ट जीवन के लिए अवसरों तक पहुंचने की गुणवत्ता को बढ़ावा दे या बाधक बने, साथ ही साथ चाहे वह समाज के कम से कम लाभपद सदस्यों को लाभ का एक उचित अंश आबंटित करता है या नहीं। मिलर के लिए, सामाजिक न्याय एक सामाजिक गुण है जो कि आपके द्वारा देय या बकाया राशि के साथ–साथ दूसरों के लिए भी उतना ही जरुरी है (मिलर, 2003)।

संयुक्त राष्ट्र (2006) मानव अधिकार के माध्यम से सामाजिक न्याय का दृष्टिकोण तय करता है और अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर प्रथाओं को केन्द्रित करते हुए जनादेश प्रदान करता है। सामाजिक न्याय मानव कल्याण से संबंधित है। मानव जाति न्याय के लिए आवेदन मजबूती पर आधारित है, संयुक्त राष्ट्र में सार्वभौमिक घोषणा मानव अधिकारों (1948) की चर्चा घोषणा पत्र में उल्लिखित है। जिसने घोषित किया कि मानवाधिकार सभी मानव जाति की गरिमा और मूल्य के लिए सम्मान पर आधारित है और भय तथा स्वतंत्रता में से स्वतंत्रता सुनिश्चित करनी चाहिए। सामाजिक न्याय सभी मानव जाति के लिए आर्थिक और सामाजिक उन्नति के विस्तार के लिए है।

समाज कार्य का इतिहास दर्शाता है कि सामाजिक न्याय की खोज हमेशा ही से एक चुनौती रही है और समाज कार्य के लिए एक मिथक और चैरिटी संगठनों और निपटान गृह में तत्कालीन पूर्ववर्ती रह चुके हैं। सामूहिक और व्यक्तिगत रूप से चैरिटी संगठन और निपटान के समय में समाज कार्यकर्त्ता ने आमतौर पर कई अलग–अलग तथ्य एकत्रित किए हैं (बैंक, 2004)।

समाज कार्य में हमें सामाजिक न्याय के अत्याधिक उपयोग का विशेष रूप से ध्यान देना होगा और लापरवाही के साथ उपयोग करने से हम अपने विचारों को खोखला कर रहे हैं, जिससे यह अनिवार्य रूप में अर्थहीन हो जाता है। (हेरिसन एट.एल. 2007) समाज अनिवार्य रूप से यह दर्शाता है कि कैसे व्यक्ति और समूह में लोगों की बातचीत हो सकती है, और महत्वपूर्ण मामलों में समान समाधान या 'न्याय' का मूलतः अर्थ है निष्पक्षता। इसलिए, सामाजिक न्याय व्यक्तियों और सामाजिक समूह के बीच वास्तव में निष्पक्ष और समान सम्बन्धों के रूप में विचारणीय हो सकता है (बेहर, 2005)।

सामाजिक न्याय के मूल्य पर समाज कार्य व्यवसायिक निष्क्रियता से ग्राहक को सहायता प्रदान करने की प्रक्रिया है। जो ग्राहक, समाज के आर्थिक और सामाजिक ढ़ांचे के माध्यम से, जहां वे रहते हैं और आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित होते हैं, जिससे वे दृढ़ता से पेशेवर समाज कार्यकर्त्ता ये सहायता चाहते हैं। सरल शब्दों में सामाजिक न्याय को '..... चुनौतीपूर्ण अन्याय और विविधता का मूल्यांकन करके मात्र समाज का विकास' के रूप में परिभाषित किया गया है। सामाजिक न्याय तब होता है जब 'सभी मानव जाति एक समान मानवता को सांझा करे और इसलिए उन्हें, न्यायसंगत समाधान, उनके मानवाधिकारों के समर्थन, और सामुदायिक संसाधनों का उचित विभाजन का अधिकार हो।

2.3 समाज कार्य के मूल्य के रूप में सामाजिक न्याय

समाज कार्य एक अभ्यास आधारित व्यवसाय है जिसका उद्देश्य मनुष्य को अपनी समस्याओं का समाधान करने और स्वस्थ और उत्पादित जीवन का नेतृत्व करने के लिए उन संसाधनों से सामांजस्य स्थापित करने में सहायता करना है। इस व्यावहारिकता के तले एक दृढ़ महत्व रखने वाली प्रणाली है जिसे दो शब्दों में सारांक्षित किया जा सकता हैः सामाजिक न्याय (शायद सबसे महत्वपूर्ण अंतर है) समाज कार्यकर्त्ता व्यक्तिगत दुखों और सामाजिक संदर्भ से उत्पन्न होने वाले अंतरंग और जटिल संबंध को समझने के लिए प्रशिक्षित हैं। समाज कार्यकर्त्ता परिस्थितियों का सह संबंध और मानवीय दुखों के निर्धारण को समझने के लिए वे पहले से ही प्रशिक्षित हैं और जो लंबे समय के समाधानों की स्थिति है जिनसे मानव उत्पीड़न सहन करता है, उन्हें राजनीतिक और नीति के क्षेत्र में संबोधित किया जाना चाहिए। सामाजिक न्याय का मानना है कि सभी को समान आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक अधिकार और अवसर प्राप्त करने का अधिकार होना चाहिए। समाज कार्यकर्त्ता का उद्देश्य प्रत्येक के लिए अवसर के मार्ग तक पहुंचना और सुअवसर प्राप्ति के लक्ष्य को प्राप्त करना होता है, विशेषतः जिन लोगों को अधिक आवश्यकता हो (एन.ए.एस.डब्लयू,1999)। सामाजिक न्याय समाज कार्य के रूप में महत्व रखता है जो कि किसी समाज में समान रूप से या न्यायसंगत रूप से विभिन्न लाभों के आधार पर आधारित मानव के बीच संबंधों पर केंद्रित है। यह इस बात से संबंधित है कि किसी समाज में शक्ति, धन और संसाधनों को कैसे वितरित किया जाता है और इसका उपयोग न्याय संगत तरीके से किया जाता है। केवल समाज में, शक्ति और धन सभी समूहों के लाभ के लिए उपयोग किया जाता है; अन्य समूहों को नियंत्रित करने के लिए विशेष समूह का उपयोग नहीं किया जाता (सिंह, एवं कुरान, 2016)।

समाज कार्य व्यवसाय की सामाजिक न्याय के लिए वास्तव में अनूठी प्रतिबद्धता नैतिकता कोड़ के प्रस्तावना में व्यक्त की गई है, जो सावधानी से स्पष्ट शब्दों में कहते हैं कि, 'समाज कार्य व्यवसाय का प्राथमिक मिशन, मानव स्वास्थ्य को बेहतर बनाने और सभी बुनियादी मानव जरुरतों को पूरा करने, गरीबी में रह रहे व्यक्ति, सताए हुए और जीवित रहने वाले लोगों की जरुरतों और सशक्तिकरण पर विशेष ध्यान देने के लिए है। समाज कार्य की ऐतिहासिक और परिभाषित विशेषता यह है हक सामाजिक संदर्भ में व्यक्ति की कल्याण और समाज में महत्वपूर्ण व्यवसाय पर ध्यान केंद्रित किया गया है। समाज कार्य के लिए मौलिक परिस्थितियों की ओर ध्यान केन्द्रित करना है जो उन्नति, योगदान, और जीवन की समस्याओं आदि की ओर ध्यान खींचता है।

समाज कार्य और तकनीकी के विभिन्न प्रक्रियाओं के माध्यम से समाज कार्य मानवजाति को विशेष रूप से उन महानगरों तक पहुंचाया है और अवसर के मार्ग प्रदर्शित करने में सहायता की है, अर्थात सभी दलितों और अल्पसंख्यकों के लिए इस पर कार्य बहुत कम हुआ है। सामाजिक न्याय का महत्व, समाज कार्यकर्त्ताओं की नीतियों के प्रति विरोधी क्षमता में सक्षम हों, योजनाओं और गतिविधियों को बढ़ावा और बनाए रखने में सहायक हो, अपने बीच मौजूद मतभेद होने पर भी व्यक्तियों के मानवाधिकार के प्रति, भागीदारी और संरक्षण को बनाए रखना है।

सामाजिक न्याय तथ्यात्मक रूप से विरोधी–उत्पीड़क और विरोधी विभेदक प्रयासों, एवं राष्ट्रीय मूल के आधार पर भेदभाव से लड़ने के लिए, जातीयता, संस्कृति, उपस्थिति, भाषा, लिंग, यौन, अभिविन्यास, क्षमता, उम्र, निवास स्थान, धर्म, राजनीति समृद्धि और सामाजिक और आर्थिक मतभेद के लिए समाज कार्यकर्त्ताओं का मार्गदर्शन करता है। समाज कार्यकर्त्ता को सामाजिक न्याय के लिए अपनी लड़ाई में व्यक्ति, समूह, परिवार, बड़े

समुदाय को सशक्त बनाने की आवश्यकता है। जिनके पास रहने के लिए स्थान नहीं है, उदाहरण के लिए, समाज कार्यकर्त्ता यह सुनिश्चित करते हैं कि उनके मुवक्किल को भोजन, आश्रय और स्वास्थ्य संरक्षण उपलब्ध हुए हैं, यह सुनिश्चित करना चाहिए। यही सब तथ्य बच्चों के लिए मान्य है। समाज कार्यकर्त्ता किसी भी प्रकार के दुरुपयोंग से उन्हें बचाने के लिए कार्यरत रहता है या सुनिश्चित करने के लिए कि तथा वे शैक्षिक और स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किए जा रहे हैं जो उचित रूप से उनके हैं। जनजातियों के मामले में, समाज कार्यकर्त्ता यह सुनिश्चित करें कि वे सरकार द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों और नीतियों से लाभांन्वित हों और उन्हें अपने अधिकारों के विरुद्ध लड़ने के लिए सशक्त बनाए। समाज कार्यकर्त्ता समाज में समस्याओं के लिए सामाजिक न्याय सिद्धांत भी लागू करते हैं और न्याय के लिए लड़ते भी हैं। समाज कार्य का उद्देश्य, संगठनों और संस्थाओं में सामाजिक न्याय के तथ्यों को शामिल करके और संगठनों और संस्थाओं में सामाजिक न्याय के व्यवहार में और व्यक्तियों, समूहों, परिवारों और बड़े समाज में समाज कार्य में प्रयुक्त व्यवहार को सुनिश्चित करना है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि ये बुनियादी मानव अधिकार समान रूप से वितरित किए गए हैं और पक्षपात और सामाजिक न्याय के बिना वे सुरक्षित हैं (सिंह एवं कुरेन, 2016)।

सभी प्रमुख समाज कार्य संघ/संस्था सामाजिक न्याय को समाज कार्य व्यवसाय के मूल तथ्यों के रूप में मानते हैं। समाज सेवा के अंतर्राष्ट्रीय महासंघ (आई.एफ.एस.डब्ल्यू.) ने कहा है कि समाज कार्यकर्त्ता व्यवसाय मानवजाति के कल्याण और आत्मनिर्भरता के लिए सेवा करने के लिए समर्पित है; मानव व्यवहार और समाज के बारे में वैज्ञानिक ज्ञान के विकास और अनुशासन के उपयोग के लिए; व्यक्तिगत; समूह; राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जरुरतों और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए संसाधनों के विकास के लिए; लोगों के जीवन में गुणवत्ता संबंधित वृद्धि और सुधार के लिए और सामाजिक न्याय की उपलब्धि के लिए सामाजिक न्याय के तथ्यों को पहचानते हैं। (आई.एफ.एस.डब्ल्यू., 2010) रुस हमें (सामाजिक शिक्षकों और समाज कार्यकर्त्ताओं का संघ) संकेत देते हैं कि सामाजिक न्याय के तथ्य को संपूर्ण महत्व देते हैं। वह यह बताते हैं कि सामाजिक न्याय और मानवतावाद समाज और सामाजिक शिक्षा विज्ञान संबंधी महत्व रखते हैं।

इसी तरह राष्ट्रीय सामाजिक संगठनों (एन.एस.डब्ल्यू.), आस्ट्रेलिया एसोसिएशन ऑफ सोशल वर्कस (ए.ए.एस.डब्ल्यू.), कैनेडियन एसोसिएशन ऑफ सोशल वर्कस (सी.ए.एस. डब्ल्यू.) और अन्य पर नैतिकता के रूप में देखा गया हैं ए.ए.एस.डब्ल्यू. के अनुसार, 'समाज कार्य व्यवसाय में यह दर्शाया गया है कि सामाजिक न्याय एक मुख्य दायित्व है जिसे समाज को बनाए रखने के लिए इसका आह्वान किया गया। समाज को संरक्षण प्रदान करने ओर अपने सभी सदस्यों के लिए अधिकतम लाभ प्रदान करने का प्रयास करना चाहिए। समाज कार्य व्यवसाय, न्याय और सामाजिक निष्पक्षता को बढ़ावा देताा है; बाधाओं को कम करने और सभी व्यक्तियों के लिए चुनाव और क्षमता का विस्तार करना चाहिए।

इसमें वंचित व्यक्तियों के लिए जो दलित या जिन्हें अत्याधिक आवश्यकता है, उनके लिए विशेष प्रावधान हैं। (ए.ए.एस.डब्ल्यू. 2010) व्यवसायिक कर्मी की सहमति यह है कि समाज कार्य का लक्ष्य उत्पीड़न के जीवन को बेहतर बनाना है और स्वयं को चुनौतीपूर्ण बनाने के लिए बाधाओं का सामना करना है। समाज कार्य का मिशन लाभ से वंचित रह रहे लोगों में कौशल का रुपांतरण करना जिसका उन्हें अधिकार है और ऐसा करने में, सामाजिक समस्याओं को हल करने के लिए यह उपयोगी है।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणी : क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।
ख) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) सामाजिक न्याय क्या है?

.....

.....

.....

.....

2) समाज कार्य के मूल्य के रूप में सामाजिक न्याय को स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

2.4 सामाजिक न्याय मूल्य के सिद्धांत

समाज कार्यकर्त्ताओं के लिए नैतिकता के संकेत में सामाजिक न्याय के नैतिक सिद्धांत निम्नांकित हैं (थॉमस, 295)

1. प्रतिनिधि के रूप में, एक समाजकर्ता को अवश्य ही चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जैसे समाज में अन्याय, विशेषतः कमजोर वर्ग के सम्बन्ध में, क्षतिग्रस्त, पीड़ित शोषित और गरीब के रूप में अत्याधिक दरिद्र आदि।

2.. समाज कार्यकर्त्ताओं को संसाधनों का उचित वितरण के लिए आगे बढ़ना चाहिए ताकि समाज में सभी के लिए बुनियादी सुविधाएं जैसे भोजन, आश्रय, कपड़े, स्वास्थ्य देखरेख, शिक्षा और कानूनी सहायता उपलब्ध कराई जा सके।

3. देश के संविधान में सुनिश्चित किए गए सभी नागरिकों के लिए राज्य और सार्वजनिक सामाजिक सेवाओं का उपयोग करने के लिए समाज कार्यकर्त्ताओं को बिना किसी भेदभाव के समान अधिकारों ओर समान अवसरों को सुनिश्चित करने के लिए लगातार कार्यरत होना चाहिए।

4. सामाजिक न्याय की सफलता के लिए मुवक्किल को सशक्त बनाने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए, उन्हें हमेशा समझना चाहिए कि सामाजिक न्याय के लिए उनके कार्य और उनके अधिकार देश के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक व्यवस्था के प्रभावशाली और शक्तिशाली के पूर्वाग्रहों से प्रभावित नहीं होगा।

5. समाज कार्यकर्त्ताओं को जनसमूह की सांस्कृतिक विविधता को पहचानना और उनका सम्मान करना चाहिए, वह भाषाई, धार्मिक, वर्ग, जाति लिंग और सामाजिक–आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखकर कार्य करता है।

6. समाज कार्यकर्त्ताओं को नीति निर्माण, राजनीति, नियोक्ता कानूनी और संविधान विशेषज्ञ और आम जनता से सत्ताधारियों का ध्यान आकर्षित कर और अन्यायपूर्ण नीतियों और प्रथाओं की ओर केन्द्रित करता है।

7. एक समावेशी समाज को सुनिश्चित करने के लिए समाज कार्यकर्त्ता का कर्तव्य है कि जहां संसाधन अपर्याप्त हैं वहां कार्य किया जाए, जैसे सामाजिक बहिष्कार और दोषारोपण सभी ओर फैला हुआ है, और जरुरतमंद प्रबंधनीय सीमाओं से परे हैं।

2.5 समाज कार्य में सामाजिक न्याय के मूल्य की अभिव्यक्ति

समाज कार्य व्यवसाय में अकेले व्यक्ति पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, 'परिस्थिति में व्यक्ति' के साथ व्यवहार करने का दृष्टिकोण है। यह ग्राहक के तत्काल प्रवृत्ति–परिवार, कार्य की स्थापना और कुछ ही अंश पर ध्यान रखता है। इस संदर्भ में समाज न्यायात्मक मूल्य का महत्वपूर्ण महत्व है। इससे सामाजिक श्रमिकों के सामाजिक और आर्थिक अन्याय की गतिशीलता और परिणामों को समझने में सहायता मिलेगी और वे सामाजिक न्याय की परिभाषा के भीतर प्रभावी रूप से विकसित और कार्य कर सकते हैं। सामाजिक न्याय का पक्ष लेने वाले समाज कार्यकर्त्ताओं को सभी लोगों की जरुरतों को विशेष रूप से गरीबों, दमनकारी और वंचित लोगों की जरुरतों के लिए गहरी संवेदनशीलता का भाव होना चाहिए। समाज कार्य पाठ्यक्रम दोनों में स्नातक और स्नातकोत्तर स्तरों पर सामाजिक न्याय के महत्वपूर्ण तथ्यों को इसके अंतर्गत रखना होगा ताकि समाज कार्यकर्त्ताओं को प्रोत्साहित किया जा सके और व्यवसाय के अभ्यास के दौरान पर इसे व्यक्त किया जा सके (सिंह, कुरेन, 2016)।

स्माज कार्य व्यवसाय का मार्गदर्शन करने वाला देश सामाजिक अन्याय को चुनौती देता है। कुछ विचारों के अनुसार लगभग पूरी दुनिया में समाज कार्य की आधिकारिक परिभाषाओं और नैतिकता में सार्वभौमिक है, 'सामाजिक न्याय का अनुसारण' करना है (बैंक, 2006, ग्रे और फूंक, 2004)। समाज कार्य परिषद ने यह स्पष्ट कर दिया है कि समाज कार्य व्यवसाय, विशेषतः कमजोर और दलित जाति और समूहों की ओर से समाज के विकास के लिए सामाजिक परिवर्तन महत्वपूर्ण है। (सी.एस.डब्ल्यू.ई., 1994) सी.एस.डब्ल्यू ई आगे बताती है कि, 'समाज कार्य शिक्षा के कार्यक्रमों को पूर्ण रूप से गतिशीलता के संदर्भ में बोधगम्य और समाज में उसके महत्व और सभी तरह के अन्याय, मानव अन्याय और भेदभाव के सहित आर्थिक अन्याय के सभी रूप प्रदर्शित है। उन्हें छात्रों को सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देने के लिए कौशल प्रदान करना चाहिए और व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से सामाजिक और आर्थिक न्याय की उपलब्धि के लिए विभिन्न हस्तक्षेपों को लागू करना चाहिए (सी.एस.डब्ल्यू.ई., 1994)।

पेयने एम. (2012) के अनुसार समाज कार्य का सामाजिक न्याय में तीन मुख्य योगदान है, जो अन्य व्यवसायों द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं से बहुत विशिष्ट हैः

- इसका सामाजिकता के साथ सम्बन्ध हैः लोगों के बीच सामाजिक संबंधो को अलग–अलग और सामूहिक रूप से सुधार के लिए प्रयुक्त किया जाता है। समाज कार्यकर्त्ताओं द्वारा प्रदान की गई संपूर्ण सेवा और 'व्यक्ति' और 'समस्या' की अवधारणा पर केन्द्रित है।

- यदि ऐसे लोगों पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है जो किसी न किसी रूप में हार जाते हैं क्योंकि उन्हें आवास पर वित्तीय सहायता की आवश्यकता होती है परंतु वे मानदंडों पर खरे नहीं उतरते। समाज कार्यकर्त्ता लोगों को असहाय छोडने की कोशिश नहीं करते क्योंकि वे सत्ताधारियों की श्रेणियों से तालमेल नहीं बैठाते। कई

दशकों के शोध से पता चलता है कि संवादों को प्राप्त करने वाले लोग समाज कार्यकर्त्ताओं के प्रत्यक्ष आने वाली समस्याओं को भी समझने की चेष्टा कर रहे हैं और उनके लिए सर्वश्रेष्ठ आयाम प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हैं। समाज कार्यकर्त्ता हमेशा सामाजिक संबंधों में हस्तक्षेप करने के लिए तैयार रहते हैं।

- सामाजिक न्याय की खोज को मजबूत करने की प्रक्रिया सामाजिक न्याय के प्रारंभ में हैं, व्यवसायिक समाज कार्यकर्त्ता के अनुसार उनके जीवन में जो कुछ भी प्रत्यक्ष होता है, उसी प्रकार कार्रवाई की जाती है। समाज कार्य के तरीके अर्थात सामाजिक कल्याण प्रशासन और 'समकालीन' विधियों में जागरुकता अभियान शामिल हैं; जनहित याचिका, नेटवर्किंग, वकालत और गुणात्मक आधारित अभ्यास समाज कार्यकर्त्ताओं के लिए एक नींव और उन लोगों के साथ गठजोड़ के रूप में कार्य करेगी, जिनके साथ अनुचित व्यवहार किया गया है। समाज कार्य की प्रक्रियाएं सामाजिक न्याय और सामाजिक कल्याण की धारणाओं पर आधारित है। समाज कार्य व्यवसाय में सामाजिक न्याय के लिए उन्हें अपना पक्ष मजबूत रखने के लिए समाज कार्य के तरीकों के माध्यम से व्यक्तियों, समूहों, परिवारों और समुदायों को सहायता प्रदान करके लड़ा जा सकता है। सामाजिक न्याय के साथ समाज कार्य करने की प्रक्रियाओं का एकीकरण के लिए समाज कार्यकर्त्ताओं को उनके क्षेत्र में आगे बढ़ाने में सहायता की जाएगी।
- सार्वजनिक सेवाओं तक उचित और न्यायसंगत पहुंच।
- कानून के तहत समान इलाज और संरक्षण और अन्याय को चुनौती, विशेष रूप से जो अन्याय पूर्ण रूप से असुरक्षित और वंचित रह गए हैं।
- वह मुवक्किल जिसके पास सर्वोत्तम सेवाएं मिल रही हैं, अब उसे सुलभता से हासिल नहीं हो रही।
- सभी प्रकार के भेदभाव को समाप्त करके और लोगों की विविधता का सम्मान करने वाली परिस्थितियों को बढ़ावा देने के लिए उचित प्रयास करें।
- गरीबी के लिए उन्मूलन
- सभी व्यक्तियों के लिए समाज के संसाधनों का न्याय संगत वितरण आवश्यक है। वे नियोक्तओं, नीति निर्माणकर्ताओं, राजनेताओं और सामान्य सार्वजनिक स्थितियों का ध्यान आकर्षित करते हैं जहां संसाधन अप्रयुक्त होते हैं, या जहां संसाधनों, नीतियों और प्रथाओं का वितरण दमनकारी, अनुचित या हानिकारक है (सी.ए.एस. डब्ल्यू, 2008)।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणी : क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) सामाजिक न्याय के क्या सिद्धांत है?

.....

.....

.....

.....

2) समाज कार्य व्यवसाय में सामाजिक न्याय के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

2.6 सारांश

सामाजिक न्याय का मूल्य समाज में प्रचलित सामाजिक अन्याय के खिलाफ लड़ने के लिए प्रत्येक समाज कार्यकर्त्ता से आग्रह करता है। समाज कार्यकर्त्ताओं को उन प्रमुख आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक शक्तियों को समझना चाहिए जिन्होंने व्यक्तिगत देशों में और अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में सामाजिक नीति के विकास को आकार दिया है। उन्हें यह ज्ञात होना चाहिए और समझना चाहिए कि स्थानीय, राष्ट्रीय स्तर पर नीति कैसे विकसित की जाती है। समाज कार्यकर्त्ताओं को विश्लेषण करने में सक्षम होना चाहिए और उन नीतियों का व्यक्तियों, परिवारों, समूहों और समुदायों पर प्रभाव का आंकलन करने में सक्षम होना चाहिए जिनसे वे सामाजिक न्याय के संदर्भ में काम करते हैं।

इससे समाज कार्यकर्त्ता को प्रभावी समाज कार्य अभ्यास और मांग के लिए, व्यवहार के संदर्भ में सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने के लिए नीति स्तर पर रचनात्मक बदलाव के लिए प्राप्त नीतियों और योजनाओं का उपयोग करने में सहायता मिलेगी। समाज कार्य पेशेवरों को सामाजिक कार्रवाई आंदोलन में भाग लेने की आवश्यकता है और सामाजिक न्याय का समर्थन करने का प्रयास करते हुए समुदाय के साथ खड़े रहना चाहिए। (सिंह एवं कुरेन, 2016) अन्याय को खत्म करने के लिए सामूहिक आंदोलन का गठन करके समाज कार्यकर्त्ताओं की चेतना का प्रसार करना एक पेशेवर का दायित्व है और सामाजिक न्याय इस लक्ष्य की कुंजी है

2.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

ऐथिक्स, एकाउंटेबिलिटी एंड द सोशल प्रोफेश्नल, बैंकस, एम. (2004), बेसिंगसटोकेःपालग्रेव

सोशल वर्क एन एम्पावरिंग प्रोफेशन, थर्ड एडिशन, बैंडा, एल. डुबोइस, एंड मिले, क्रोग, स्रुड, (1999): तीसरा संस्करण, लंदन : एलिनांद बेकन

एनवायरमेंटालिज्म एंड सोशल वर्क : द सोशल जस्टिस इशूज, देवाने, क्लाउडिया जे. (2011), सोशल वर्क टुडे, सितम्बर/अक्टूबर 2011

पेडागोगी ऑफ द ऑपरेस्ड, फ्रेरे, पाउलो (1970) न्यू पार्कः हारडर एंड हारडर

सोशल जस्टिस इन सोशल ऐजेंसी क्लीन, जे.पी.(1995), आर.एल. एडर्वड (ई.डी.) में एन्साइक्लोपीडिया ऑफ सोशल वर्क (19 वा वॉल्यूम 1, पी.पी. 95–100) वाशिंगटन, डी. सी. एन.ए.एस.डब्ल्यू. प्रेस

ए थ्योरी ऑफ जस्टिस, जॉन रॉवल्स (1971), केम्ब्रीजः हारवर्ड विश्वविद्यालय प्रेस

प्रसपेक्टिवस ऑन सोशल जस्टिस, जी. डेविड जी (2004) रिफलेक्शन्स, वोल्युम 10–4, फाल (2004)

कॉम्युन्सः क्रिएटिंग एंड मैनेजिंग कोलेक्टिव लाइफ, कांटर, रोज़ाबेथमॉस (1972), न्यू यॉर्कः हारपर एंड रॉ

द रिपब्लिक, प्लेटो (1974) जी.एम.ए.ग्रूवे ट्रांस, भारत

अनार्की, स्टेट एंड यूरोपिय, रॉबर्ट, नोजिक (1974), न्यू यॉर्क; बेसिक बुक्स, सम्मिलित पब्लिकेशन

सर्विस टू ह्यूमेनिटी, सिंह रविन्दर एंव कुरेन, अनीश (2016) सोशल वर्क द वेल्यू बेस्ट प्रोफेशन, थॉमस, ग्रेसियस (ई.एंडएस.), जयपुर रावत पब्लिकेशन

काम्परीहेंसिव हेंडबुक ऑफ सोशल वर्क एंड सोशल वेलफेयर, ओवर्स, करेन, एम.और दुलमुस, केथरीन एन. (2008) वाल्युम – 4, जॉन विले एंड संस

कोड ऑफ एथिक्स फॉर सोशल वर्कस, थॉमस, गेसियस (2015) न्यू दिल्लीः इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी

मेक्रो–सोशल वक्र प्रेक्टिस ए स्ट्रेंथस प्रिस्पेक्टिव, रिस, केरोलियन, जे एंड मॉरिसन, जॉन डी. (2012), पीस एंड सोशल जस्टिस, एन्गेज लर्निंग वेनसोस्ट, डी (1995) आ.एल. एडवर्डस (ई.डी) में संरक्षित एन्साइक्लोपीडिया ऑफ सोशल वर्क, (ई.डी) (19th vol 1, PP.95&100) वार्शिंगटन, डी.सी. : एन.ए.एस. डब्ल्यू प्रेस।

वेबसाइट्सः

कोड ऑफ एथिक्स, आस्ट्रेलियन एसोसिएशन ऑफ सोशल वर्करस www.aasw.asn.av/document/item/120,23/08/2014 के द्वारा परिलक्षित

कांउसिल ऑफ सोशल वर्क एजुकेशन,www.cswe.org/file.aspx\i2=41861,21/08/2014 के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

द परस्यूट ऑफ सोशल जस्टिस : ए सोशल वर्क एथिक अन्डर सेगे, हेरिसन, डेविड, एंड पाइपेनर, जॉन एच (2002),आई.यू.सी. जरनल ऑफ सोशल वर्क थियोरी एंड प्रेक्टिस सोशल इशूज 13, www.bemidjistate.edu/academics/./social_workjournal/harsion.hके माध्यम से परिलक्षित।

डेफिनेशन ऑफ सोशल वर्क, इंटरनेशनल फैडरेशन ऑफ सोशल वर्कर (2013) 17/08/2014 http://ifsw.org/policies/definition-of-social-work/,के द्वारा संरक्षित।

सोशल जस्टिस इन इफेक्टिव कम्यूनिटीज, एल.एल.सी., मेयर, स्टेवन ई. (2007)09/08/2014 www.effectivecommunities.com/pdfs/ecp_socialjustice.pdf द्वारा संरक्षित।

ऑकेज़नल पेपर : वाट इज़ सोशल जस्टिस? नेशनल प्रो. बोनो रिसर्च सेंटर (2011)15/08/2014 https://wic041u.server-secure.com/.../occ_1_what%%is%&social%20J पर परिलक्षित है।

कोड ऑफ एथिक्स , नेशनल एसोसिएशन ऑफ सोशल वर्करस (एन.ए.एस.डब्ल्यू) 21/08/2014 https://www.socialworkers.org/pubs/code/code.asp द्वारा संरक्षित हैं।

द वर्ल्ड क्राइसिस : पॉवर्टी, टेरकर एंड वार, (2001 मार्च), इंटरनेशनल फ्रेडरेशन ऑफ सोशल वर्कर (2001), आई.एफ.एस.डब्ल्यू, पी–3,http://ifsw.org/policies के द्वारा संरक्षित।

वट्स सो स्पेशल अबाउट सोशल वर्क एंड सोशल जस्टिस?, पायने, मालकोल्म (2012), https://www.theguardian.com/social-care network/2012/jul/10/social-work-social-justice के द्वारा संरक्षित

द एथिकल गाइडलाइन ऑफ सोशल एजुकेटर एंड सोशल वर्कर, यूनियन ऑफ सोशल एजुकेटरस एंड सोशल वर्करस (2003), 10/10/2014 http://www.ifsw.org/cm_lta/russian_ethical.pdf के द्वारा संरक्षित।

2.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) 'सामाजिक न्याय' शब्द के विविध अर्थ है। सामाजिक न्याय, सामान्य तौर पर; समाज में समनता अथवा समान अवसरों की अवधारणा से सम्बद्ध है।

2) सामाजिक न्याय, समाज कार्य के मूल्यों में से एक है जो एक प्रदत्त में मनुष्यों के मध्य समान रूप से अथवा न्यायपूर्ण ढंग से विभाजित किए गए विभिन्न लाभो पर आधारित सम्बन्धों पर केन्द्रित है।

बोध प्रश्न II

1) सामाजिक न्याय के सिद्धांत है :

- सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को कमजोर तथा निर्धनों में निर्धनतम हेतु अन्याय को चुनौती देनी चाहिए।
- समाज कार्यकर्त्ताओं को संसाधनों के उचित वितरण हेतु प्रयासरत होना चाहिए
- समाज कार्यकर्त्ता को समान अधिकारों तथा समान अवसरों हेतु को सुनिश्चित करने हेतु अनवरत् कार्य करना चाहिए।
- समाज कार्यकर्त्ताओं को मुवक्किलों के सशक्तिकरण पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।
- समाज कार्यकर्त्ताओं को दमनकारी तथा अन्यायपूर्ण नीतियों तथा अभ्यासों को चुनौती देनी चाहिए।
- समाज कार्यकर्त्ताओं का दायित्व समावेशी समाज सुनिश्चित करने हेतु कार्य करना है।

2) सामाजिक न्याय, समाज कार्य के मूल्यों में से एक है जो एक प्रदत्त समाज में मनुष्यों के मध्य समान रूप अथवा न्यायपूर्ण ढंग से विभाजित किए गए विभिन्न लाभों पर आधारित सम्बन्धों पर केन्द्रित हैं। यह इस पर केन्द्रित है कि किस प्रकार एक समाज में शक्ति, सपंदा तथाा संसाधनों का एक समान रूप में वितरण तथा उपयोग किया जाए।

इकाई 3 समाज कार्य के एक मूल्य के रूप में मानव सम्बन्धों का महत्व

*मालाथी अदुसुमल्ली एवं नमीता जैनर

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 समाज कार्य में मूल्य और नैतिकता के रूप में मानव सम्बन्धों का महत्व

3.3 सामाजिक पूंजी के रूप में मानव सम्बन्ध

3.4 मानव सम्बन्धों का प्रणालीगत दृष्टिकोण

3.5 सम्बन्ध और समाज कार्य हस्तक्षेप रणनीतियां

3.6 प्रभावी रिश्तों की विशेषताएं

3.7 समाज कार्य हस्तक्षेप में रिश्तों का उपयोग करने के सिद्धांत

3.8 सारांश

3.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निम्न को समझने में सक्षम होंगे:

- समाज कार्य में एक मूल्य तथा आचार–नीति के रूप में मानव सम्बन्धों का महत्व समझना;
- सामाजिक पूँजी के रूप में मानव सम्बन्धों का वर्णन करना;
- मानव सम्बन्धों के प्रणाली दृष्टिकोण के बारे में विचार–विमर्श करना;
- एक प्रभावी सम्बन्ध की विशेषताओं को सूचीबद्ध करना; और
- समाज कार्य अन्तःक्षेपों में सम्बन्धों का उपयोग करने हेतु सिद्धांतों को रेखांकित करना।

3.1 प्रस्तावना

समाज कार्य का व्यवसाय सामाजिक न्याय और मानवाधिकार के सिद्धांतों पर आधारित है। 2001 में, समाज कार्य विद्यालय (आई.एफ.एस.डब्ल्यू.) और समाज सेवा के अंतर्राष्ट्रीय महासंघ (आई.एफ.एस.डब्ल्यू.) के अंतर्राष्ट्रीय सहयोग ने सामाजिक परिवर्तन के विकास के उद्देश्य से व्यवसाय के रूप में समाज कार्य को परिभाषित किया, रिश्तों को सुलझाने और सशक्त करने की समस्या और लोगों को विकास की ओर ले जाने की मुक्ति के रूप

*डॉ. मालाथी अदुसुमल्ली एवं डॉ. नमीता जैनर, समाज कार्य विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

में परिभाषित किया जा सकता है। समाज कार्य एक अंतःविषय क्षेत्र है, जिसका लक्ष्य है कि विभिन्न प्रकार के अस्पतालों, स्कूलों, विश्वविद्यालयों और परिवारों जैसे शैक्षणिक व्यवस्था जैसे व्यक्तियों तक पहुंचने के माध्यम से मानव जीवन को बेहतर बनाना है।

जुलाई 2014 में, आई.एफ.एस.डब्ल्यू. सामान्य सभा और आई.एफ.एस.डब्ल्यू. जनरल असेंबली ने समाज कार्य की निम्नलिखित वैश्विक परिभाषा को सहमति दीः

'समाज कार्य एक अभ्यास आधारित व्यवसाय और एक शैक्षणिक अनुशासन है, सामाजिक सामंजस्य और लोगों के सशक्तिकरण और मुक्ति के सामाजिक परिवर्तन और विकास को बढ़ावा देता है। सामाजिक न्याय के सिद्धांत, मानव अधिकार, सामूहिक जिम्मेदारी और विविधता के प्रति सम्मान समाज कार्य के केन्द्रीय विषय हैं। सामाजिक विज्ञान, मानविकी और स्वदेशी ज्ञान के सिद्धांत से दब गई, समाज कार्य लोगों और ढ़ांचे को जीवन की चुनौतियों से निपटने और अच्छाई को बेहतर बनाने में व्यस्त है।

'उपरोक्त परिभाषा को राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तरों पर बढ़ाया जा सकता है'

यह नवीनतम परिभाषा समाज कार्य अभ्यास के महत्वपूर्ण लक्ष्यों में से एक के रूप में 'सामाजिक सामंजस्य' का उल्लेख करती है। यह लक्ष्य पहले उल्लेख किए गए लक्ष्य से संबंधित है जो 'मानव रिश्तों की समस्याएं एक समाधान' है, जिसे आई.एफ.एस.डब्ल्य. और आई.एफ.एस.डब्ल्य.द्वारा 2001 की परिभाषा के आधार पर जोर दिया गया था। यह लक्ष्य मानव संबंधों में समाज कार्य व्यवसाय और सामाजिक मुद्दों को संबोधित करने के लिए 'सामाजिक पूंजी' के रूप में इसके महत्व को व्यक्त करता है। वास्तव में, नैतिकता के आई.एफ.एस.डब्ल्यू. संहिता में सभी समाज कार्यकर्त्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण मूल्य के रूप में 'मानव संबंधों के महत्व' का उल्लेख किया गया है। यह समाज कार्यकर्त्ताओं द्वारा विश्व भर में तैनात प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण माना जाता है।

3.2 समाज कार्य में मूल्य और नैतिकता के रूप में मानव सम्बन्धों का महत्व

सभी व्यवसायों के आधार पर समाज कार्य सबसे अधिक मूल्यवान है। यह मूल रूप से मूलभूत मूल्यों में गहराई से जुड़ा हुआ है, जो अंततः व्यवसाय के मिशन और चिकित्सकों की प्राथमिकता को आकार देती है। समाज कार्यकर्त्ता इन मूल्यों के अनुसार कार्य करते हैं। कई पहलुओं में समाज कार्य के लिए मूल्य महत्वपूर्ण हैं, जैसे समाज कार्य के मिशन की प्रकृति की पहचान करना, हस्तक्षेप के तरीकों को खोजने और व्यवहार में नैतिक कठिनाईयों के संकल्प में सबसे महत्वपूर्ण रूप हैं। वास्तव में नैतिकता संचालन इसका मूल्य है। समाज कार्य के अभ्यास के लिए नैतिकता जागरुकता जरुरी है। नैतिक जिम्मेदारियां, व्यक्तिगत और पारिवारिक से सामाजिक और व्यावसायिक के लिए सभी मानव रिश्तों का प्रवाह बना रहना चाहिए। इस प्रकार, समाज कार्यकर्त्ताओं की क्षमता और नैतिकता के प्रति प्रतिबद्धता लोगों के साथ जुड़ते समय समाज कार्य अभ्यास का एक महत्वपूर्ण पहलू होता है। यह पूरे विश्व में समाज कार्यकर्त्ताओं के लिए आवश्यक है ताकि विश्व को मानवाधिकारों के सम्मान के सिद्धांतों और उनके अभ्यास में सामाजिक न्याय विकासात्मक प्रतिबद्धता का मार्गदर्शन प्राप्त किया जा सकता है। समाज कार्य अभ्यास के लिए नैतिक मानकों को स्थापित करने के लिए नैतिक सिद्धांतों के लिए जागरुकता व्यवसाय के मूल मूल्यों को प्रतिबिंबित करता है। ऐसी नैतिक जागरुकता भी जरुरी है जब सामाजिक श्रमिकों की स्थिति में संघर्ष या नैतिक अनिश्चितता उत्पन्न होती है। समाज कार्य अभ्यास कर्मी के समाज कार्य के मिशन और मूल्यों में सामाजीकरण की आवश्यकता है कि नैतिक सिद्धांतों का ज्ञान व्यावसायिक अखंडता के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत है जो उनके कार्य क्षेत्र में समाज कार्यकर्त्ताओं को दिया जाता है। मानव

अधिकारों के सिद्धांतों से प्राप्त, 1999 में, समाज कार्यकर्त्ताओं के राष्ट्रीय सहयोग (एन. एस.एस.डब्ल्यू.) ने सामाजिक मूल्यों की पहचान करने के लिए नैतिक ज्ञान के (एन.एस. एस.डब्ल्यू.) संहिता में प्रकाशित किया है, जिस पर समाज कार्य का मिशन आधारित है और यह समाज कार्यकर्त्ताओं के नैतिक प्रशिक्षण का अंश होगा।

एन.ए.एस.डब्ल्यू. द्वारा सूचीबद्ध छः प्रमुख मूल्य हैः

1 सेवा

2 सामाजिक न्याय

3 गरिमा और व्यक्ति के मूल्य

4 मानव रिश्तों का महत्व

5 अखंडता

6 क्षमता

सभी समाज कार्य अभ्यास इन मूल्यों में निहित है और सिद्धांतो को उन आदर्शों को निर्धारित किया गया है, जिनके लिए अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते समय सभी समाज कार्यकर्त्ताओं का पालन करना चाहिए। इन मूल मूल्यों में से प्रत्येक से एन.ए.एस.डब्ल्यू. ने समाज कार्य अभ्यास के लिए नैतिक सिद्धांत प्राप्त किए हैं। उदाहरण के लिए, मूल्य सिद्धांत 'मानव संबंधों का महत्व' एक नैतिक सिद्धांत में अनुवादित हैं जिसमें कहा गया है कि 'समाज कार्यकर्त्ता मानव संबंधों के केन्द्रीय महत्व को मानते हैं'। समाज कार्यकर्त्ता यह समझते हैं कि लोगों के बीच संबंध और उनके बीच संबंध परिवर्तन के लिए एक महत्वपूर्ण संवाहक है। समाज कार्यकर्त्ता लोगों को सहायता प्रक्रिया में भागीदारों के रूप में शामिल करते हैं। समाज कार्यकर्त्ता लोगों, परिवारों, सामाजिक समूहों, संगठनों और समुदायों के हित को बढ़ावा देने, पुर्नस्थापित करने, बनाए रखने, और विकास के उद्देश्यपूर्ण प्रयास में लोगों के बीच संबंधो को मजबूत करने की तलाश करते हैं। यह एन.ए.एस.डब्ल्यू. द्वारा प्रकाशित किया गया है कि इन मूल मूल्यों के सभी संदर्भों के लिए सार्वभौमिक हैं, लेकिन सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, कानूनी और सामाजिक आर्थिक स्थितियों के आधार पर समाज कार्य अभ्यास की प्राथमिकताएं देश में समय–समय पर बदलती हैं।

समाज कार्य अभ्यास में रिश्तों की प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए, समाज कार्यकर्त्ताओं के लिए निम्न बिंदु पर विचार करना महत्वपूर्ण हैः

1 सांस्कृतिक संदर्भ में मानव संबंधों की समझ आवश्यक है। उदाहरण के लिए पश्चिमी संदर्भ में और भारतीय संदर्भ में एक संस्था के रूप में परिवार के तौर पर परिवार में अत्याधिक अंतर होता है। इसलिए किसी भी बोध के लिए समाज कार्यकर्त्ता द्वारा रिश्ते का उपयोग सांस्कृतिक रूप से सूचित किया जाना चाहिए।

2 समाज कार्यकर्त्ताओं द्वारा अच्छे रिश्तों को बनाए रखने के लिए आवश्यक चीजों की आवश्यकता होती है। समाज कार्यकर्त्ता केवल अच्छे रिश्तों को बनाए रखने के लिए अभ्यास करके परिवर्तन करके संवाहन के रूप में मानव संबंधो का उपयोग कर सकते हैं।

3 समाज कार्यकर्त्ता द्वारा मानव रिश्तों का उपयोग मात्र लोगों या जरुरत मंद लोगों के साथ बनाए रखने वाले रिश्तों तक सीमित नहीं है। सेवा वितरण प्रणाली में कार्य करते समय, समाज कार्यकर्त्ता, सहकर्मियों, स्वयं के संगठनों, अन्य हितधारक संगठनों के साथ अपने रिश्तों को बनाए रखता है और उनका निवारण की जरुरत के लिए नेटवर्क से मिलकर कार्य करते हैं।

4 समाज कार्य अभ्यास के लिए रिश्तों का उपयोग करने की प्रक्रिया में, समाज कार्यकर्त्ता एक साथ उनके अभ्यास में सभी स्तरों पर मानव संबंधो का उन्नयन कर रहे हैं। यह समाज कार्यकर्त्ता के कौशल से सीधे सह सबंधित है जो वह रिश्तों को संभालने की क्षमता निहित है।

3.3 सामाजिक पूंजी के रूप में मानव सम्बन्ध

सामाजिक पूंजी को एक अवधारणा के रूप में समकालीन समय में अत्याधिक महत्व मिला है क्योंकि संकल्पना के रूप में पूंजी का गैर आर्थिक पहलू पक्ष सम्मिलित करके पूंजी के संसाधनों को विस्तृत करता है। उदाहरण के लिए, मानव नेटवर्क और संबंध को महत्वपूर्ण गैर आर्थिक और वित्तीय संसाधन माना जाता है। समाज कार्यकर्त्ता जो कार्य कर रहे हैं, उन लक्ष्यों और उन व्यवसायों और संगठनों के उद्देश्य की उपलब्धि के लिए संसाधन की आवश्यकता होती है। मानव रिश्तों और नेटवर्क समस्या हल करने और साधन जुटाने में समाज कार्यकर्त्ता अपने कार्यों की उपलब्धि में उपयोग करने वाले महत्वपूर्ण संसाधनों में से एक है।

व्यक्ति के जीवन में अन्य लोगों और उनके आस–पास की दुनिया में रिश्तों को समझना महत्वपूर्ण है कि टूटे हुए रिश्तों से अत्याधिक दर्द और पीड़ाएं आ सकती हैं और निराशा की भावना पैदा कर सकते हैं। इसलिए, इस कारण से लोगों को अपनी पूरी क्षमता तक पहुंचने में मदद करने के लिए कार्यात्मक कार्य करने वाले स्वस्थ्य रिश्तों के निर्माण और रखरखाव करना महत्वपूर्ण है।

मानव संबंधो को समाज कार्य में महत्वपूर्ण सामाजिक पूंजी भी माना जाता है क्योंकि सभी मानव राष्ट्रीय विकास के लिए संसाधन है। वे सामाजिक पूंजी के पर्याप्त अंश से हैं जो कि अन्य प्रकार की पूंजी के रूप में महत्वपूर्ण माना जाता है जो परिसंपत्ति पंचभुज के ही अंश हैं और जिसकी चर्चा निम्न हैः

1 **वित्तीय पूंजी :** इसमें आय, क्रेडिट और निवेश शामिल है। यह एक रूप में अधिक लोकप्रिय माना जाता है जो केवल पूंजी का स्रोत है।

2 **सामाजिक पूंजी :** इसमें लोगों और संस्थानों के साथ संबंधों के माध्यम से आने वाले लाभ शामिल हैं। यह उन लोगों के बीच संबंधों में परिवर्तनों के माध्यम से बनाया गया है जो कार्रवाई की सुविधा प्रदान करते हैं। यह मनुष्य के बीच संबंधों में मौजूद हैं क्योंकि यह अपेक्षाकृत वास्तविक हैं।

3 **प्राकृतिक पूंजी :** इसमें प्राकृतिक संसाधनों का भंडार है जैसेः हवा, पानी, जंगल, वृक्षारोपण आदि सम्मिलित हैं। यह सभी मानवीय आर्थिक गतिविधियों का आधार है। जलवायु परिवर्तन और स्थायी विकास के वैचारिक रुपरेखा को देखते हुए प्राकृतिक पूंजी को राष्ट्रीय महत्व प्राप्त हुआ है।

4 **भौतिक पूंजी :** इसमें वास्तविक भौतिक तथ्यों को शामिल किया गया है, जो लोगों को स्वयं का नियंत्रण, संचालन या कार्य पूरा करने के लिए सहायक होते हैं। यह वस्तुओं में परिवर्तन द्वारा उत्पादन को बढ़ावा देने वाले उपकरणों से बनाया गया है यह स्पष्ट रूप से मूर्त रूप में देखा जा सकता है क्योंकि यह भौतिक रूप में दिखाया गया है।

5 **मानवीय पूंजी :** इसमें कौशल, ज्ञान, योग्यताएं और क्षमताएं शामिल हैं जो अन्य क्षेत्रों के विकास में सहायता करती है। यह उन व्यक्तियों में बदलावों से बनाया गया है जो कौशल और क्षमताओं को लेकर कार्य करते हैं जो उन्हें नए तरीकों से कार्य करने में सक्षम बनाती है। यह सामाजिक पूंजी के रूप में भी कम वास्तविक है क्योंकि व्यक्ति द्वारा प्राप्त कौशल और ज्ञान शामिल होना कारण है।

सामाजिक संबंधों के रूप में मानव संबंधों की अवधारणा को समाज कार्य प्रथा में उपयोगी माना जाता है जबकि तलाक और किशोर अपराध जैसे मानव रिश्तों से जुड़ी सामाजिक

समस्याओं को संबोधित करते हैं पारिवारिक और रिश्तों के मुद्दे और जीवनकाल की चुनौतियां विश्व परिवर्तन के संबंध में एक प्रमुख चिंता के रूप में उभरकर सामने आते हैं। कुछ उल्लेखनीय उदाहरण निम्न समूह की जरुरतों से संबंधित मुद्दे हैं:

- बच्चे और परिवार
- असक्षम लोग
- लोगों को स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की जरुरत है
- वृद्ध लोग
- नशा और नशीले पदार्थों के सेवन संबंधी समस्याओं से संबंधित लोग
- घरेलू और अंतरंग रिश्तों के भीतर हिंसा से पीड़ित लोग।

लोगों की सहायता करने की प्रक्रिया में, समाज कार्यकर्त्ता किसी व्यक्ति की पूर्ण क्षमता को बनाने में रिश्तों की भूमिका को स्वीकार करते हैं। इस प्रक्रिया में समाज कार्यकर्त्ता प्राथमिक भूमिका मानव संबंधों और सामाजिक संस्थानों को मानव और मानवीय जरुरतों के प्रति उत्तरदायी बनाते हैं। वे व्यक्तियों के लाभ के लिए मानव रिश्तों के उपयोग को अधिकतम संपूर्ण करने के लिए, एक वकील, मध्यस्थ, शिक्षक आदि के रूप में विभिन्न भूमिकाएं निभाते हैं। संचार सेवाएं जो रिश्तों को जोड़ने में अनिवार्य कार्य करती हैं – मानव संबंध के बिंदु, समाज कार्यकर्त्ता की मजदूरी और सेवा उपयोगकर्ता, देखभाल कर्त्ता या अन्य व्यक्तियों को विश्व में एक दूसरे से जोड़ती है।

3.4 मानव सम्बन्धों का प्रणालीगत दृष्टिकोण

एक समाज कार्यकर्त्ता विभिन्न क्षेत्रों में कार्य को निर्धारित करता है, इससे तात्पर्य है कि सभी मानवीय समस्याओं और उससे जुड़े मुद्दों को बढ़ावा देता है। दोनों प्लेटो और अरस्तू ने इस बात पर बल दिया है कि मनुष्य (सामाजिक) सामाजिक या सांप्रदायिक है। मानवतावादी (मस्लो और राजन की तरह मानवतावादी विचारक) मानव और उनके संबंधों पर जोर देने के लिए एक कदम आगे है। वे स्वयं पर जोर देते हैं और संबंधो (स्वयं) के बीच के व्यक्तित्व के लिए आपसी सम्मान के रूप में संबंधों का उल्लेख करते हैं। इस प्रकार, मैं (स्वयं) मैं (अन्य आत्मा) से संबंध है, और यह दूसरा स्वयं आपके परिवार, पड़ोस या समाज कार्यकर्त्ता के रूप में हो सकता है। अक्सर एक सार्वभौमिक मानवीय आदेश के लिए एक परिवार के आदेश को बनाए रखने के लिए दूसरों (एस) के साथ एक सामंजस्यपूर्ण संबंध बनाए रखने की आवश्यकता होती है।

मानव संबंधो को कई प्रकार के संबंधों के समकक्ष और एक श्रृंखला के रूप में माना जा सकता है। विकास संबधित सिद्धांतकारों ने मानव विकास में संबंधों की भूमिका पर बल दिया है। इस संबंध में महत्वपूर्ण सिद्धांतों में से एक ब्रोन्फेनब्रेनेर परिस्थितिकी तंत्र विकास के सिद्धांत है। इस सिद्धांत के अनुसार, मानव जैविकी भावनात्मक, संज्ञानात्मक, और सामाजिक तत्वों की एक जटिल प्रणाली में रहते हैं। व्यक्ति को वर्तमान और भूतकाल के वातावरण के साथ पारस्परिक संबंधो का भी अनुभव होता है। वातावरण सुरक्षित स्थान की संरचनाओं के एक समूह के रूप में अवधारणा है। प्रत्येक संरचना अन्य में समाहित है और संपूर्ण का एक हिस्सा है। व्यक्ति संरचनाओं के समूह के केंद्र में है। ब्रोंफेनब्रेनेर ने प्रस्तावित किया कि किसी व्यक्ति के विकास के आसपास के वातावरण से प्रभावित होता है। उन्होंने व्यक्ति के पर्यावरण को पांच अलग–अलग स्तरों में विभाजित किया: माइक्रोसिस्टम, मैसोसिस्टम, एक्सोपिस्टम, मेक्रोसिस्टम और क्रोनोससिस्टम । इसमें से प्रत्येक प्रणाली विभिन्न मानव संबंधो का प्रतिनिधित्व करती है और वे निम्नानुसार हैं:

1. **माइक्रोसिस्टम** : माइक्रोसिस्टम व्यक्ति के सबसे नजदीक है। निकटतम मानव रिश्तों में से कुछ माइक्रोसिस्टम का हिस्सा है, जिससे यह सबसे प्रभावशाली प्रणाली बनी है। इसमें परिवार, साथियों, धार्मिक संस्थानों, जाति संबद्धता और पड़ोस आदि शामिल है।

2. **मैसोसिस्टम :** मैसोसिस्टम में एक व्यक्ति के माइक्रोसिस्टम के विभिन्न अंशों के बीच के पारस्परिक विचार–विमर्श होता हैं। मेसासिस्टम में एक व्यक्ति के माइक्रोसिस्टम के विभिन्न हिस्सों के बीच के पारस्परिक विचार–विमर्श होते हैं। जहां एक व्यक्ति के व्यक्तिगत माइक्रोसिस्टम्स स्वतंत्र रूप से कार्य नहीं करते हैं, लेकिन एक दूसरे से जुड़े होते हैं और एक दूसरे पर प्रभाव ड़ालते हैं। पारस्परिक विचार–विमर्श का व्यक्ति पर अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए, माता–पिता और बच्चे के शिक्षकों के बीच बातचीत मैसोसिस्टम का अच्छा उदाहरण है।

3. **एक्सोसिस्टम :** पारिस्थितिक तंत्र एक ऐसी व्यवस्था को संदर्भित करता है जिसमें व्यक्ति को एक सक्रिय प्रतिभागी के रूप में शामिल नहीं किया जाता है, लेकिन फिर भी उन्हें प्रभावित करता है। इसमें वे फैसले शामिल होते हैं जिन का व्यक्ति पर असर पड़ता है, लेकिन उस व्यक्ति पर निर्णय लेने वाले फैसले में उनका कोई भाग नहीं है, परंतु इसमें निर्णय लेने की प्रक्रिया में भी कोई भागीदारी नहीं है। एक उदाहरण दृष्टव्य है, माता–पिता को काम पर एक पदोन्नति प्राप्त करने या उनकी नौकरी खोने से बच्चे प्रभावित होंगे।

4. **माइक्रोसिस्टम :** मैक्रोसिस्टममें माइक्रो–मैसो और एक्स प्रणाली की व्यापक संरचना शामिल होती है, जो उस संस्कृति की विशेषता होती है, विश्वास प्रणाली, राजनीतिक मान्यताओं आदि के विशेष संदर्भ में व्यक्ति रहता है। उदाहरण के लिए, भारत में रहने वाला एक बच्चा पश्चिमी सांस्कृतिक माहौल से पूरी तरह से अलग सांस्कृतिक वातावरण में होगा।

5. **क्रोनोसिस्टम :** इस प्रणाली में न केवल व्यक्ति में बल्कि सांस्कृतिक परिवेश में भी व्यक्ति के जीवन में समय के साथ परिवर्तन या निरंतर शामिल है। उदाहरण के लिए आज़ादी से पहले के समय में किसी बच्चे की परवरिश वर्तमान समय से बिल्कुल अलग होगी।

ब्रोन्फेनब्रेनेर पारिस्थितिकी प्रणालियों के विकास के सिद्धांत के रूप में व्यक्ति–परिवेश के इस दृष्टिकोण के विकास के सिद्धांत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि समाज कार्य का व्यवसाय सभी प्रणालियों के विचार और व्यक्तियों के पारस्परिक प्रभाव और उनके वातावरण की विशेषता है। समाज कार्यकर्त्ताओं की नौकरी समग्र सेवा के बारे में हैं। परिणाम और क्रियाविधि समस्या की प्रकृति पर निर्भर करता है, समस्या का अनुभव करता है ओर उसके समाधान के लिए सही रास्ता प्राप्त कर लेता है। उदाहरण के लिए, एक किशोरावस्था अवसाद को एक समाज कार्यकर्त्ता के द्वारा अलग–अलग देखा जा सकता है, लेकिन परिवार के साथ कार्य करने का अत्याधिक लाभ होता है और शायद किशोर अवसाद पर ध्यान केंद्रित समूह का अंश होता है। यह संभव है कि समुदाय में असामान्य रूप से बड़ी संख्या में किशोरावस्था अवसाद से पीड़ित होते हैं। उच्च अपराध दर, नशीली दवांए और शराब के साथ समुदाय की व्यापक समस्याएं कमी के उपयुक्त कारण हो सकते हैं। फिर यह समाज कार्यकर्त्ता समुदाय के लोगों के साथ काम करने के लिए समुदाय के व्यापक परिवर्तन बनाने के अच्छे विचार हो सकते हैं। समाज कार्य में हम व्यवस्था के साथ काम करते हैं, और जैसा कि हमारे व्यवस्था प्रणाली से संबंधित है, उनके समाज कार्य को सुधारने में, हम कई प्रणालियों के साथ बातचीत कर सकते हैं। समाज

कार्य मानवीय संबंधों को एक तंत्र के भीतर किया जाता है, वास्तव में यह मानव रिश्तों और उनके साथ जुड़े विभिन्न प्रकार की समस्याएं हैं जो आम तौर पर समाज कार्यकर्त्ताओं की व्यवसायिक कार्य की मूल अवधारणाओं में से एक है, और यह समाज कार्य प्रथा में संबंधपरक आयाम है, जो अक्सर छात्रों को प्रगति की ओर आकर्षित करती है – 'लोगों की जनता के साथ काम करने की उनकी इच्छा को पूरा करती है। समाज कार्य अभ्यास में रिश्ते की जगह, महत्व को स्थान दिया गया है, ताकि श्रमिक उन लोगों की तलाश कर सकें, जिनके संबंध लोगों की जरुरतों के साथ उनकी मुठभेड़ में रचनात्मक परिणामों को बढ़ावा देने के लिए रिश्तों को इस्तेमाल किया जा सकता है।

3.5 संबंध और समाज कार्य हस्तक्षेप रणनीतियां

संबंध हमेशा ऐतिहासिक और मौलिक दोनों तरह से समाज कार्य के अभिन्न अंग हैं। इन मामलों के कार्य संबंध (बिस्टेक, 1957), एक चिकित्सीय संबंध (सूबेरी, 2002), और 'रिश्ते–आधारित समाज कार्य' के रूप में हाल के दिनों में समाज कार्य अभ्यास के तहत कई तरह से वर्णित हैं (त्रीविथिक, 2003)। इनमें से प्रत्येक को नीचे वर्णित किया गया है:

1. **केस कार्य संबंध** : समाज कार्य के क्षेत्र में सबसे प्रभावशाली से एक है 'फेलिक्स बिस्टेक (1957) द्वारा 'केस कार्य संबंध' को परिभाषित करते हैं, 'फ़ेक्सिक्स बिस्टेक द्वारा केस, केस संबंध के मामलों के बीच व्यवहार और भावनाओं के गतिशील संपर्क' के रूप में परिभाषित करना जिन्होंने कि मामले के संबंधों को परिभाषित किया, 'व्यवहार की गतिशील बातचीत और कर्मचारी और ग्राहक के बीच की भावनाओं को अपने और स्वयं के व्यवहार के बीच बेहतर समायोजन प्राप्त करने में मदद करने के उद्देश्य से किया जाता है'। यहां पर 'व्यक्तिगत समस्याओं और लोगों को समस्या के रूप में देखते हुए' बाहरी परिवर्तन की बजाय व्यक्तिगत परिवर्तन या 'समायोजन' पर जोर दिया गया हैं। बिस्टेक ने सात सिद्धांतों के संदर्भ में एक समाज कार्यकर्त्ता के लिए आवश्यक 'उचित दृष्टिकोण;, 'ज्ञान और योग्यता' को भी शामिल किया है: अविभाजन, भावनात्मक अभिव्यक्ति, नियंत्रित भावनात्मक वातावरण, स्वीकृति, गैर जघन्य रवैया, व्यक्ति स्वयं निर्णय, और गोपनीयता।

2. **चिकित्सीय संबंध :** सुब्बर (2002) ने इस तथ्य पर जोर देते हुए कहा है कि सभी समाज कार्यकर्त्ता कल्याणकारी प्रशासन, वकालत, समाज कार्यवाही, व्यावहारिक सहायता या सामाजिक नियंत्रण की तरह चिंता करते हैं, जो उन्हें चिकित्सीय, सशक्तिकरण और विकास को परिणामों के मुख्य उत्तरदायित्व के साथ प्रदान करते हैं। संबंधों के मुख्य घटक में बुनियादी आवश्यकता, आक्रामक आवेगों की प्रतिक्रिया और दंडात्मक आत्म चिंताओं को कम करना शामिल है। इस तरह के कार्य के लिए एक प्रबंधकीय पर्यवेक्षीय समारोह की आवश्यकता होती है जो चिकित्सीय संबंधों के उपयोग को समर्थन और सक्षम करती है।

3. **संबंध आधारित समाज कार्य :** इस दृष्टिकोण पर जोर दिया गया है कि ऐतिहासिक रूप से समाज कार्यकर्त्ता–व्यक्तिगत संबंध प्रभावशीलता और अच्छे अभ्यास पर केन्द्रित माना जाता है जो समाज कार्यकर्त्ता मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के भीतर उत्पन्न करने का प्रयास करते हैं, की गुणवत्ता को समाज कार्य अभ्यास के आठ क्षेत्रों के संबंध में महत्वपूर्ण माना जा सकता है –मूल्यांकन कार्य और प्रक्रिया संबंधों की कठिनाइयां; जो लोग कमजोर वर्ग या भलाई के लिए दूसरों पर भरोसा रखते हैं; परिस्थितियों की आवश्कता होती है जो चिकित्सकों को चिंता बनाए रखने

और सक्षम करने के लिए; क्षमता निर्माण के लिए आधार के रूप में संबंध; सशक्तिकरण और लोगों की क्षमता विकसित करना; और जनसंख्या के वंचित और हाशिए पर लगे क्षेत्रों के संबंध में। समाज कार्यकर्त्ता 'वह सामने की रेखाओं' का ज्ञान का उपयोग कर सकते हैं जो उन्होंने उन संबंधों के माध्यम से प्राप्त की हैं जो उन्होंने राजनीतिक तरीकों से गढ़ी हुई हैं और 'सामाजिक बुराईयों' के रूप में वे सेवा उपयोगकर्त्ताओं के जीवन पर प्रभाव ड़ालते हैं (त्रिवेथिक, 2003)।

3.6 प्रभावी रिश्तों की विशेषताएं

कैप्तान एवं कैप्लान ने हचिसन (2014) में उद्धत किया है जिसमें प्रभावी समर्थन प्रणाली की निम्नलिखित विशेषताओं को सूचीबद्ध किया गया है जो एक प्रभावी संबंध की भांति लागू हैः

1. अनुक्रमित विश्व दृष्टि का विकास और बढ़ावा देना
2. उम्मीद का विकास
3. समय रहते विकास और आत्मबल की वापसी
4. मार्ग प्रदर्शन प्रदान करना
5. सामाजिक विश्व के साथ एक संचार चैनल प्रदान करना
6. अपनी व्यक्तिगत पहचान की पुष्टि करना
7. भौतिक सहायता प्रदान करना
8. पर्याप्त स्थिरता सुनिश्चित करता है
9. अन्य व्यक्तिगत सहायता प्रदान करता है।

संबंधो का उपयोग करने के लिए समाज कार्यकर्त्ता को स्वयं का उपयोग करने के लिए समाज की आवश्यकता होती है और इस प्रकार स्वयं के उन्नत ज्ञान की आवश्यकता होती है। समाज कार्यकर्त्ता में जागरुकता प्रमुख है। लोगों के साथ समाज कार्यकर्त्ता संबंध तटस्थ और स्वतः स्फूर्त नहीं है। बल्कि, वे व्यापक सामाजिक–आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संदर्भों या रिपोर्ट या विभागीय बजट से प्रभावित और सक्षम बनाते हैं। समाज कार्य एक संदर्भ में सांस्कृतिक प्रथाओं से भी प्रभावित होता है, जो यौन संबंधी, बच्चों की परवरिश प्रथाओं, लिंग, समलैंगिकता, विवाह और तलाक आदि से जुड़ी भूमिकाओं के रूप में समलैंगिकता के मौलिक आयामों के प्रति विशिष्ट रुख अपनाता है। एक संबंध के संदर्भ में सुनने और संचार जैसे गुण महत्वपूर्ण हैं।

3.7 समाज कार्य हस्तक्षेप में संबंधों का उपयोग करने के सिद्धांत

समाज कार्य हस्तक्षेप के लिए रिश्तों का उपयोग करते हुए निम्नलिखित सिद्धांतों पर विचार करना महत्वपूर्ण हैः

1. किसी भी हाल में, भूमिका बदलने पर समाज कार्य प्रणाली को प्रभावित कर सकते हैं, इसलिए असंतोषजनक भूमिका संरचना को बातचीत करने के लिए परिवारों और समूहों की सहायता करना। भूमिका परिवर्तन का सामना करने वाले व्यक्तियों के लिए समर्थन के नेटवर्क का भी विकास करना।

2. हमेशा जहां शक्ति व्यवस्था और उत्पीड़न की शक्तियां, और अलगाव है, वहां समाज कार्य के हस्तक्षेप की आवश्यकता है। प्रभुत्व के प्रतिमान को चुनौती देने के लिए पक्षपोषण के विकास में सहायता करे।

3. व्यक्तियों, परिवार और संगठनों के सामाजिक समर्थन नेटवर्क में विनिमय के प्रतिमान पर विचार करें और विनिमय के असंतोषजनक स्वरुप की पुनः बातचीत करने में सहायता करें।

4. विश्वास प्रणाली में अंतर के आधार पर परिस्थितियों में कार्य करते समय वातावरण के बारे में सोचने में लोगों को शामिल करते हैं, सदस्यों को ईमानदारी से चर्चा में शामिल और कार्रवाई के लिए प्रेरित करना। भावात्मक संघर्षों की अभिव्यक्ति करने और यह समझने में मुवक्किल कैसे सहायता कर सकते हैं कि ये पिछली घटनाओं से कैसे संबंधित हैं। स्व–जागरुकता और आत्म नियंत्रण विकसित करने में सहायक होने चाहिए।

5. आवश्यक पर्यावरण संसाधनों का पता लगाने और उनका उपयोग करने में सहायक होना।

6. विकासात्मक बदलावों के समय और अनुभव में पारिवारिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों पर विचार करना चाहिए। साथ मानव विकास को अद्वितीय और आजीवन के रूप में पहचानना।

7. विभिन्न प्रक्रियाओं पर विचार करें, जिसके द्वारा व्यवहार सीखा जाता है। सीखने की प्रक्रिया सहायकता की संवेदना के प्रति संवेदनशील होती है। यह तब कार्यरत है जब लोगों के पास परिवर्तन लाने की प्रेरणा कम हो। व्यवहार संशोधन में संलग्न होने से पहले सामाजिक न्याय और निष्पक्षता के मुद्दों पर विचार करना चाहिए।

8. स्थिति का स्वयं के आंकलन और व्यवस्थित व्यक्ति के स्वंय के आंकलन के बीच महत्वपूर्ण अंतर के लिए संभावित होने के बारे में जागरुक होना; मूल्य स्वयं निर्धारण रोग विज्ञान के बजाय शक्तियों पर ध्यान केंद्रित करें।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणी : अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

1) सामाजिक पूँजी के रूप में मानव सम्बन्धों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) प्रभावी सम्बन्ध की विशेषताओं को सूचीबद्ध कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3.8 सारांश

समाज कार्यकर्त्ता लोगों की समस्याओं को हल करना चाहते हैं; इनमें से अधिकतर समस्याएं सामाजिक हैं क्योंकि ये कई सामाजिक कारकों के कारण उत्पन्न होती हैं–ये कारक लोगों के लिए अपनी पूरी क्षमता का एहसास करना मुश्किल बनाते हैं। इसकी सफलता कई गुना बढ़ सकती है जैसे कि गरीबी, बेरोजगारी, असमान अवसर, नक्सलवाद, क्षेत्रीयतावाद, बाल शोषण, अपराध और दंड का दुरुपयोग आदि। ये कारक सीधे या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हो सकते हैं। इस तरह के मुद्दों को हल करने के लिए यह महत्वपूर्ण हो जाता है। समस्याएं, प्रासंगिक भी हो सकती है। ऐसा हो सकता है कि, एक देश अलग ही समस्या का सामना कर रहा है जबकि कुछ लोगों को अन्य सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

समाज कार्य दोनों आंतरिक पहलुओं (मूल्य, विश्वास, भावनाओं और समस्या को सुलझाने की क्षमताओं) और बाहरी पहलुओं (पड़ोस, स्कूल, कार्य करने का स्थान, सामाजिक कल्याण प्रणाली और राजनीतिक व्यवस्था जो हमें प्रभावित करते हैं) से संबंधित हैं, जो मानव दशाओं से संबंधित हैं। ऐसा करने से, समाज कार्यकर्त्ता समस्या को सुलझाने और सामाजिक सामंजस्य बनाए रखने में मदद करने के लिए मानव रिश्तों का उपयोग कर लोगों की जरुरत के लिए एक विशिष्ट रूप से एक अनोखी सेवा प्रदान करने में सक्षम है। 'मानव संबंधों का महत्व' समाज कार्यकर्त्ताओं (एन.ए.एस.डब्ल्यू), संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा, 'प्रमुख मूल्यों में से एक के रूप में सूचीबद्ध है जो कि समाज कार्य व्यवसाय की नींव है'। समाज कार्य व्यवसाय विश्व भर में व्यक्तियों, परिवारों, सामाजिक समूहों, संगठनों और समुदायों के कल्याण को बढ़ावा देने, पुर्नस्थापित, रखरखाव और विकास की तलाश करते हैं। ऐसे सामाजिक सामांजस्यको प्राप्त करने के लिए, परिवर्तन को एक महत्वपूर्ण संवाहन के रूप में लोगों के बीच में मानव संबंधों के महत्व के केन्द्रत्व को स्वीकार करना महत्वपूर्ण है।

3.9 संदर्भ

द केसवर्क रिलेशनशिप, लंदन : लोहिया युनिवर्सिटी प्रेस, बेसटेक, एफ.पी.(1957 / 1989)

डेवलपमैंटल रिसर्च, पब्लिक पॉलिसी, एंड द इकोलोजी ऑफ चाइल्डहुड। चाइल्ड डेवलपमैंट, 45, 1–5, ब्रोनफेनब्रेनर यू. (1974)

हेनेसे, आर (2011) रिलेशनशिप स्किल इन सोशल वर्क। न्यू दिल्ली:प्रेस

डेमेन्शन्स ऑफ ह्यूमन बिहेवियर : परसन एंड एनवायरमेंट, न्यू दिलली : सेज पब्लिकेशन। हरचीसन, ई.डी.(2014)

इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ स्कूल ऑफ सोशल वर्क – इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ सोशल वर्कर (2001)। ऐथिक्स इन सोशल वर्क : स्टेटमेंट ऑफ प्रिंसीपलस । के द्वारा पुनः प्राप्त किया गया।

इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ स्कूल ऑफ सोशल वर्क – इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ सोशल वर्कर (2014)। ग्लोबल डेफिनेशन ऑफ सोशल वर्कः स्टेटमेंट ऑफ प्रिंसीपल। http://www.ifsw.org/get_involved/global_definition_of_social_work/के द्वारा पुनः प्राप्त किया गया।

एन.ए.एस.डब्ल्यू कोड ऑफ एथिक्स। एन.ए.एस.डब्ल्यू (1999)http://www.vet.utk.edu/socialwork/pdf/naswcodeofethics.pdf के द्वारा पुनः प्राप्त किया गया।

दी फिचर्स ऑफ थेरापेटिक सोशल वर्कः द यूज ऑफ रिलेशनशिप। जरनल ऑफ सोशल वर्क प्रैक्टिस, 16(एंड), 149–162। सडबेरी, जे (2002)

इफैक्टिव रिलेशनशिप – बेसड प्रैक्टिस : ए थियोरेटिकल एक्सप्लोरेशन। जरनल ऑफ सोशल वर्क प्रैक्टिस, 17(2), 163–176। त्रेविथिक, पी.(2003)।

3.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) समाज कार्य में मानव सम्बन्धों को महत्वपूर्ण सामाजिक पूँजी भी माना जाता है क्योंकि मानव, राष्ट्रीय विकास हेतु संसाधन होते हैं। वे सामाजिक पूँजी के महत्वपूर्ण भाग का निर्माण करते हैं जो कि इतना ही महत्वपूर्ण माना जाता है जितने पूँजी के अन्य प्रकार।

2) प्रभावी सम्बन्ध की विशेषताएँ हैं :

- एक क्रमबद्ध विश्व दृष्टि को पोषित तथा प्रोन्नत करता है।
- आशा को प्रोत्साहित करता है।
- समयबद्ध वापसी तथा शुरूआत करने को प्रोत्साहित करता है।
- मार्गदर्शन प्रदान करता है।
- सामाजिक संसार के साथ संप्रेषण माध्यम प्रदान करना।
- व्यक्ति की व्यैक्तिक पहचान की परिपुष्टि करना।
- विपदा में पुनः आश्वस्ति तथा दृढीकरण बनाए रखता है।
- पर्याप्त विश्राम सुनिश्चित करता है।
- अन्य व्यक्तियों के सहयोग को गतिशील करता है।

2) सामाजिक न्याय, समाज कार्य के मूल्यों में से एक है जो एक प्रदत्त समाज में मनुष्यों के मध्य समाज रूप अथवा न्यायपूर्ण ढंग से विभाजित किए गए विभिन्न लाभों पर आधारित सम्बन्धों पर केन्द्रित हैं। यह इस पर केन्द्रित है कि किस प्रकार एक समाज में शक्ति, तथा संसाधनों का एक समान रूप में वितरण तथा उपयोग किया जाए।

इकाई 4 समाज कार्य के एक मूल्य के रूप में व्यक्ति का मूल्य और गरिमा

*मालाथी अदुसुमल्ली एवं नमीता जैनर

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 परिचय

4.2 गरिमा की अवधारणा

4.3 समाज कार्य मूल्य के रूप में व्यक्ति का मूल्य और गरिमा

4.4 गरिमा और समाज कार्य प्रक्रियाएं

4.5 मानवीय गरिमा को प्राप्त करने के लिए चुनौतियां

4.6 मानव गरिमा की चुनौतियों से निपटने की समाज कार्यकर्त्ताओं की भूमिका

4.7 मानव गरिमा की चुनौतियों से निपटने में समाज कार्यकर्त्ताओं की तैयारी

4.8 सारांश

4.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निम्न को समझने में सक्षम होंगे:

- अस्मिता की अवधारणा को समझना;
- एक सामाजिक कार्य मूल्य के रूप में व्यक्ति की अस्मिता तथा मूल्य का वर्णन करना;
- मानव अस्मिता प्राप्त करने में चुनौतियों का वर्णन करना; और
- मानव अस्मिता की चुनौतियों से निपटने में सामाजिक कार्यकर्त्ताओं की भूमिका को सूचीबद्ध करना।

4.1 परिचय

समाज कार्य के मूल्यों की किसी भी सार्वभौमिक स्वीकार्य सूची के अभाव में, संयुक्त राष्ट्र मानव अधिकारों की घोषणाओं को एक दस्तावेज के रूप में माना जाता हैं जो कि विश्वभर के समाज कार्य व्यवसायियों द्वारा प्रस्तुत किए गए मूल्यों का सर्वाधिक प्रतिनिधि है। घोषणा की प्रस्तावना इस प्रकार की जाती है:

'जबकि मानव परिवार के सभी सदस्यों की अन्तर्निहित गरिमा और समानता और अहस्तान्तरणीय अधिकार का सम्मान विश्व के स्वतंत्रता, न्याय और शांति का आधार है,

जबकि मानव अधिकारों की उपेक्षा और अवहेलना असभ्य कार्यों का परिणाम है जिसमें मानव के अन्तःकरण का अपमान किया गया, और एक ऐसे विश्व का आगमन किया जिसमें मनुष्य बोलने की स्वतंत्रता और विश्वास का आंनद लेते हैं और डर से स्वतंत्रता मिली है और आम जनता की उच्चतम आकांक्षाओं की तरह इसे घोषित करना चाहते हैं,

जबकि यह आवश्यक है कि यदि किसी व्यक्ति को अत्चाचार और उत्पीड़न के विरुद्ध विद्रोह को अन्तिम सहारे के रूप में आश्रय लेने के लिए मजबूर नहीं किया जाता तो मानव अधिकारों को कानून के नियम द्वारा सुरक्षित रखना चाहिए,

*डॉ. मालाथी अदुसुमाली एवं डॉ. नमिता जैनर, समाज कार्य विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

जबकि आवश्यक है कि राष्ट्रों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों के विकास को प्रोत्साहित किया जाए,

जबकि संयुक्त राष्ट्र के लोगों ने चार्टर में मौलिक मानव अधिकारों में, मानव व्यक्ति के मूल्य और गरिमा में तथा पुरुषों और महिलाओं के समान अधिकारों में अपने विश्वास की पुनः पुष्टि की और सामाजिक प्रगति तथा विशाल स्वतंत्रता में जीवन के बेहतर मानदंडों को बढ़ावा देने के लिए निर्धारित किया गया,

जबकि सदस्य राज्यों ने संयुक्त राष्ट्र के साथ सहयोग को, सार्वभौमिक आदर–सम्मान के लिए उन्नति और मानव अधिकारों तथा मौलिक स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए स्वयं से प्रतिज्ञा की,

जबकि इन अधिकारों ओर स्वतंत्रता की एक सामान्य समझ इस प्रतिज्ञा की सम्पूर्ण उपलब्धि के लिए सबसे महत्वपूर्ण हैं।

अब, इसलिए **सामान्य विधानसभा** सभी लोगों और सभी राष्ट्रों के लिए **मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा को** सामान्य मानक की उपलब्धि के रूप में उद्घोषित करता है। अन्त में प्रत्येक व्यक्ति और समाज का प्रत्येक अंग, इस घोषणा को ध्यान में रखते हुए प्रशिक्षण और शिक्षा के द्वारा इन अधिकारों और स्वतंत्रताओं के लिए सम्मान को प्रोत्साहित करने का प्रयास करता है, प्रगतिशील मूल्यांकन के द्वारा राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय, दोनों, सदस्य राज्य के लोगों के बीच और अपनी न्याय व्यवस्था के अधीन क्षेत्रों के लोगों के बीच अपने सार्वभौमिक और प्रभावपूर्ण मान्यता और प्रथा की रक्षा करते हैं।

भारत भी संयुक्त राष्ट्र सामान्य सभा का एक सदस्य है और उपयुक्त घोषणा के प्रावधानों द्वारा बाध्य है। भारत कई अन्य का भी हस्ताक्षरकर्ता है जैसे बाल अधिकारों की अंतर्राष्ट्रीय संधि, संधि के दिशानिर्देशों के आधार पर देश के मानव अधिकारों और सामाजिक न्याय को सुनिश्चित करने के लिए उपाय करने के लिए वचनबद्ध हैं। यू.एन. ने घोषित किया है कि समाज कार्य व्यवसाय के लिए मानव अधिकार विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि हमारे व्यवसाय में मानव अधिकारों और सामाजिक न्याय के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए विशेष प्रतिबद्धता होती है। घोषणा की पहली पंक्ति 'अंतर्निहित गरिमा की मान्यता' अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखती है और मानव अधिकारों तथा सम्मान और व्यक्ति के मूल्य में विश्वास करने की पुष्टि करती है। समाज कार्य व्यवसायों के लिए यह घोषणा महत्वपूर्ण दस्तावेजों में से एक है क्योंकि हम प्रतिदिन की क्रिया में मानव अधिकारों और सामाजिक न्याय को प्राप्त करनेके लिए प्रयास करते हैं। सम्मान/गरिमा एक महत्वपूर्ण समाज कार्य मूल्य और नीति–शास्त्रीय है। समाज कार्य के व्यवसायिक संघों जैसे समाज कार्यकर्त्ताओं की राष्ट्रीय संस्था (एन.ए.एस.डब्ल्यू.) समाज कार्यकर्त्ता की ब्रिटीश संस्था (बी.ए.एस.डब्ल्यू.) और समाज कार्यकर्त्ताओं की आस्ट्रेलियन संस्था (ए.ए.एस.डब्ल्यू.) द्वारा सभी नीतिशास्त्र मार्गदर्शक सीमाएं, 'व्यक्ति के मूल्य और गरिमा' की सार्वभौमिक मूल्य की तरह व्याख्या करें कि विश्वभर के समाज कार्यकर्त्ताओं को इसके लिए प्रयास करना चाहिए।

4.2 गरिमा की अवधारणा

गरिमा, आमतौर पर आत्म–मूल्य या आंतरिक मूल्य के रूप में परिभाषित की जाती है, जिसकी विशेष रूप से सम्मान की योग्यता के रूप में विशेषता बताई जाती है। किसी व्यक्ति की गरिमा को पहचानने के लिए समाज में उसकी स्थिति या भूमिका स्वतंत्र मनुष्य के रूप में उसके मूल्य को पहचानना है। इसलिए, गरिमा/प्रतिष्ठा अधिकार नहीं है।

मानवता का मूलभूत पहलू आंतरिक मूल्य और सम्मान के साथ व्यवहार करने का अधिकार होना चाहिए। विभिन्न संदर्भों में –'मनुष्य की गरिमा' वाक्यांश स्पष्ट रूप से सामान्य स्थान रखता है। इसका उपयोग अक्सर मलिनावास संस्कृति की अमानवीय परिस्थितियों के विरुद्ध याचिकाओं के, हस्तचालित सफाई की अमानवीय क्रिया के विरुद्ध याचिका में किया जाता है।

4.3 समाज कार्य मूल्य के रूप में व्यक्ति का मूल्य और गरिमा

मानवीय अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा (1948) विश्वभर के समाज कार्यकर्त्ताओं के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत है। जिसके द्वारा प्रस्तावित मूल्य पर वे अपने दैनिक क्रिया–कलाप करते हैं। मानव गरिमा मानव अधिकारों पर आधारित होती है और मानव अधिकार मानव प्रतिष्ठा की नींव का निर्माण करते हैं, जबकि दोनों विश्व भर के समाज कार्यकर्त्ताओं के लिए अभ्यतंर मूल्यों और नियमों को स्थापित करते हैं।

एन.ए.एस.डब्ल्यू. की नीति संहिता सेवा, सामाजिक न्याय, मानवीय संबंधों की महता, अखंडता और क्षमता के साथ अभ्यतंर समाज कार्य मूल्यों में से एक 'मानव का मूल्य और गरिमा' का उललेख करती है। एन.ए.एस.डब्ल्यू. ने (1999) में इस सार्वभौमिक मूल्य से एक महत्वपूर्ण नैतिक सिद्धांत प्राप्त किया है और यह स्पष्ट करती हैं कि 'समाज कार्यकर्त्ता मानव के मूल्य और निहित गरिमा का आदर करते हैं'। आगे यह एन.ए.एस. डब्ल्यू. की नीति संहिता द्वारा विस्तारित किया गया है।

'समाज कार्यकर्त्ता पर चिंतक और आदरपूर्ण परंपरा, व्यक्तिगत भेदभावों के प्रति सतर्क और सांस्कृतिक और मानवजातीय विभिन्नता में प्रत्येक व्यक्ति के साथ व्यवहार करते हैं। सामाजिक रूप से उत्तरदायी स्वाधीनता के लिए आश्रितों को समाज कार्यकर्त्ता प्रोत्साहित करते हैं। समाज कार्यकर्त्ता आश्रितों की क्षमता और उनकी अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए और बदलने के लिए सुअवसरों को बढ़ाने का प्रयत्न करते हैं'। समाज कार्यकर्त्ता आश्रितों के लिए और विस्तृत समाज के लिए अपने दोहरे उत्तरदायित्व से अवगत हैं। वे सामाजिक रूप से उत्तरदायी प्रकारों के अनुकूल मूल्यों के साथ, नीतिपरक सिद्धांतों और व्यवसाय के नीतिपरक मानदंडों में समाज की अभिरुचियों और आश्रितों की अभिरुचियों के बीच विरोध को दूर करने का प्रयास करते हैं।

समाज कार्य मूल्य और नीतिशास्त्र विश्वभर में समाज कार्य प्रक्रिया के लिए नीव प्रदान करते हैं। लगभग सभी देशों में जहां समाज कार्य एक मान्यता प्राप्त व्यवसाय है वहां व्यवसाय की नीति संहिता है। यद्यपि विभिन्न देशों की नीति संहिता में बहुत सी समानताएं हैं तो भी सांस्कृतिक और सामाजिक भेदभाव ने उनकी विषय वस्तु और केन्द्र को प्रभावित किया है। जिस विस्तार से नीति–संहिता ने समाज कार्य प्रक्रिया को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है उस पर वाद–विवाद किया गया है। जबकि नीति संहिता सामाजिक और राष्ट्रीय भेदभावों को दर्शाती है, मानव अधिकार दृष्टिकोण से समाज कार्य प्रक्रिया के लिए सार्वभौमिक और मौलिक क्या है वह प्रचलित/प्रबल होना है। यहां तक कि भारत में, 1997 वर्ष में प्रकाशित समाज कार्य व्यवसायों के लिए नीति विषयों की स्वदेशी घोषणा में समाज कार्य मूल्यों और नीति विषय को महत्वपूर्ण गरिमा के रूप में उल्लेखित किया है। घोषणा यह भी बताती है कि 'व्यवसायी समाज कार्यकर्त्ता के रूप में मैं अपने आप में, व्यवसाय में और समाज में निम्नलिखित मूल्यों को बढ़ावा देने की प्रतिज्ञा करता हूँ। मैं प्रतिज्ञा करता हैं कि लोगों को उनके गुणों और उपलब्धियों के बावजूद निरंतर विकास की क्षमता के निहित मूल्य और गरिमा के रूप में मानूंगा।

नैतिकता और इन नीति संहिता के दिशानिर्देशों का सार किसी के पारस्परिक मूल्य और योग्यता को मान्यता देने में है और ऐसा करने से वे गरिमा का अनुभव कर रहे हैं। इस अनुभव को दया या कल्याण के रूप में नहीं समझना चाहिए बल्कि हमारी समान मानवता की गहरी सराहना की ओर झुकाव रखने वाले व्यक्तियों के अधिकार के रूप में समझना चाहिए।

इन नैतिक नियमों और दिशानिर्देशों में अन्य आश्चर्यजनक समानता यह है कि ये सभी विशेष रूप से आश्रितों या व्यक्ति के साथ जरुरत में व्यवहार करने के लिए संबंधों में मुख्य रूप से समाज कार्य में मूल्य की तरह गरिमा पर केन्द्रित होते हैं। परंतु हमें अन्य विभिन्न स्तरों पर मूल्य की तरह गरिमा की इस सीमित समझ/सोच से बाहर निकलने की आवश्यकता है। मूल्य की तरह गरिमा का व्यवहार चार स्तरों पर हो सकता है जो निम्नलिखित हैः

1. **आश्रितों/न्याय चाहने वाले/जरुरतमंद लोगों के साथ प्रत्यक्ष व्यवहार** : 'यह गरिमा व्यवहार के सबसे लोकप्रिय अर्थ पर जोर देता है। इसका अर्थ यह है कि समाज कार्यकर्त्ताओं को निहित योग्यता में विशेषता रखने की और सभी व्यक्तियों, समूहों और समुदायों का आदर करने की आवश्यकता है। उदाहरणता समाज कार्यकर्त्ताओं को जाति/धर्म/अंतर क्षमताओं/यौन अभिविन्यास/ क्षेत्र/ जातीयता या अन्य किसी अंतर के भेदभाव नहीं करना चाहिए।

2. **संगठनात्मक कर्मचारी और सहकर्मियों के साथ गरिमा पूर्ण व्यवहार** : समाज कार्यकर्त्ताओं का उत्तरदायित्व/जिम्मेदारी जरुरत में व्यक्ति के लिए वर्जित न हो। इसे सहयोगियों और कर्मचारियों के साथ कार्यों के लिए भी विस्तृत करते हैं। उदाहरणतः सहयोगियों में लिंग के आधार पर भेदभाव किए बिना गरिमा और सम्मान से व्यवहार करना चाहिए।

3. **राज्य और सरंचनात्मक संस्थाओं द्वारा गरिमा पूर्ण व्यवहार :** सशस्त्र बल अधिनियम (ए.एफ.एस.पी.ए.)जैसे कानूनों के तहत मानवाधिकारों के उल्लंघन के माध्यम से अधिकारियों के उल्लंघन के लिए राज्य कार्य प्रणाली का उपयोग तेजी से हो रहा है। ऐसी स्थिति में, समाज कार्यकर्त्ताओं का उत्तरदायित्व कार्यक्रम और नीति निर्माण के प्रति कार्य करने के लिए गरिमा से व्यवहार करना अपरिहार्य होगा जो सभी लोगों के सम्मान और योग्यता को सुनिश्चित करेंगे। उदाहरणतः राज्य द्वारा विकलांग व्यक्तियों के लिए आरक्षण नीति और योजनाएं और उनका प्रवर्तन तंत्र गरिमा से व्यवहार करने के लिए महत्वपूर्ण है। दूसरा उदाहरण यह है कि स्थानान्तरित लोगों को जब भूमि प्राप्त करनी हो तो उन्हें राज्य कार्यप्रणाली द्वारा उचित पुर्नवास देकर गरिमा को बढ़ाया जा सकता है क्योंकि पुर्नवास के मामले धर्मार्थ/परोपकार का मामला नहीं है बल्कि लोगों का अधिकार है।

4. **विस्तारपूर्वक समाज द्वारा गरिमा पूर्ण व्यवहार :** समाज कार्य कार्यावली में गरिमा को प्रोत्साहित करना भी सम्मिलित होना चाहिए जैसे समाज में जानकारी को विस्तारपूर्वक फैला कर जीवन जीने के ढ़ंग को प्रोत्साहित करते हैं। गरिमा को उसी तरह प्रोत्साहित करना चाहिए। भारतीय समाज जाति, धर्म, लिंग पर आधारित भेदभाव जैसी असमानताओं द्वारा चिन्हित है। ये सभी असमानताएं सामाजिक मानदंडों को प्रतिबिम्बित करती हैं जो मनुष्य में निहित गरिमा, योग्यता और आदर को अस्वीकार करते हें। समाज में प्रचलित इन संरचनात्मक असमानताओं का सामना करना आवश्यक है और केवल इनका सामना करके ही चुनौती देकर ही समाज में विस्तारपूर्वक सभी लोगों द्वारा गरिमा के मूल्य को अभिव्यकत कर सकते हैं।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि गरिमा और योग्यता सभी संस्थाओं और समाज कार्यकर्त्ताओं के ज्ञान, व्यवहार, विचार और कार्य के लिए उनका हिस्सा बनना आवश्यक है।

4.4 गरिमा और समाज कार्य प्रक्रियाएं

बहुत से समाज कार्य दृष्टिकोण जैसे योग्यता दृष्टिकोण, प्रतिदमनात्मक समाज कार्य, विरोधी पक्षपाती समाज कार्य, नारीवादी समाज कार्य और मूलभूत समाज कार्य गरिमा के मूल्य पर आधारित कार्य को सुनिश्चित करने के हेतु कार्य हो रहे हैं। इन दृष्टिकोणों में से एक दृष्टिकोण समाज कार्य प्रक्रिया पर आधारित योग्यता दृष्टिकोण पर विचार–विमर्श विस्तृत रूप से नीचे किया गया है। योग्यताओं पर आधारित दृष्टिकोण व्यवसायी समाज कार्यकर्त्ताओं की सोच में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाया है जैसे कि यह व्यक्तियों, परिवारों और समुदायों का विभिन्न तरीके से अध्ययन करने की मांग करता है ताकि आश्रितों में उनकी प्राकृतिक क्षमताओं और योग्यताओं का विकास करने का प्रयत्न कर सकें। इसे एक सहायक प्रक्रिया की आवश्यकता है जो पता लगा सकें, खोज कर सकें और योग्यताओं का बेहतर उपयोग कर सकें तथा उनके लक्ष्यों को प्राप्त करने में उनकी सहायता करने में समुदायों और व्यक्तियों के लिए बेहतर साधन बन सकें। योग्यताओं पर आधारित प्रस्ताव इस मान्यता पर कार्य करता है कि लोगों के पास अपने सशक्तिकरण के लिए योग्यताएं तथा साधन होते हैं (पुला, 2012)। मानवीय तत्व ज्ञान में इस प्रक्रिया के मूल तत्व होते हैं जो व्यक्ति की अन्तःशक्ति, उनमें निहित योग्यता पर जोर देते हैं। परिवर्तन लाने के योग्य होने के लिए लोगों को मौलिक विचार की आवश्यकता होती है जो समाज कार्य प्रक्रिया का केन्द्र बिन्दु है। मानसिक स्वास्थ्य अभ्यास धारणाओं में योग्यताओं पर आधारित प्रणाली का वास्तविक विकास होता है और अब इस समाज कार्य अभ्यास विषय–वस्तु के विशाल क्रम के लिए अपनाया गया है। आमतौर पर प्रमस्तिष्कघात, मानसिक रोगी को दया की दृष्टि से देखा जाता है और अपना कार्य स्वयं करने के अयोग्य माना जाता हैं। शक्ति आधारित दृष्टिकोण के आने से नज़ाकत और समस्याओं के प्रति दृष्टिकोण में उदाहरण परिवर्तन से अयोग्यताओं से लेकर योग्यताओं तक लाने के दृष्टिकोण में परिवर्तन आते हैं।

सेलीबे (1992) के अनुसार, शक्ति दृष्टिकोण में चार उद्देश्य माने जाते हैं : (1) सभी आश्रित और परिस्थितियां सामर्थ्य सम्पन्न होती हैं जिससे जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए उन्हें सुव्यवस्थित किया जा सकता है। (2) स्वयं परिभाषित आश्रित सामर्थ्य पर अनुकूल बल से प्रेरणा मन में आनी चाहिए। (3) यह केवल परिवार और सहायक व्यक्ति (बोलने और सुनने वाले के संबंध) के बीच अन्वेषण द्वारा लिखी गई परिभाषा पर ज़ोर देकर आश्रित की शक्तियों की छानबीन कर के पता लगाया जा सकता है। (4) परिस्थितियों के अधिकतम प्रतिकूल होने पर भी आश्रित की शक्तियों की विशिष्टता द्वारा 'पीड़ित को उत्तरदायी ठहराना' का विरोध किया जाता है जो सभी परिस्थितियों में पांचवे उद्देश्य का नेतृत्व करती है, इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि परिस्थिति कितनी प्रतिकूल है, जिसमें उपयोगी साधन भी होते है।

शक्ति आधारित सिद्धांत की प्रणाली के सिद्धांत प्रस्तावों पर आधारित समस्या से भिन्न होते हैं। शक्तियों के दृष्टिकोण में कुछ सिद्धांत निम्नलिखित हैः

1. **प्रत्येक व्यक्ति, समूह, परिवार और समुदाय के पास सामर्थ्य होती हैः** शक्ति आधारित प्रणाली इस मान्यता पर आधारित है कि सहायता हेतु आने वाले मुवक्किल पहले ही से आश्रितों की विभिन्न क्षमताओं तथा संसाधन युक्त होते हैं

जिन्हें उनकी स्थिति सुधारने तथा समस्या समाधान के लिए कार्यकर्त्ता द्वारा बेहतर बनाया जा सकता है।

2. **मानसिक आघात और दुर्व्यव्हार, बीमारी और संघर्ष हानिकारक हो सकते हैं परन्तु वे चुनौतियों और अवसरों के साधन भी हो सकते हैं:** यह सिद्धांत कार्यकर्त्ता को प्रतिकूल परिस्थितियों में शक्ति का पता लगाने के योग्य बनाती है। सेलीबे स्वीकार करते हैं कि बहुत से मानसिक आघात होते हैं जो किसी बालक या प्रौढ़ की सफलतापूर्वक क्षमताओं को पराजित कर सकते है जिसमें इस तरह के व्यक्तियों को वापिस सामान्य होने के लिए सहायता के लिए असाधारण उपायों की आवश्यकता होती है।

3. **मान लो कि आप नहीं जानते कि वृद्धि और परिवर्तन के लिए क्षमताओं की उच्च सीमाएं क्या हैं और व्यक्ति, समूह तथा समुदाय की आकांक्षाओं को गंभीर रूप से लेते हैं:** यह सिद्धांत कार्यकर्त्ता को सहायता करने में सम्मिलित प्रक्रिया में निर्धारित पैरामीटर से परे जाने का आग्रह करता है। हम आश्रित की क्षमताओं की सीमाओं को नहीं जानते हैं और इसका पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता।

4. **हम आश्रितों के साथ सहयोग करके सर्वोत्तम सेवा प्रदान करते हैं:** सेलीबे चेतावनी देते हैं हैं कि जब हम 'आश्रित के ज्ञान और आधिकारिक विचारों को कमजोर करते हैं, तो हम गंभीर गलती करते हैं'। वह सुझाव देता है कि अंततः एक सहयोग अवस्थिति हमें सहायता करने के अधिक राजनीतिक तत्वों के लिए कम संवेदनशील बना सकती हैः पितृत्व, पीड़ित का दोष या पीड़ित निर्माण, और मुवक्किल के विचारों की प्राप्ति।

5. **प्रत्येक वातावरण संसाधनों से परिपूर्ण होता है:** यह सिद्धांत कार्यकर्त्ता द्वारा परिस्थितियों वातावरण में छिपी शक्तियों का अवलोकन पर बल देता है, जैसे – परिवार, सुमदाय समूह, संस्थाएं इत्यादि। सेलीबे बताते हैं कि ऐसे संसाधन प्रायः सामाजिक तथा मानव सेवा एजेंसियों के सामान्य कार्य–क्षेत्रों के बाहर होते हैं, जो अवांछित तथा अप्रयुक्त है।

6. **देख–रेख, देखभाल और संदर्भ :** यहां सेलीबे परिवार में देखभाल करने की बात करता है, देखभाल करने वालों के द्वारा देखभाल का विस्तार होता है और प्रत्येक व्यक्ति दूसरों से देखभाल की अपेक्षा करता है। समाज कार्य प्रक्रिया के एक दार्शनिक सिद्धांत के रूप में शक्ति का दृष्टिकोण समाज कार्य मूल्य से उत्पन्न होता हैः आत्मनिर्णय, सशक्तिकरण, निहित योग्यता और गरिमा, कठोर परिश्रम, सांस्कृतिक अतिसंवेदनशीलता, क्षमता, अखंडता और व्यवसाय के प्रति निष्ठा। प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा और मूल्यों में विश्वास और प्रभावशाली परिवर्तन की संभावना के रूप में व्यक्तिगत और सामूहिक शक्ति में अनुवर्ती विश्वास समस्या केंद्रित दृष्टिकोण में छिपा हुआ था। शक्ति का दृष्टिकोण समाज कार्यकर्त्ताओं को समाज कार्यकर्त्ताओं को समाज कार्य मूल्यों को बनाए रखने के लिए आसान बनाता है, भले ही जब बहुत ही गंभीर स्थिति में मुवक्किलों के साथ व्यवहार करते हैं या समस्या का सामना करते है। यह दृष्टिकोण मुवक्किलों को योग्य बनाता है जिनमें प्रायः आत्म विश्वास की कमी होती है और सेवाओं की मांग करते समय असफलताओं को महसूस करते हैं, उनके आत्म सम्मान में सुधार लाते हैं और इन्हें स्वयं में आत्मविश्वास का अनुभव कराते हैं।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणी : क) उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ख) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) अस्मिता की अवधारणा को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) शक्ति आधारित दृष्टिकोण के सिद्धांतों को सूचीबद्ध कीजिए।

.....

.....

.....

.....

4.5 मानवीय गरिमा को प्राप्त करने में चुनौतियां

समाज कार्यकर्त्ताओं के लिए उनकी दैनिक गतिविधियों में कारणों सहित इस क्षेत्र में मूल्य को व्यवहार में लाने के प्रति कार्य करने के लिए नीति संहिता या मानवीय अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा में गरिमा और योग्यता शब्द का सुस्पष्ट उपयोग आवश्यक है। परंतु यह आसान प्रयास नहीं है और बहुत सी चुनौतियों से गुजरना होता है। भारतीय संदर्भ में इन चुनौतियों में से कुछ पर निम्नलिखित विचार विमर्श किया गया है।

1. **गरीबी** : गरीबी और इसकी बहन बुराई/विपत्ति जैसे –बेराजगारी, अनपढ़ गरीबों के लिए समानता और सामाजिक न्याय के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए चुनौतियों को बनाए रखती हैं मनुष्यों के लिए गौरवपूर्ण जीवन को सुनिश्चित करने के लिए सुविधाएं जैसे–मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य महत्वपूर्ण मानव अधिकारों से संबंधित हैं परंतु गरीबों के लिए यह एक सपने की तरह है। विश्वभर में मानव अधिकार मामलों को देखने के लिए संयुक्त राष्ट्र ने आठ शतयुग विकास लक्ष्य (एम.ओ.जी.) तैयार किए हैं और गरीबी तथा भूख को समाप्त करना इसका प्रथम और प्रमुख लक्ष्य हैं।

2. **विकास के लिए अंधा दृष्टिकोण** : विकास के नाम पर परियोजनाओं जैसे बांध, नदी योजक परियोजनाओं में बड़ी संख्या में लोगों को यह कहकर विस्थापित कर दिया जाता है कि विकास के लिए अंधे दृष्टिकोण का अनुसरण हो रहा है उदाहरणतः विकास के लिए इस प्रकार का दृष्टिकोण कॉमन वेल्थ गेम्स 2010 के दौरान अवलोकित किया गया। सरकार नगर के केन्द्र से गंदी बस्ती में रहने वाले बहुत से लोगों को हटा देती है; उनको परिधीय क्षेत्रों जैसे बवाना से बलपूर्वक हटा दिया जाता है जबकि नगर के केन्द्र में अमीर लोगों को रखा जाता है और इस विकास से लाभ है, गरीबों को देश के संसाधनों से दूर रखा जाता है और नौकरियों पर पहुंचने के लिए, स्वास्थ्य सुविधाएं और संसाधनों के प्रवेश के लिए लम्बी दूरी की यात्रा तय करनी पड़ती है। समाज कार्यकर्त्ताओं को विकास के इस अवलोकन को चुनौती देने की आवश्यकता है और एक गरीब केन्द्रित विकास के साथ गरीबों के लाभ के लिए राज्य के साथ संपर्क की आवश्यकता है।

3. **जाति :** भारतीय समाज की पुरानी वर्ण व्यवस्था पर आधारित चार वर्णों के आधार पर पदानुक्रमित जाति व्यवस्था विद्यमान है। इस जाति पिरामिड़ में शूद्र सबसे नीचे के स्तर पर होते हैं। जाति व्यवस्था शूद्रों के विरुद्ध अमानवीय व्यवहारों द्वारा चिन्हित हैं। अस्पृश्यता का व्यवहार करना सबसे अमानवीय व्यवहार है। इस व्यवहार को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 16 के अधीन समाप्त कर दिया गया, परंतु यह व्यवहार अभी भी कुछ रूपों या अन्य रूपों में अभी भी निरंतर हो रहा है। जाति व्यवस्था और इससे संबंधित व्यवहार जैसे अस्पृश्यता, सजातीय विवाह मनुष्य की गरिमा और मूल्य के लिए गंभीर चुनौतियां हैं। भारतीय समाज में ज्योतिबा फुले, गोरा, पेरियर, सावित्री बाई फुले, महात्मा गांधी जैसे समाज सुधारकों ने इस अन्याय को सुधारने के लिए अपने व्यवहार और कार्य से इस प्रकार की चुनौतियों का सामना किया।

4. **पितृसत्ता :** भारत के संविधान में विभिन्न अनुच्छेदों जैसे अनुच्छेद 15 के अर्न्तगत सभी व्यक्तियों को समान अधिकार दिए गए हैं। संविधान का अनुच्छेद 15 स्पष्ट करता है कि 'राज्य को किसी भी नागरिक के साथ केवल धर्म, वर्ग, जाति, लिंग जन्म के स्थान या इनमें से किसी के आधार पर भेदभाव नहीं करना चाहिए। विविध विधान, योजनाएं, और कार्यक्रम लिंग समानता को प्राप्त करने के लिए बनाए गए हैं। इन सभी सुरक्षा उपायों के साथ–साथ मादा भ्रूण हत्या जैसी प्रचुर मात्रा में अनौपचारिक प्रथाएं जारी रहती हैं। भारतीय परिवार में बेटे की वरीयता/प्रधानता असमान्य नहीं है और कन्या शिशु के विरुद्ध भेदभाव सामान्य व्यवहार है। इन समस्याओं की मूल जड़ पितृसत्ता है। पितृसत्ता सामाजिक व्यवस्था है या सामाजिक आदेश जिसमें आदमी के हाथ सत्ता होती है और महिलाओं को विस्तृत रूप से इससे अपवर्जित कर दिया जाता है। लिंग भेदभाव/असमानता के ये मामले व्यक्ति की गरिमा और मूल्य का उल्लघंन है क्योंकि यह सामाजिक व्यवहारों का निर्देशात्मक है कि महिलाओं को पुरुषों से निम्न माना जाता है।

5. **सांप्रदायिकता :** संविधान की प्रस्तावना भारत को धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के रूप में कायम रखती है जो विविधता में एकता के आदर्शों के साथ पहचानी जाती है। इस तरह के दावों के बावजूद, भारत में भयानक अपराध हुए हैं–– जैसे सिक्खों के विरुद्ध विद्रोह 1984, गुजरात नरसंहार 2002, मुजफरनगर की हिंसा 2013 और हाल ही में ऐसी असहिष्णुता के रूप में भयावह अपराध देखा गया जब एक इंसान को मार दिया गया क्योंकि ऐसा समझा जाता था कि वह गौमांस खाता है। भारत एक ऐसा देश हे जिसमें विभिन्न धर्म के लोग रहते हैं और जातीय पृष्ठभूमि वाले लोग एक साथ रहते हैं फिर भी धार्मिक असहिष्णुता और सांप्रदायिकता समाज कार्यकर्त्ताओं के सामने इन भयंकर अपराधों से पीड़ित व्यक्तियों के लिए मानव अधिकारों और सामाजिक न्याय को प्राप्त करने के लिए चुनौतियां बनी हुई हैं। जैसे उपर्युक्त सम्मिलित किए गए उदाहरण, विभिन्न सामाजिक प्रक्रियाएं (सांस्कृतिक लोक कल्याण, संस्थानात्मक क्रियाएं) मानव अधिकारों को प्राप्त करने के लिए चुनौतियां प्रस्तुत करती हैं। जनसांख्यिकीय समूह जैसे बच्चे, बड़े, विकलांग व्यक्ति सभी कमजोर समूह हैं जिनकी गरिमा और मूल्य प्रायः प्रश्न खड़े करती हैं। समाज कार्यकर्त्ताओं के लिए यह महत्वपूर्ण है कि उल्लंघन के सही मुद्दों को देखते हुए सामाजिक न्याय और समानता के नियमों में विश्वास करना है। इन सभी जनसांख्यिकीय समूहों की सक्षम, योग्य और शक्ति के साथ रूप में विचार किया जाना चाहिए। किसी व्यक्ति की कमजोरी/दोषपूर्णता के कारण उसे अपमानजनक जीवन जीने के लिए मजबूर नहीं करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति के लिए सम्मानजनक जीवन को सुनिश्चित करने के लिए उपायों को लागू किया जाना चाहिए क्योंकि यह अधिकार की बात है न कि दान की।

4.6 मानव गरिमा की चुनौतियों से निपटने में समाज कार्यकर्त्ताओं की भूमिका

समाज कार्य प्रक्रिया समाज में विद्यमान बाधाओं, असमानताओं और अन्यायों को देखती है। यह आपातकालीन और संकट के समय प्रतिक्रिया को दर्शाती है। इसके अतिरिक्त प्रतिदिन की व्यैक्तिक और सामाजिक समस्याओं को भी हल करती है। समाज कार्य व्यक्तियों और उनके परिवेशों पर अपने समग्र ध्यान के अनुरुप विभिन्न प्रकार के कौशल, तकनीकों और गतिविधियों का उपयोग करता है। समाज कार्य हस्तक्षेप मुख्य रूप से व्यक्ति केन्द्रित मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया से लेकर सामाजिक नीति, योजना और विकास में शामिल होने के लिए होता है। इसमें परामर्श, नैदानिक, समाज कार्य, समूह कार्य, सामाजिक और पारिवारिक चिकित्सा शामिल है, साथ ही लोगों को समुदाय में सेवाएं और संसाधन प्राप्त करने में सहायता करने के प्रयास शामिल हैं। हस्तक्षेपों में एजेंसी प्रशासन, समुदाय संगठन को भी शामिल किया गया है और राजनीतिक कार्यों में संलग्न किया गया है। समाज कार्य की प्रक्रिया में अधिकतर समाज कार्यकर्त्ताओं को लोगों के सशक्तिकरण, सुरक्षा, सहयोग में अपनी भूमिका को निभाते हुए प्रतियोगी अधिकारों और परस्पर विरोधी अभिरुचियों की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार की परिस्थितियों में समाज कार्यकर्त्ताओं को सकारात्मक नीतियों, प्रक्रियाओं और व्यवहारों का विकास करने के लिए योगदान और प्रोत्साहन देना चाहिए जोकि दमनकारी और शक्तिशाली हैं उन्हें लोगों के विश्वासों, मूल्यों, संस्कृति, लक्ष्यों, आवश्यकताओं, प्रमुखताओं, संबंधों और पृतनिर्धारणों का आदर करना चाहिए। समाज कार्यकर्त्ताओं को अपने प्रतिकूल प्रभावों को पहचान कर यह सुनिश्चत करना चाहिए कि वे किसी व्यक्ति या समूह के विरुद्ध भेदभाव नहीं करते उन्हें सुनिश्चित करना चाहिए कि सेवाएं सांस्कृतिक रूप से उचित ढ़ंग से प्रदान और प्रस्तुत की गई हैं। जो नकारात्मक भेदभाव या पक्षपात को व्यक्त/प्रदर्शित करते हैं उन सहयोगियों के किसी भी कार्य को प्रस्तुत करने का प्रयत्न करना चाहिए और चुनौती का सामना करना चाहिए।

4.7 मानव गरिमा की चुनौतियों से निपटने हेतु समाज कार्यकर्त्ताओं की तैयारी

समाज कार्य प्रशिक्षण ने मानव गरिमा की चुनौतियों से निपटने के लिए समाज कार्यकर्त्ताओं की तैयारी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। समाज कार्यकर्त्ताओं की तैयारी के लिए कुछ मुख्य तत्व निम्नलिखित हैं:

1. **ज्ञान** : प्रतिदिन की विषय वस्तु में, हम अपने आप को, दूसरों को और अपने आस पास के संसार को समझने के लिए ज्ञान का उपयोग करते हैं और जानने का प्रयत्न करते हैं। दूसरों की समझ और अपने आप की समझ प्रभावपूर्ण व्यवहार कार्य के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है। समाज कार्यकर्त्ता सैद्धान्तिक, तथ्यात्मक और व्यवहारिक ज्ञान के लिए अवश्य ही प्रशिक्षित होना चाहिए। (ट्रेवीथिक, 2008) ताकि वे अपने आपको और अपने इर्द–गिर्द के संसार को समझ सकें। उदाहरण के लिए जातिवाद और उससे संबंधित बुराइयों को प्रस्तुत करने के लिए जाति और उसके तत्वों के बारे में ज्ञान होना चाहिए। समाज कार्य ज्ञान में उन सिद्धांतों को सम्मिलित करना चाहिए जो हमारी समझ को लोगों के, परिस्थितियों और घटनाओं के प्रति स्पष्ट करें। समुचित ज्ञान के साथ–साथ समाज कार्यकर्त्ताओं के लिए अन्य महत्वपूर्ण घटक प्रासंगिक ज्ञान का उपयोग करना है दार्शनिक स्थिति में प्रासंगिक ज्ञान एक विश्वास है जो गरिमा और योग्यता में विश्वास की पुनः पुष्टि करता है। यदि समाज कार्यकर्त्ता दार्शनिक अवस्थिति को और गरिमा के मूल्य को बनाए रखने

में असफल हो जाता है, वह समाज में जातिवाद जैसे असमान और अनुचित मानदंडों को पुनः उत्पन्न करते हैं तो इस प्रकार सभी समाज कार्य प्रक्रिया के लिए व्यक्ति की गरिमा और योग्यता के मूल्य में दार्शनिक अवस्थिति का आधार होना महत्वपूर्ण है।

2. **कौशल/निपुणता** : समाज कार्य प्रक्रिया/अभ्यास आसान कार्य नहीं है। जरूरत में लोगों की सहायता करने के लिए प्रक्रिया/अभ्यास को संधिवार्ता, संप्रेषण, नेटवर्किंग, दृढ़विश्वास आदि कौशलों की आवश्यकता होती है। समाज कार्य प्रक्रिया मामलों को प्रस्तुत करने के लिए सुयोग्य सरंचना के साथ अति सावधानीपूर्वक नियोजित ढ़ंग से अपने लक्ष्यों को अच्छी तरह से प्राप्त कर सकते हैं। उदाहरणार्थ : सार्वजनिक परिवहन तक पहुंच हेतु दिव्यांगों के अधिकारों की वकालत करते समय विभिन्न पथधारियों को उन व्यक्तियों के मानव अधिकार तथा गरिमा का उल्लघंन कराने हेतु एक नियोजित अभ्यास में शामिल करने की आवश्यकता है ताकि उन्हें अनुभव कराया जा सके कि दिव्यांग व्यक्तियों की गतिशीलता को अवरूद्ध करने से जीवन के अन्य क्षेत्रों में होने वाली उनकी प्रगति/वृद्धि बाधित होती है

3. **मूल्य/नीति विषयक :** समाज कार्यकर्त्ता जिन मूल्यों का समर्थन करते हैं उन्हें समझने के लिए अवश्य ही प्रशिक्षित होना चाहिए और नैतिक सिद्धांत जो उनकी प्रक्रिया का आवश्यक भाग होने चाहिए। समाज कार्य के आधारभूत मूल्य सार्वभौमिक रहने चाहिए जैसे कि सभी लोगों में अन्तर्निहित गरिमा और योग्यता के लिए आद। इस समाज कार्य को सुरक्षित रखने के लिए व्यैक्तिक आत्म–निर्धारण समाज में सहभागिता के लिए अधिकारों को प्रोत्साहित करना चाहिए और सांस्कृतिक अतिसंवेदनशील अभ्यास कार्य या प्रति विरोधी में अंतर की स्वीकृति को बढ़ावा देना चाहिए। मानवीय गरिमा का निकटतम संबंध मानव अधिकारों के विचार से है। गरिमा की धारणा मानवीय अधिकारों पर सैद्धांतिक अन्वेषणों से अनिवार्य होनी चाहिए। मूल्यों और सिद्धांतों में विश्वास वास्तविक होना चाहिए। सम्मानित व्यवहार दूसरों में इस प्रकार के 'अधिकारों' के लिए सम्मान सम्मिलित करता है और परिस्थितियों के अनुसार भले ही दूसरों द्वारा आदर दिए जाने पर व्यक्ति अपने 'अधिकारों' के लिए दावा करता है, वह दावा अपने आप सक्रिय दृढ़कथन, अवहेलनापूर्वक/अवज्ञापूर्ण मौन रूप से सुस्पष्ट हो सकता है या परोपकारी प्रबोधन से भी या प्रयत्न से अपराधी को समझाया जा सकता है। गरिमा और 'मानवीय अधिकारों' में विश्वास, पारस्परिक आदर पर आधारित मानवीय संबंधों के नीति विषयक आदर्श की ओर अभिमुख होता है और वास्तव में व्यक्तियों की विभिन्न दयापूर्ण स्वीकृति के साथ आभायुक्त है।

4. **मनोवृत्तियां/व्यवहार** : किसी भी समाज कार्य प्रक्रिया के लिए यह महत्वपूर्ण घटक है। मनुष्य की गरिमा और योग्यता के प्रति आचार–व्यवहार संपूर्ण रूप से मनोवृति का मामला है तब सहज ही वह आवश्यकता में व्यक्ति के अन्तर्निहित शक्तियों और योग्यता को स्वीकार करेगा। यदि किसी व्यक्ति का पक्षपाती और रुढ़िवादी द्वारा मार्गदर्शन किया जाए जैसे विकलांग व्यक्ति को कार्य नहीं करना चाहिए क्योंकि वे गतिशीलता में अवरोध करते हैं तब यह उस विकलांग व्यक्ति की शक्तियों का खंडन है जैसे सोचने की शक्ति, मानसिक कार्य करने की शक्ति आदि। इस प्रकार व्यवहार/मनोवृत्तियां समाज कार्य प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण घटक है जो समाज कार्यकर्त्ताओं को किसी भी व्यक्ति के मूल्य और सिद्धांत, गरिमा और योग्यता को सच्चा विश्वासी बनाता है।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणी : क) उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ख) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) मानव अस्मिता की चुनौतियों को सूचीबद्ध कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) मानव गरिमा की चुनौतियों से निपटने में समाज कार्य कर्त्ताओं की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4.8 सारांश

मानव अधिकार और सामाजिक न्याय सम्मानित/गौरवपूर्ण जीवन के आधारभूत मौलिक सिद्धांत हैं। सभी मनुष्यों को सम्मानित जीवन का अधिकार है। समाज कार्य में शक्ति दृष्टिकोण और अन्य दृष्टिकोण जैसे प्रति विरोधी और पक्षपातरोधी समाज कार्य व्यक्ति की शक्तियों और क्षमताओं पर ध्यान देते हैं ताकि वह उनकी समस्याओं और चुनौतियों के साथ व्यवहार करें। समाज कार्य विकसित होने वाला व्यवसाय है और समाज की मांग और जनता की आवश्यकताओं के लिए इसे अपनाया जाता है। समाज कार्य प्रक्रिया में व्यक्ति की गरिमा और योग्यता की कमियों से लेकर योग्यताओं पर ध्यान देकर सुनिश्चित किया जा सकता है। शक्ति दृष्टिकोण उनकी कमियों के स्थान पर मुवक्किल की व्यैक्तिक और सामुदायिक संपत्तियों को महत्व देता है और भविष्य के लिए आशा, वचन और संभावनाएं प्रदान करता है। गरिमा/गौरव को प्राप्त करने के लिए विभिन्न चुनौतियां हैं जैसे कि सांप्रदायिकता, जातिवाद, पितृसत्ता। इन्हें केवल समाज कार्यकर्त्ता आवश्यक ज्ञान, कौशलताओं, मूल्य और व्यवहार द्वारा प्रस्तुत/संबोधित कर सकता है।

4.9 सन्दर्भ

व्यवसायिक समाज कार्य के लिए नीति विषयों की घोषणाः समाज कार्य का भारतीय जनरल, (2), 335–341

कोलनई,एत्र (1976) गौरव, दार्शनिक, 51 (197), 251–271

एन.ए.एस.डब्ल्यू. (1999) नीति संहिता http;//www.vet.utk.edu/socialwork/pdf/NASWCodeofEthics.pdf

पूला,वी,(2012) वट् इज स्ट्रैन्थ बेस्ड प्रेक्टिस आल अबाउट? इन पूला वी, चैनोवैथ एल,.

फ्रांसिस एस, (ईडीएस) पेपर इन स्ट्रैंथ बेस्ड प्रेक्टिस नई दिल्ली अलाइड पब्लिकेशन

रेस्लेबे उी, (ईडी) (1992) 'द स्ट्रैंथ प्रेस्पेक्टिव इन सोशल वक प्रेक्टिस वाइट प्लांस एन,वाई, लोगमैन

मानव अधिकारों की संयुक्त राष्ट्र घोषणा (1948) प्राप्त की गई हैः http;//www/un.org/en/documents/udhr/

4.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) अस्मिता, अधिकांशतः जिसे आत्म–महत्ता अथवा आन्तरिक महत्ता के रूप में परिभाषित किया गया है, परम्परागत रूप से सम्मान के मूल्यवान होने के एक प्रकार के रूप में विशेषीकृत होतकी है। अस्मिता इसका भाग है कि हम कौन है, न कि हमारे पास क्या है?

2)
- प्रत्येक व्यक्ति, समूह, परिवार अथवा समुदाय की शक्तियाँ होती है।
- आपदा तथा उत्पीड़न, बीमारी तथा संघर्ष हानिकारक हो सकते हैं परन्तु वे चुनौतियों तथा अवसर के स्रोत भी हो सकते हैं।
- यह मानकर चलिए कि आप विकास करने तथा परिवर्तन की उच्च सीमाओं को नहीं जानते तथा व्यक्ति, समूह तथा समुदाय की अपेक्षाओं को गम्भीरतापूर्वक लीजिए।
- मुवक्किलों से गठजोड/समन्वय करके हम उनकी सर्वश्रेष्ठ सेवा करते हैं।

बोध प्रश्न II

1) मानव अस्मिता की चुनौतियों है :
- निर्धनता
- विकास के प्रति अंधा दृष्टिकोण
- जाति
- पितृसत्तात्मकता
- साप्रदायिकतावाद

2) ऐसी परिस्थितियों में, समाज कार्यकर्त्ता को ऐसी सकारात्मक नीतियों, प्रक्रियाओं तथा अभ्यासों कोा प्रोत्साहित करना चाहिए तथा उनमें अपना योगदान देना चाहिए जो अ–दमनकारी तथा सशक्तिकरण करने वाली होती है।

इकाई 5 समाज कार्य के एक मूल्य के रूप में सत्यनिष्ठा

*मालाथी अदुसुमल्ली एवं नमीता जैनर

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

5.1 परिचय

5.2 सत्यनिष्ठा की परिभाषा

5.3 समाज कार्य व्यवसाय के लिए नैतिकता विज्ञान के रूप में सत्य निष्ठा

1.4 सत्यनिष्ठाः वैयक्तिक, सामाजिक और व्यवसायी

1.5 सत्यनिष्ठा : उदाहरण

5.6 सत्यनिष्ठा का अभ्यास : प्रयोग तथा सीमाएं

5.7 सारांश

5.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निम्न को समझने में सक्षम होंगेः

- सत्यनिष्ठा की अवधारणा को समझना;
- समाज कार्य व्यवसाय हेतु सत्यनिष्ठा को नीति–संहिता के रूप में वर्णन करना;
- सत्यनिष्ठा के व्यक्तिगत, सामाजिक तथा पेशेवर अर्थ का अन्वेषण करना; और
- समाज कार्य व्यसाय में, सत्यनिष्ठा के निहितार्थों तथा सीमाओं का वर्णन करना।

5.1 परिचय

सत्यनिष्ठा, मौलिक मानवीय मूल्यों में से एक है। फिर भी सत्यनिष्ठा, को थोड़ा बहुत सिद्धांत या नैतिक गुण के रूप में परिभाषित किया गया है। सत्यनिष्ठा को आसानी से समझा जा सकता है जैसे किसी व्यक्ति की सत्यनिष्ठा का स्थायी प्रतिबिम्ब उसकी प्रत्येक सोच, बातचीत और कार्य से ज्ञात होता है। सघनता और अखंडता के विषय में सत्यनिष्ठा मुख्य रूप से समाज के विशेष सिद्धांत है। सरलतापूर्वक व्यक्त करें, 'जिसमें तुम्हें विश्वास है वह कार्य करो' ही सत्यनिष्ठा है। समाज कार्य व्यवसाय के संदर्भ में, सत्यनिष्ठा की परिभाषा नैतिक सत्यनिष्ठा के रूप में उल्लिखित है, जिसके द्वारा कोई यह समझ सकता है कि यह किसी व्यक्ति के विश्वास और सिद्धांतवादियों के अनुसार स्वयं का प्रतिबिम्ब है। इस प्रकार समाज कार्य में व्यवसायिक सत्यनिष्ठा सामाजिक न्याय और मानवीय अधिकारों के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए व्यक्ति के नैतिक और मानवीय सिद्धांतों का स्तर है।

*डॉ. मालाथी अदुसुमाली एवं डॉ. नमिता जैनर, समाज कार्य विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

5.2 सत्यनिष्ठा की परिभाषा

पंचतंत्र की कहानियां और लोक कथाएं पहली नैतिक शिक्षाएं हैं जो हम सबने अपने बचपन में पढ़ी हैं। इसी तरह की एक कहानी का उदाहरण लें:

'एक शेर बहुत भूखा था और खाने की तलाश कर रहा था। उसने देखा कि एक गाय खेत में चर रही है और उसने गाय पर हमला कर दिया। अभी शेर गाय को मारने वाला ही था, तभी उसने शेर से प्रार्थना की कि उसे अपने बछड़े को अंतिम बार देखने का अवसर दे। पहले तो शेर ने संकोच किया परंतु गाय की प्रार्थना को एक शर्त पर स्वीकार कर लिया कि वह वापिस अवश्य आएगी। गाय बछड़े के पास जाती है और उसे सलाह और जीवन जीने की शिक्षा देती है कि वह जीवन भर उन शिक्षाओं का पालन अवश्य करे। वह बछड़े से कहती है कि वह हमेशा झुंड में जाया करे और कभी भी झुंड से दूर न हो नहीं तो वह खतरे में पड़ जाएगा। बछड़े को अलविदा कहने के बाद गाय शेर के पास वापिस आ जाती है। शेर का दिल गाय की ईमानदारी से बदल गया और उसने गाय के जीवन को बख्श दिया'।

इस तरह की कहांनियों में गाय सत्यनिष्ठा यक्ति का उल्लेख करता है। 'सत्यनिष्ठा' की धारणा लैटिन भाषा के शब्द 'सत्यनिष्ठता' से ली गई है। जिसका अर्थ, 'अखंडता', 'संपूर्णता' और 'शुद्धता' है। जब एक व्यक्ति के शब्द और कार्य इस तरह के व्यक्तियों से मेल खाते हैं तब इनका हमारे संस्कारों/समूह में मूल्य होता है। समान रूप से यदि एक व्यक्ति की सत्यनिष्ठा इस प्रकार की कहानियों से प्रभावित होती है, तो वे सैद्धान्तिक होती हैं और नैतिक कहानियों में इनकी चर्चा की जाती है। आमतौर पर प्रतिदिन के जीवन में 'सत्यनिष्ठा' शब्द का प्रयोग नैतिक रूप में किया जाता है जो प्रायः सत्यनिष्ठा में बेईमानी, संभाग, भगुंरता जैसे विपरीत शब्दों के प्रयोग के साथ समाप्ति और अपूर्णता पर केन्द्रित है। इस प्रकार सत्यनिष्ठा के सर्वाधिक निकट समानार्थक शब्द 'ईमानदारी, सच्चाई, धार्मिकता, विश्वसनीयता जैसे शब्द है।

सत्यनिष्ठा के दो आयाम निम्नलिखित हैं:

(क) व्यक्तित्व के रूप में सत्यनिष्ठा

सत्यनिष्ठा केवल भावना की ही बात या मामला नहीं है। सत्यनिष्ठा के लिए भावना आवश्यक है परंतु केवल भावना ही पर्याप्त नहीं है। सत्यनिष्ठा व्यवहार का भी मामला है। केवल अच्छे उद्देश्यों से ही आधा कार्य हो जाता है। न केवल किसी के अच्छे कार्यों से उसके उद्देश्यों की गुणवत्ता सुस्पष्ट होती है, बल्कि किसी के अच्छे उद्देश्यों से उसके कार्यों की गुणवत्ता सुस्पष्ट होती है। उपदानों के अभाव में किए गए अच्छे कार्य वैसे ही निरर्थक होते हैं जैसे उपादानों की उपस्थिति में किए गए बुरे कार्य। सत्यनिष्ठ व्यक्तियों के भाव उनके आचरण से मेल खाते हैं। वे बड़ी ईमानदारी से अपने भावी को कार्यों में परिणत करते हैं, जो अच्छे उद्देश्यों की रुपरेखा प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार, सत्यनिष्ठा लगभग स्थिर सरेखण है।

वचनबद्ध व्यक्ति सत्यनिष्ठ व्यक्ति होता है। यहां पर 'वचनबद्धता' का उपयोग एक विशाल छाते के रूप में किया गया है जिसके अंदर बहुत से विभिन्न प्रकार के उद्देश्य, वादे/वचन, दृढ़ धारणाएं और विश्वास तथा अनुशंसाओं के संबंध आते हैं। कोई व्यक्ति बहुत सी विभिन्न प्रकार की चीजों के लिए बहुत से विभिन्न ढ़ंगों/तरीकों से वचन भी दे सकते हैं: लोग, संस्थाएं, व्यापार, कारण आदर्श, सिद्धांत और योजनाएं आदि। स्पष्ट परिणाम के द्वारा सत्यनिष्ठा की व्याख्या करना व्यक्तित्व को बनाए रखने के लिए वचनबद्धताओं पर परामर्श करने जैसा है। इस तरह की सत्यनिष्ठा वास्तव में नैतिक नहीं

हो सकती। सत्यनिष्ठा हुबहू वैसी है जैसे कोई व्यक्ति अपने आप को कठिन परिस्थितियों में भी बनाए रखने की योग्यता रखता हो। यथार्थ रूप से इस प्रकार की परिस्थितियों में सत्यनिष्ठा मूर्त रूप धारण करती है।

(ख) **नैतिकता के रूप में सत्यनिष्ठा**

सत्यनिष्ठा शब्द की दूसरी निकट व्याख्या सत्यनिष्ठा में अन्तर्निहित 'अखंड़ता' का सिद्धांत रेखांकित करती है। 'अखंड़ता' का संबंध एक व्यक्ति को प्रोत्साहित करने वाले सिद्धांतों और नियमों से होता है। इस प्रकार सिद्धांत, मूल्य, वास्तविक आचरण के रूप में इसका निकट संबंध सामजस्य से है और इसका उद्देश्य सम्पूर्ण सुसंगत के रूप में प्राप्त करना है। यह दृष्टिकोण सत्यनिष्ठा पर 'नैतिक नीतिशास्त्र सिद्धांत' पर आधारित है। जो कि यह तर्क प्रस्तुत करता है कि सत्यनिष्ठा में किसी के सिद्धांतों या परिस्थितियों में बदलाव लाने की योग्यता होती है। यह बहुत ही अधिक गतिशील/सक्रिय स्पष्टीकरण है, जिसके लिए कठोर व्यक्तित्व या अपरिवर्तनील व्यक्ति की धारणा की आवश्यकता नहीं होती। यह व्यक्तित्व के निरंतर पुर्ननिर्माण की पावती है, साथ ही साथ किसी के कार्य और सोच में संतुलन बनाने के उत्तरदायित्व की भी योग्यता है और पश्चात्य आधुनिक विश्व में जहां हम 'परिवर्तन' को एक महत्वपूर्ण तथ्य समझते हैं वहां पर सत्यनिष्ठा का यह विचार निरंतर 'पुरातन' और 'पुराने–प्रचलन' का देखा जा सकता है जो मानव की उन्नति में योगदान देता है और सामाजिक न्याय तथा मानवीय अधिकारों के नियमों के परिज्ञान का संचालन करता है। यहां पर दृष्टिकोण से साकारात्मक अर्थ निकलता है क्योंकि यहां सत्यनिष्ठा अच्छे कार्यों की कार्यान्वित करने को उल्लेख करती है चाहे व्यक्ति संघ में करे, अकेला करे या निष्कलंक उसका विश्वास दिलाती है। सत्यवान/ईमानदार व्यकित के शब्दों और कार्यों में एक दूसरे के प्रति समान एकरुपता होती है। इसलिए सत्यनिष्ठा का संबंध उस स्तर पर होता है जिस स्तर पर लोग दोनों व्यैक्तिक स्तर पर तथा सामाजिक स्तर पर एकीकृत होते हें। सत्यनिष्ठा एक सम–कलनात्मक मूल्यांकन है और पद, व्यवहार तथा परिणामों का नियंत्रण है। यह किसी विशेष उद्देश्य पर किया गया कार्य नहीं है बल्कि आदर्श, दृढ़ता और स्वयं–एकीकरण का निरंतर संरेखण है।

5.3 समाज कार्य व्यवसाय के लिए नैतिकता विज्ञान के रूप में सत्यनिष्ठा

सिद्धांत को कार्य के रूप में परिणत होने की प्रवृत्तियां होती हैं या कार्य का परिचालन करने की अथवा व्यक्तियों का वास्तविक व्यवहार सक्रिय पारस्परिक क्रिया में अपने वातावरण के अनुसार होता है जिससे वे स्वयं को अपनी जीवन स्थिति में परिचालित करने का अनुभव करते हैं। यह दूसरे से अधिक, स्वयं एक व्यक्ति के कार्य करने की अभिरुचि के लिए आवश्यक होता है, जिसे क्रमशः नैतिक मूल्यांकन में शामिल किया जाता है। प्रत्यक्ष/खुला व्यवहार नैतिक मूल्य का केवल एक भाग होता है जबकि दूसरा भाग/अंश आंतरिक प्रत्यक्ष ज्ञान और मूल्यांकन होता है जिसे कार्य का परिचालन करने में या विशेष कार्य को चुनने या निर्णय लेने में सम्मिलित किया जाता है।

मानव मूल्य/सिद्धांत किसी भी मानव समाज की नींव होते हैं। ये किसी भी समाज के लिए सहज और सुबोधता से कार्य करने के लिए महत्वपूर्ण अधिकारिक परामर्श होते हैं। मानवीय मूल्य किसी भी प्रकार के भेदभाव से ऊपर होते हैं जो कि हमारे समाज में हैं या जिनका अनुभव है। ये कल्याण शांति को प्रोत्साहित करने के लिए किसी भी तरह का निर्णय लेने के आधार होते हैं अथवा सरलता से किसी भी समाज में मानसिक संतुलन लाते हैं। मूल्य/सिद्धांत किसी व्यक्तिगत स्वार्थ से केवल ऊपर ही नहीं है बल्कि यह

व्यैक्तिक स्थान और आज़ादी को भी प्रोत्साहित करता है। वे संपूर्ण रूप से समाज का ध्यान रखते हैं जो कि आपस में जुड़ी हुई हैं, आपसी संबंध है और आपस में एक दूसरे पर निर्भर हैं और प्रत्येकमत से भिन्न भी हैं। सिद्धांत अनुश्रवण करते हैं साथ ही साथ किसी भी समाज के सदस्यों के बीच इन संबंधों को प्रोत्साहित करते हैं। यद्यपि संसार में राजनीतिक और सैद्धांतिक भेदभाव होते हैं, जिस तरीके से मानवीय मूल्यों को नाम दिया जाता है, वर्गीकृत किया जाता है, विचार किया जाता है और प्रस्तुत किया जाता है, फिर भी निश्चित मानवीय मूल्यों का व्यापक परिणाम निकालने का प्रयत्न किया जाता है जो कि संपूर्ण विश्व में स्वीकृत होते हैं। मूल्य/सिद्धांत जब सुव्यवस्थित किए जाते हैं तब वे नीतिशास्त्र हो जाते हैं। नीतिशास्त्र हमें साधनों के साथ दुविधापूर्ण या निश्चित परिस्थिति से निबटने का/सामना करने का तरीका निर्धारित करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। नैतिक सिद्धांत और नीतिशास्त्र दोनों व्यक्तियों के व्यवहार का मार्गदर्शन करते हैं। नैतिक सिद्धांतों, नीतिशास्त्रों और व्यवहार के बीच संबंध चित्र 1 में दर्शाया गया है। इस संबंध का व्यवसायियों के लिए बहुत अधिक महत्व ह क्योंकि नैतिकतापूर्ण धर्म संकट के कारण व्यवसायियों का मार्गदर्शन से आचरण संहिता और नीतिशास्त्रों को विकसित करने के लिए आधारभूत सिद्धांतों को प्रस्तुत करता है।

चित्र 1 : नैतिक सिद्धांतों, नीतिशास्त्रों और व्यवहार में संबंध

समाज कार्य व्यवसायियों का नैतिक सिद्धांतों और नियमों द्वारा मार्गदर्शन किया जाता है जो नीति संहिता में संघटित होते हैं जो कि व्यापक नियमों, नैतिक सिद्धांतों और नैतिकतापूर्ण आचरण के स्तर में घनिष्ठ संबंध स्थापित करते हैं। 1995 में बैंकों ने नीतिशास्त्र की नियमावली के चार सामान्य कार्यों के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित किए हैं। वह दावा करती है कि नीतिशास्त्र की नियमावली निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए मार्गदर्शक का कार्य करती है।

क) नैतिकतापूर्ण निर्णय निर्माण और संचालन

ख) दुर्व्यवहार और अपराध से उपभोक्ताओं के लिए संरक्षण

ग) समाज कार्य की व्यवसायिक स्थिति

घ) व्यवसायिक व्यक्तित्व की सुरक्षा तथा सुव्यवस्था

समाज कार्य प्रक्रिया तथा नियमावली में अभ्यंतर मूल्यों को वर्गीकृत करने के लिए बहुत से प्रयत्न किए गए। एन.ए.एस.डब्ल्यू. नीतिशास्त्र की नियमावली (1999) ने समाज कार्य प्रक्रिया के छः अभ्यतंर मूल्य/नैतिक सिद्धांत घोषित किए, जिनमें सम्मिलित हैं:

- सेवा
- सामाजिक और आर्थिक न्याय
- व्यक्ति की योग्यता और प्रतिष्ठा
- मानव संबंधों का महत्व

- सत्यनिष्ठा
- कार्य दक्षता

एन.ए.एस.डब्ल्यू. की नीतिशास्त्र की नियमावली समाज कार्य के लिए अभ्यंतर मूल्य की तरह कार्य में सत्यनिष्ठा को प्रोत्साहित करती है इसका अर्थ यह होगा कि समाज कार्यकर्त्ताओं के व्यवसाय के लक्ष्य, मूल्यों, नैतिकतापूर्ण नियमों और नैतिकतापूर्ण स्तरों से अवश्य ही परिचित होना चाहिए और सामाजिक न्याय तथा मानवीय अधिकारों के आदर्शों के साथ संगति में कार्य करने के लिए उत्तरदायी होना चाहिए।

सामाजिक कार्यकर्त्ताओं की राष्ट्रीय संस्था (एन.ए.एस.डब्ल्यू.) और अन्य संस्थाओं जैसे ब्रिटिश संस्था के समाज कार्यकर्त्ताओं (बी.ए.एस.डब्ल्यू.) ने महत्वपूर्ण अभ्यंतर मूल्यों में से एक सत्यनिष्ठा को सूचीबद्ध किया है। एन.ए.एस.डब्ल्यू. की नैतिकता की नियमावली (1999) सत्यनिष्ठा सिद्धांत के लिए निम्नलिखित नियम अभिव्यक्त करती है, 'नैतिकतापूर्ण नियमः समाज कार्यकर्त्ताओं को विश्वसनीय आचरण में व्यवहार करना चाहिए'।

नियमावली आगे स्पष्ट करती है कि, 'समाज कार्यकर्त्ता लगातार व्यवसाय के लक्ष्य, मूल्यों, नैतिकतापूर्ण नियमों और नैतिकतापूर्ण स्तरों से अवगत हो और उनके साथ अनुकूल व्यवहार में कार्य करे। समाज कार्यकर्त्ता ईमानदारी से और जिम्मेदारी से कार्य करते हैं और जिस संस्था से संबंधित होते हैं उनकी ओर से नैतिकतापूर्ण कार्यों को प्रोत्साहित करते हैं। इसमें अन्तर्निहित है कि समाज कार्यकर्त्ताओं का उत्तरदायित्व होना चाहिए कि वे व्यवसाय के नियमों और मूल्य को प्रोत्साहित करें तथा उन्हें सम्मान दें और विश्वस्त, ईमानदार तथा विश्वसनीय तरीके से कार्य करे।

व्यवसाय की सत्यनिष्ठा (एन.ए.एस.डब्ल्यू नीतिशास्त्र की नियमावली, 1999)

क) समाज कार्यकर्त्ताओं को कार्य के उच्च स्तर की पदोन्नति और अनुरक्षण के प्रति कार्य करना चाहिए।

ख) समाज कार्यकर्त्ताओं को व्यवसाय के लक्ष्य और ज्ञान, नीतिशास्त्रों, मूल्यों को आगे बढ़ाना तथा प्रोत्साहित करना चाहिए। समाज कार्यकर्त्ताओं का उचित अध्ययन, अनुसंधान और सक्रिय विचार–विमर्श के द्वारा व्यवसाय की सत्यनिष्ठा को सुधारना, बढ़ाना और सुरक्षित रखना चाहिए और व्यवसाय की समालोचना के लिए जवाबदेह होना चाहिए।

ग) समाज कार्यकर्त्ताओं को समय और व्यवसायिक सुवज्ञिाता को गतिविधियों के लिए सहयोग देना चाहिए ताकि समाज कार्य व्यवसाय की सम्पन्नता, सत्यनिष्ठा और मूल्यों के लिए सम्मान को प्रोत्साहन मिले।इन गतिविधियों में शिक्षण, अनुसंधान, परामर्श, सेवा, वैधानिक घोषणा, समुदाय में प्रदर्शन और अपने व्यवसायिक संस्थाओं में सहभागिता सम्मिलित है।

घ) समाज कार्यकर्त्ताओं को समाज कार्य का ज्ञान देने में सहयोग देना चाहिए और नीतिशास्त्रों, अनुसंधान और कार्य से संबंधित ज्ञान को अपने सहकर्मियों के साथ बांटना चाहिए। समाज कार्यकर्त्ताओं को व्यवसाय के साहित्य का अन्वेषण करने में सहायक होना चाहिए और व्यवसायिक सभाओं और सम्मेलनों पर अपने ज्ञान को बांटना चाहिए।

ड़) समाज कार्यकर्त्ताओं को समाज कार्य के अवैध और अयोग्य व्यवहार को रोकने का कार्य करना चाहिए।

सामाजिक कार्यकर्त्ताओं द्वारा सत्यनिष्ठा के कार्य को निम्न द्वारा समझा जा सकता है:

1. **सामाजिक न्याय और मानव अधिकारों के नियमों को प्रोत्साहित करना:** वैयक्तिक या सार्वजनिक मत के अनुसार सत्यनिष्ठा केवल व्यक्तिगत वचनबद्धता के नियमों में ही सम्मिलित नहीं है। सत्यनिष्ठा उन नियमों में भी निष्ठा का समावेश करती है जो न्यायसंगत आधारों पर स्वीकृति दे सकते हैं, जैसे सामाजिक न्याय तथा मानवीय अधिकारों के आदर्श। सत्यनिष्ठ व्यक्ति को आशा होती है कि जिन मूल्यों और मानदंडों को वह प्रोत्साहित करता है उसे दूसरे/अन्य भी अपना समर्थन दे, जो विकसित हो चुके मूल्य और मानदंडों पर विचार–विमर्श करने और विश्लेषण करने की उत्सुकता को सूचित करता है और बेहतर मूल्यों और मानदंडों के लिए उनका त्याग कर देता है जो आवश्यक है। सामाजिक न्याय और मानव अधिकारों हेतु कार्य करना समाज कार्यकर्त्ताओं का कर्तव्य है, इससे, व्यवसाय के मूल्यों और प्रतिष्ठा को प्रोत्साहन मिलता है।

2. **विश्वसनीयता :** सत्यनिष्ठा के कार्य की मांग है कि समाज कार्यकर्त्ताओं को इस प्रकार कार्य करना चाहिए जो ईमानदार, विश्वसनीय और स्पष्ट हो, स्पष्ट रूप से अपनी भूमिकाओं, मध्यस्थताओं और निर्णयों की व्याख्या करें तथा जो उनकी सेवाएं, उनकेसहकर्मियों का उपयोग करते हैं उन लोगों को धोखा देने का प्रयत्न न करें। समाज कार्यकर्त्ताओं को अपकीर्ति की ओर नहीं लेकर जाता। समाज कार्यकर्त्ताओं को तर्क पर विचार करके तथा संतुलित आधार पर मूल्यांकन करना चाहिए, अपने स्वयं के नैतिक सिद्धांतों के संघटन की जागरुकता को कायम रखते हुए, अन्य लोगों पर और अपनी प्रक्रिया पर अभिरुचित के संघर्षों और प्रतिकूल प्रभावों के आधार पर निर्णय करना चाहिए।

5.4 सत्यनिष्ठा: वैयक्तिक, सामाजिक और व्यवसायिक

क. वैयक्तिक स्तर पर सत्यनिष्ठा

सत्यनिष्ठा एक व्यक्तिगत मूल्य/नैतिक सिद्धांत है। यह किसी के नियमों और आचरणों में सम्बद्धता का विषय है। सत्यनिष्ठा किसी के व्यवहार की भविष्यवाणी में सहायता करता है। अन्य जानते होंगे कि कोई व्यक्ति किसी विशेष स्थिति में किस प्रकार की प्रतिक्रिया करता है यह बिल्कुल सही भविष्यवाणी नहीं है, मनुष्य बदलती परिस्थितियों की मांगों के साथ बदलता है परंतु फिर भी हमें किसी के नियमों या मूल्यांकन तथा चुनाव के स्तरों को समझ जाते हैं। इस प्रकार एक विश्वसनीय जवाबदेही कारक का पता चलता है। यह किसी व्यक्ति की आंशिक प्रतिकृति है जो उसने अपने जीवन की कहानी के भूतपूर्व निर्णयों का अवलोकन कर पहले ही से उत्पन्न की है। हम स्वयं और अन्य लोगों के लिए विकल्पों और आकांक्षाओं पर अनिवार्य रूप से चिन्तन करके महत्व और बल किस प्रदान करते हैं क्योंकि सम्बद्धता सत्यनिष्ठा का महत्वपूर्ण कारक और विशेषता है। वैयक्तिक सत्यनिष्ठा किसी व्यक्ति के अपने मूल्य, वचनबद्धता और नियमों के अनुसार कार्य करने में सम्मिलित होती है।

ख) सामाजिक स्तर पर सत्यनिष्ठा

जब हम सामाजिक स्तर पर सत्यनिष्ठा की बात करते हैं तो हमें पहले से ही विचार किए गए मानवीय मूल्यों के समूह का उल्लेख करना होगा। ये मानवीय मूल्यों का ही समूह है जो समूहों या समाजों को आपस में मैत्रीपूर्ण ढ़ंग से रहने में सहायता करता है। सामाजिक स्तर पर सत्यनिष्ठा वैयक्तिक कार्यों या व्यवहार और विशेष

सामाजिक समूह के मूल्यों, सामाजिक चक्र या सामाजिक संस्था जैसे परिवार, धर्म आदि के बीच सम्बद्धता का विषय है। जब हम सामाजिक स्तर पर सत्यनिष्ठा की बात करें तो हम 'सामाजिक रूप से स्वयं उत्तरदायित्व' का उल्लेख करते हैं। वैयक्तिक सत्यनिष्ठा आगे चलकर केवल सामाजिक चक्र, संस्थाओं और निश्चित वातावरण के क्रम से ही केवल विकास करती है और उन्नति करती है। किसी संस्था या समूह के पास नियमों का पालन करने के लिए नैतिक सिद्धांतों और नियमों का होना अनिवार्य है और उसे समझा जाए तथा किसी की आकांक्षाओं, वचनबद्धताओं पर विचार करे तो कोई व्यक्ति क्रमशः विशाल नैतिक सिद्धांतों के समूह के साथ सहसंबंध स्थापित करने का प्रयत्न करता है यहां पर, सामाजिक स्तर पर सत्यनिष्ठा प्रकट होती है। अपनी आकांक्षाओं और वचनबद्धता के समूह के साथ वैयक्तिक स्तर पर कौन क्या है और वैयक्तिक सत्यनिष्ठा पर कोई कैसे उनके साथ जुड़े रहने का प्रयत्न करता है। विशेष सामाजिक समूह की सदस्यता या सामाजिक संस्था के साथ उनके अपने मूल्य और नियमों का समूह ही सामाजिक सत्यनिष्ठा लाता है। समाज कार्यकर्त्ताओं के लिए आवश्यक है कि अद्योगामी सामाजिक मूल्यों का न तो अनुसरण करे और न ही उन्हें कायम रहने दे। उनका अवश्य ही विरोध करना होगा और सामाजिक न्याय तथा मानव अधिकारों के लिए बदलना होगा।

ग) **व्यवसायिक स्तर पर सत्यनिष्ठा**

व्यवसायिक स्तर पर सत्यनिष्ठा का अर्थ नैतिक दृष्टि से अच्छा/सही आचरण', 'कुछ के लिए स्थायी' और 'क्षमता/नैतिक सुयोग्यता'। जिस व्यवसाय के साथ व्यक्ति का संबंध होता है उस व्यवसाय के नियमों, उद्देश्यों और मूल्यों के अनुसार कार्य करना अनिवार्य होता है। इसमें किसी के व्यवसाय के लिए उच्च स्तर की 'वचनबद्धता' सम्मिलित होती है, विशेषकर जब हम समाज कार्य व्यवसायों के बारे में बात करें। सत्यनिष्ठा को नैतिकता के रूप में देखा जाता है जिसे कोई व्यक्ति अपने जीवनसाथी, अच्छे दोस्त, कर्मचारी, मंत्री/नेता, अध्यापक, डॉक्टर और अवश्य ही समाज कार्यकर्त्ता में होने की आशा रखता है। यह इसलिए अन्तर्निहित है कि सत्यनिष्ठा जिसे कोई व्यक्ति अपने निजी जीवन में प्रदर्शित करता है जैसे उनकी निजी सत्यनिष्ठा, वास्तव में उनके व्यवसायिक जीवन को भी प्रभावित करेगी और इस प्रकार व्यवसायिक सत्यनिष्ठा परिभाषित होती है। प्रदर्शन और स्वयं का ज्ञान और स्वंय का एकीकरण सत्यनिष्ठा के इस स्तर को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण योग्यताएं हैं जिनकी आवश्यकता है।

5.5 सत्यनिष्ठा : उदाहरण

व्यवसायिक प्रक्रिया के लिए सत्यनिष्ठा के अर्थ को समझने में सहायता करने के लिए दो उदाहरण नीचे दिए गए हैं:

उदाहरण 1:

श्रीनगर में विनाशकारी बाढ़ में फंसा एक समाज कार्यकर्त्ता अपनी आत्म–विमोह दशा में अपने विद्यार्थियों को पीछे छोड़ कर जाने से और तैरकर सुरक्षित स्थान पर जाने से इंकार कर देता है।

30 वर्षीय जोर्ज जॉनसन, जीवन संरक्षण (एल.एच.सी.) पर योजना संयोजक, श्रीनगर के नाटीपोरा क्षेत्र में एन.जी.ओ. द्वारा चलाया गया एक विद्यालय है जिसमें विशेष आवश्यकताओं वाले विद्यार्थी होते हैं जैसे–मंदबुद्धि, मांसपेशियों में समस्या, मूर्धन्य अंगघात, आतमविमोह जैसी बिमारियों से प्रभावित नौ बच्चों के समूह के साथ एन.जी.ओ. का संचालन कर रहे हैं।

'मैं अपने विद्यार्थियों के बिना इस स्थान को छोड़ने से इंकार करता हूँ जब वहां के वालंटियर बचाव ऑपरेशन के लिए आए। किश्तियों में इन बच्चों को छोड़कर जाना मुश्किल है क्योंकि बाढ़ का पानी इन बच्चों में डर पैदा कर सकता है। बचाव घरों में इन्हें रखना संभव नहीं है क्योंकि लोगों को पता नहीं चलेगा कि उनके साथ कैसा व्यवहार करना है। मैं उनकी जरुरत के समय इन बच्चों के साथ रहना पसंद करुंगा' जॉनसन ने कहा।

उदाहरण II

भारती एक पुनर्वास मनोवैज्ञानिक है और राजस्थान के जोधपुर शहर में सारथी नामक एन. जी.ओ. चलाती है। उसने आज तक, अपने अकेले दम पर 850 बाल विवाह रूकवाएं है और लगातार मौत की धमकी मिलने के बाद भी उसका संघर्ष थमा नहीं है वर्तमान में वह एक केस पर कार्य कर रही है जिसमें अजमेर (राजस्थान) की एक 15–वर्षीय बालिका का विवाह 55 वर्षीय आदमी से कर दिया गया है, जिसके कारण उसे सीमा पार से भी मौत की धमकियाँ मिल रही है।

उसने अखबार को बताया, मेरा बचपन घुटन भरा था। कुछ कारणों से, यह विनाशक था। मुझे और मेरी माँ को अपने आप पेट भरने के लिए छोड़ दिया गया था और तभी यह शुरू हुआ।

ये मौत की धमकियां अब मुझे परेशान नहीं करती। यद्यपि मैंने कई बार पुलिस को सूचित किया है परन्तु वे हर समय मेरे साथ नहीं हो सकते मैं यह समझ सकती हूं। लेकिन मैं जीवन में पहले ही इससे भी बुरा देख चुकी हूं।'' उसने डी.एन.ए. को बताया। उसे असंख्य धमकियां मिल चुकी है तथा हमले हो चुके हैं मगर ये सब उसे उन लोगों को रोकने से नहीं हटा पाता जो अपने बच्चों की कच्ची उम्र में शादी कर देते हैं। उसकी सहायता के लिए पांच स्वयं सेवकों का समूह है परन्तु सभी बालिका–वधू बचाओ अभियान पर वह अकेले ही जाना पसन्द करती है। ''मैं किसी और की जिन्दगी को खतरे में नहीं डालना चाहती, इसलिए में अकेले जाना पसन्द करती हूं।'' उसने डीएनए को बताया ''मैंने अपना कैरियर दूसरे एनजीओ के साथ काम करके शुरू किया था जहां मुझे व्यक्तिगत रूप से जाने और ऐसी शादी रोकने की आजादी नहीं थी। तब मैंने 2011 में सारथी नाम से अपना ट्रस्ट शुरू किया और अब तक हमने 850 बाल विवाह रूकवाएं हैं।'' भारती आगे कहती है।

दोनों उदाहरण 1 और 2 दोनों हमारे सामने वैयक्तिक सत्यनिष्ठा और व्यवसायिक सत्यनिष्ठा के बीच सामंजस्य का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। क्षेत्रों जॉर्ज और भारती अपनी परिस्थितियों में प्रबल नैतिक सत्यनिष्ठा को सिद्ध करते हैं। प्रथम, यह उनके अपने मानवीय मूल्यों और उनकी अपने आप से की गई वचनबद्धता का उदाहरण है और दूसरा, उनकी वचनबद्धता व्यवसायिक कर्त्तव्यों के प्रति है। दोनों उदाहरणों में, जॉर्ज और भारती ने अपने कर्तव्यों और अपने आप को सच्चा सिद्ध करने के लिए अपने जीवन को जोखिम में ड़ाला। भारती ने विशेषकर अपने सहयोगियों को सम्मिलित किए बिना अकेले ही सारे जोखिम और खतरे में अपने आप को बलपूर्वक डाला। प्रत्येक समय स्थिति पैदा होती रही। जॉर्ज ने स्वयं ही बच्चों के साथ वहां रुकने का फैसला किया और उन्हें बाढ़ के पानी में पीछे नहीं छोड़ा। उसने प्रबल रूप से अनुभव किया कि अन्त समय तक उनकी रक्षा करना उसका कर्त्तव्य था।

इस तरह के समान उदाहरण हमें समझने में सहायता कर सकते हैं कि समाज कार्यकर्त्ता हेतु कर्तव्य के लिए वचनबद्धता का स्तर आवश्यक है। लेकिन उसी समय हमें यह नहीं

भूलना चाहिए कि वे स्वयं भी मानव है उनके, अपने वैयक्तिक मूल्य और उनकी अपनी इच्छांए हैं। प्रत्येक समाज कार्यकर्त्ता हर समय अपनी इच्छा से अपने जीवन को जोखिम में नहीं ड़ालेगा या नहीं ड़ालना चाहिए; उसे कुछ समय त्याग देना चाहिए। और ये इच्छाएं और वैयक्तिक मूल्य है जो कई बार व्यक्तिगत समाज कार्यकर्त्ता और जिस संस्था से जुड़े होते हैं उसकी आकाक्षाओं के बीच संघर्ष उत्पन्न करते हैं। सीमित कोषों का व्यवसायिक नियंत्रण, लक्ष्य प्राप्त होने चाहिए, कार्य की प्रकृति और कर्मचारियों तथा विभिन्न अधिकारियों के बीच असहयोग भी सम्मिलित है साथ ही साथ प्राधिकारी या व्यवसायिक मूल्यों और व्यैक्तिक समाज कार्यकर्त्ता के मूल्यों के बीच असामंजस्य है, तथा समाज कार्य व्यवसाय के भीतर और साथ ही साथ वैयक्तिक स्तर पर सत्यनिष्ठा की सीमाओं के इस तरह के बहुत से मामले सामने आते हैं

5.6 सत्यनिष्ठा का अभ्यास : प्रयोग तथा सीमाएं

भारत में समाज कार्य व्यवसाय या अनुशासन में मूल्यों/नैतिक सिद्धांतों और नीतिशास्त्रों पर पश्चिम का बहुत अधिक प्रभाव रहा है। हम अधिकतर यू.एस.ए. के नीतिशास्त्रों की नियमावली का अनुसरण करते हैं। मामला यह है कि एक साथ विभिन्न संस्थाओं की तरह भारत और यू.एस.ए. के बीच अंतर को समझना है। सामाजिक विज्ञानों और विज्ञानों के अन्य अनुशासनों को समान समस्या का सामना करना पड़ता है। समाज कार्य के अनुशासन में इस मामले पर ध्यान देने के लिए भारत में बहुत से शास्त्री भी बुलाए गए हैं, और इस प्रकार भारतीय प्रसंग में उन्होंने अपनी समझ को व्यक्त करने का प्रयत्न किया है। भारत में हमेशा विविधता रही है परन्तु शैक्षिकों में विविधता का अभिज्ञान निश्चय ही देरी से हुआ है। समाज कार्य एक अनुशासन है जो स्पष्ट रूप से लोगों और उनकी सामाजिक समस्याओं के साथ व्यवहार करता है। इस प्रकार यह अत्यन्त सुस्पष्ट हो जाता है कि नीतिशास्त्र और मूल्य भारत में प्रासंगिक और अतिसंवेदनशील है और इसके नागरिक विभिन्न धर्मों, लिंगों, आयु समूहों, आर्थिक समूहों, जातियों और गैर इसाई नागरिकों से संबंध रखते हैं और निः संदेह निर्धारण में इनका पारस्परिक प्रभाव आगे विभिन्नताओं को जटिल बनाता है। भारत में नैतिक सिद्धांत सामान्य रूप से सामूहिक मानदंडों पर आधारित है और इस तरह के मानदंड इन सामाजिक समूहों से भिन्न हैं। इन विभिन्नताओं को समझना और आदर करना अनिवार्य है फिर भी समाज कार्य प्रक्रिया/पद्धति के भीतर उने सामाजिक समूह उद्‌गमों को ध्यान में रखते हुए व्यक्तियों के गौरव और योग्यता पर बल दिया जाता है। विशेष प्रासंगिक मामलों पर व्यवहार करते हुए व्यक्तियों के गौरव और योग्यता और भिन्नता के विषय में सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांतों और गौरवपूर्ण जीवन के लिए उनके अधिकार को नहीं भूलना चाहिए।

'क्या कर्तव्य होने चाहिए' या 'क्या करना चाहिए' नीतिशास्त्र इसके बारे में है। यह समाज कार्यकर्त्ता का मार्गदर्शन करता है कि कैसे जटिल परिस्थितियों को आसान बनाया जाता है जिसमें वह प्रायः स्वयं का अनुभव करता है। औपचारिक रूप से लिखित उच्च व्यवसायिक स्तर की नियमावली से समाज कार्यकर्त्ता को जुड़ने की/संबंध स्थापित करने की आवश्यकता है। यह वह अवस्था है जिसमें कोई इस तरह की सत्यनिष्ठा या व्यवसायिक सत्यनिष्ठा से संबंध स्थापित करता है और इस प्रक्रिया में न केवल समाज कार्यकर्त्ता की व्यैक्तिक विश्वसनीयता प्रभावित होता है बल्कि संपूर्ण व्यवसाय भी प्रभावित होता है। जब ऐसी कठिन परिस्थिति उत्पन्न होती है जहां पर कार्यकर्त्ता की व्यैक्तिक सत्यनिष्ठा या व्यवसायिक सत्यनिष्ठा पर प्रश्न खड़ा हो वहां संकट पैदा होता है।

सत्यनिष्ठा व्यक्ति के लिए यह कठिन कार्य है क्योंकि उसे दिन प्रतिदिन बहुत सी विरोधी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। मान लो परिकल्पनात्मक रूप से, कोई व्यक्ति

हमेशा सच बोलता है क्योंकि उस व्यक्ति में यह उच्चतम नैतिक सिद्धांत है और फिर भी उसे ऐसी परिस्थिति का सामना करना पड़ता है जहां पर उसे किसी कारणवश विशेष सच्चाई को छुपाना पड़ता है ताकि किसी अन्य व्यक्ति को नुकसान न हो या स्थिति और अधिक खराब न हो और शायद सही समय आने की प्रतीक्षा करता है जब वह सच बताए। जब एक समाज कार्यकर्त्ता पर स्थिति आती है, तो यह सत्यनिष्ठ व्यक्ति के लिए कठिन कार्य हो जाता है, कि स्वयं को नैतिक सिद्धांतों को प्रोत्साहित करे और संस्था के सिद्धांतों को भी। परंतु फिर भी समाज कार्यकर्त्ता के लिए महत्वपूर्ण कारक है, इस के महत्व पर हम पहले भी बहुत विचार–विमर्श कर चुके हैं। सत्यनिष्ठा को ऐसे समझना चाहिए जैसे 'किसी व्यक्ति के नैतिक सिद्धांतों या परिस्थितियों में बदलाव लाने की प्रतिक्रिया में योग्यता है, स्वयं का निरंतर पुर्ननिर्माण करने का रूप है, साथ ही साथ किसी के कार्य और सोच के लिए संतुलन जिम्मेदारी उठाने की क्षमता है'। इस प्रकार किसी भी तरह की परिस्थिति पैदा हो, सत्यनिष्ठा स्वंय का सम्पूर्ण अनुरक्षण करने के विषय में है और इससे अधिक बदलती परिस्थितियों पर प्रतिबिंबित होता है और स्वयं को एक नई स्थिति में स्थित करता है। यह आवश्यक है कि सत्यनिष्ठा को व्यवहार में विकसित करने के लिए उसे समाज कार्यकर्त्ताओं की कहानियों पर प्रदर्शित करके, समझाकर और सम्मिलित होकर समझाया जाए। उनके संघर्षों को समझना महत्वपूर्ण है। समाज कार्य की प्रकृति को और अधिक संवेदनशील बनाने के लिए उस पर और अधिक चिन्तन करना होगा। कागज़ी कार्य करने की अपेक्षा अनुभवों को सांझा करने पर अधिक ध्यान देना चाहिए, यद्यपि कोई कागज़ी कार्य की महत्ता से इंकार नहीं कर सकता परंतु वैयक्तिक कहानी पर चिन्तन/विमर्श की आवश्यता है। सबसे पहले नीति सिद्धांत विशेष समाज या समूह के लिए प्रासंगिक होने चाहिए।

5.7 सारांश

सत्यनिष्ठा अभ्यंतर समाज कार्य नैतिक सिद्धांत/मूल्य है। संपूर्ण विश्व में समाज कार्यकर्त्ताओं द्वारा इसे एक महत्वपूर्ण सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत माना गया है। समाज कार्यकर्त्ताओं द्वारा सत्यनिष्ठा के मूल्यों को प्रोत्साहित करके समाविष्ट किया जाता है। परिणाम निकाला जाता है कि समाज कार्यकर्त्ताओं को लगातार व्यवसाय के मिशन, मूल्यों, नैतिकतापूर्ण नियमों और नैतिकतापूर्ण मानदंडों से अवगत होने की आवश्यकता है और सबसे अधिक महत्वपूर्ण उनके कार्य की सामाजिक न्याय और मानवीय अधिकारों के नियमों के साथ सुसंगत करने की आवश्यकता है जो कि संपूर्ण विश्व में समाज कार्य प्रक्रिया के नियमों का मार्गदर्शन कर रहा है।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणी : क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) सत्यनिष्ठा को परिभाषित करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) व्यक्तिगत, सामाजिक तथा पेशेवर स्तर पर सत्यनिष्ठाा को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

5.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

बैक, एस,(1995) समाज कार्य के नैतिक सिद्धांत/मूल्य और नीतिशास्त्र लंदनःमैकेमिलन

एन.ए.एस.डब्ल्यू.(1999) नीतिशास्त्र की नियमावली http://vet.utk.edu/socialwork/pdf/NASWCodeofethics.pdf

मालकॉम पायने(1999) समाज कार्य के नैति आधार, समाज कार्य के यूरोपियन जनरल 2(3), 247–258

5.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) 'सत्यनिष्ठा' की अवधारणा लैटिन शब्द 'integritaas' से उत्पन्न हुई है जिसका अर्थ 'पूर्णता' तथा 'शुद्धता' है। जब एक व्यक्ति के शब्दों तथा कार्यों में समानता होती है ऐसे संगततापूर्ण व्यक्ति को हमारी संस्कृति में महत्व दिया जाता है तथा नैतिक कथाओं में उनके विषय में बताया गया जाता है।

2) • व्यैक्तिक स्तर पर सत्यनिष्ठा

सत्यनिष्ठा एक व्यक्तिगत मूल्य है। यह व्यक्ति के सिद्धांतों तथा नैतिकताओं के विषय में सुसंगति होना है। सत्यनिष्ठा एक व्यक्ति के व्यवहार की भविष्यवाणी करने में सहायता करती है, अन्य व्यक्ति जानते हैं कि एक व्यक्ति, एक विशेष परिस्थिति में किस प्रकार प्रतिक्रिया करेगा।

• सामाजिक स्तर पर सत्यनिष्ठा

यह मानव मूल्यों का एक समुच्चय है जो समूहों अथवा समाजों की एक साथ तथा सौहार्द्रपूर्ण रहने में सहायता करता है। सामाजिक स्तर पर सत्यनिष्ठा, विशेष सामाजिक समूह, सामाजिक सर्कल (दायरा), अथवा सामाजिक संस्थाओं जैसे परिवार धर्म इत्यादि के व्यैक्तिक कार्यों अथवा व्यवहार तथा मूल्यों के मध्य सुसंगति के विषय में है।

• पेशेवर स्तर पर सत्यनिष्ठा

पेशेवर सत्यनिष्ठा का अर्थ ''नैतिक रूप से अच्छा/उचित आचरण'' ''किसी के पक्ष में खड़ा होना'' तथा ''एक क्षमता/नैतिक सक्षमता'' है।

इकाई 6 समाज कार्य के एक मूल्य के रूप में सुयोग्यता/सक्षमता

*शीबा जोसफ

इकाई की रूपरेखा

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 योग्यता/सक्षमता का अर्थ और परिभाषा

6.3 सक्षमता के चरण

6.4 सक्षमताओं के प्रकार

6.5 सक्षमता का निर्धारण करने वाले कारक

6.6 समाज कार्य के मूल्य के रूप में सक्षमता/सुयोग्यता

6.7 नीति संहिता में प्रतिबिंबित सक्षमता का मूल्य

6.8 सक्षमता के नैतिक सिद्धांत

6.9 समाज कार्य प्रक्रिया में मूल सक्षमताएं

6.10 सारांश

6.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

6.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.0 उद्देश्य

इस इकाई से आप समाज कार्य के मूल्य के रूप में सक्षमता/सक्षमता के साथ परिचित होंगे। इससे मुवक्किलों, समूह के सदस्यों या समुदाय के सदस्यों से संबधं रखने के लिए समाज कार्यकर्त्ताओं के पास होने वाली प्रमुख दक्षताओं पर एक अंतर्दृष्टि मिलेगी। यह इकाई आपको विभिन्न व्यवसायिक संगठनों द्वारा समाज कार्य में वर्णित प्रकार, निर्धारक और मुख्य दक्षताओं की एक नज़र का आंकलन करेगा। यह अध्याय आपको समाज कार्य के क्षेत्र में व्यवसायिक समाज कार्यकर्त्ताओं की अपेक्षित योग्यता के विषय में संक्षेप में बताएगा। इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप यह जानने में सक्षम होंगे कि कैसे समाज कार्य मूल्यों और नीतियों का मुवक्किल के कल्याण के लिए प्रभावशाली ढ़ंग से कार्य करने के लिए समाकलित किया जाएगा।

6.1 प्रस्तावना

सक्षमता को विश्व भर में विभिन्न समाज कार्यकर्त्ताओं की संस्थाओं, व्यवसायिकों, शिक्षाविदों द्वारा समाज कार्य व्यवसाय का मूल महत्व/नैतिक सिद्धांत माना जाता है। सक्षमता के व्यवसायिकों से आशा करती है कि व्यावसायी समाज कार्य की प्रणालियों, दर्शन मूल्य, मार्गदर्शक सिद्धांतों व्यवसाय की नीति संहिता से अच्छी तरह अवगत हो। एक व्यावसायिक से आशा की जाती है कि वह निरंतर समाज कार्य के आधार पर अपने कौशलों और ज्ञान में वृद्धि करे, विभिन्न सामाजिक और पर्यावरणीय आधारों पर उभरते ज्ञान, इसके अतिरिक्त नई समस्याओं की विविधताओं से संबंधित अपने ज्ञान और निपुणता को बढ़ाएं। व्यवसाय व्यक्तिगत और संस्थागत अनुभवों की प्रदर्शनी और अभिलेख के

*डॉ. शीबा जोसफ, भोपाल स्कूल ऑफ सोशल साइन्स, भोपाल

अतिरिक्त व्यावसायिकों और संस्थाओं के बीच ऐसे शोध निष्कर्षों के प्रसार, शोध अध्ययनों के तरीके से क्षमता के मूल्यों को मजबूत करने का प्रयत्न करता है। किसी व्यक्ति की व्यवसाय के प्रति वफादारी, कठिन परिश्रम और सांस्कृतिक अतिसंवेदनशीलता, व्यवसाय के ज्ञान के आधार पर व्यावसायिक को मूल्यवान योगदान देने में सक्षम बनाएगी। यह अध्याय प्रशिक्षणार्थी की समाज कार्य व्यवसाय में दृढ़सत्व मूल्य के रूप में सक्षमता के विभिन्न पहलुओं को समझने में सहायता करेगा।

समाज कार्यकर्त्ता एक व्यवसाय के रूप में समाज कार्य के प्रभावी कामकाज के लिए अपनी योग्यता के क्षेत्र में कार्य करते हैं। समाज कार्यकर्त्ता अपने व्यवसायिक ज्ञान और कौशलों को बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयास करते हैं और उनका अपने कार्य में प्रयोग करते हैं। समाज कार्यकर्त्ताओं का व्यवसायिक योग्यता के भाग के रूप में अनुसंधान द्वारा व्यवसाय के ज्ञान के आधार पर योगदान देने के लिए महत्वकांक्षी होना चाहिए। समाज कार्यकर्त्ताओं की सक्षमता विविध क्षेत्रों में प्रदर्शित होती है। कार्यकर्त्ता को मुवक्किल के लिए, अपने आप के लिए और संगठन के लिए नैतिकतापूर्ण उत्तरदायित्वों के प्रति सचेत रहना चाहिए। व्यवसायिक समाज कार्यकर्त्ता अपने कार्य में विभिन्न स्तरों पर मूल्यांकन, हस्तक्षेप, विश्लेषण, अन्वेषण, पारस्परिक क्रियाओं के सेवन और गतिशील प्रक्रियाओं को सम्मिलित करता है। समाज कार्यकर्त्ताओं के पास व्यक्तियों, परिवारों, समूहों, संगठनों और समुदायों के साथ कार्य करने के कौशलता और ज्ञान होता है। अभ्यास ज्ञान में मुवक्किल के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए हस्तक्षेपों पर आधारित पूर्ति करते हुए प्रमाण की रूपरेखा बनाना और विश्लेषण करना, तादात्मय स्थापित करना सम्मिलित है, सक्षमता का मूल्य सुनिश्चित करता है कि समाज कार्यकर्त्ताओं द्वारा प्रदान की गई सेवाएं प्रभावशाली है और ग्राहक के सर्वोत्तम हित के उद्देश्य से है।

6.2 सुयोग्यता/सक्षमता का अर्थ और परिभाषा

सक्षमता एक संभावित क्षमता और किसी स्थिति में कार्य करने की क्षमता को दर्शाता है। योग्यता स्थिति में किसी व्यक्ति के वास्तविक अभिनय पर केन्द्रित होती है। इसका अर्थ यह है कि योग्यता प्राप्त करने की अपेक्षा करने से पहले दक्षता की आवश्यकता है। इस प्रकार, योग्यता किसी व्यक्ति को अपने कार्य की जिम्मेदारियों को पूरा करने के योग्य बनाती है। दक्षता एक निश्चित भूमिका और प्रतिवेश के अनुसार कार्य के माहौल में विकसित किए गए स्थापित प्रदर्शन मानकों के साथ वर्तमान कार्य की कार्य पद्धति की तुलना के द्वार निर्धारित की जाती है (शॉटर, कैथरीन, 2008)।

सक्षमता को मूल रूप से व्यवहार के बारे में परिभाषित किया गया था। जबकि वुडरुफ ने 1993 में सक्षमता को इस प्रकार परिभाषित किया है, 'एक कार्य संबंधित अवधारणा जो कार्य के क्षेत्रों को संदर्भित करती है जिस पर व्यक्ति सक्षम है'। कार्य करने वाले सक्षम लोग, जो उनकी प्रदर्शन अपेक्षाओं को पूरा करते हैं' सक्षमताओं को कई बार 'कठोर कौशलों के रूप में जाना जाता है। सभी विषयों में, क्षमता दर्शाती है कि ज्ञान, मूल्य और कौशल सीखने को कार्य में एकीकृत किया जा सकता है (कारराकियो 2002)। योगयता की अवधारणा किसी क्षेत्र में प्रदर्शन के लिए अनिवार्य है। मैसफील्ड (1999) सक्षमता को इस प्रकार परिभाषित करता है, 'एक व्यक्ति की अंतर्निहित विशेषता के रूप में जो परिणामस्वरुप प्रभावी या श्रेष्ठ प्रदर्शन है'। रेंकिन (2002) सक्षमता को परिभाषित करता है, 'कौशलताओं और व्यवहारों की परिभाषा है जिसे संगठन अपने कर्मचारियों से आशा करता है कि वे इनका अपने कार्य में अभ्यास करेंगे' ओर इसके अर्थ की व्याख्या प्रदर्शन की भाषा के रूप में की जाती है। वे दोनों व्यक्ति के प्रयासों और प्रणाली से अपेक्षित परिणामों को स्पष्ट रूप से कह सकते हैं जिसके अन्तर्गत ये गतिविधियों को पूरा करते हैं क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति संगठन में इस भाषा को बोलने के लिए शिक्षा प्राप्त कर सकता

है, योग्यताएं विभिन्न परिस्थितियों में अपेक्षित प्रदर्शन का वर्णन करने के लिए एक सामान्य, सार्वभौमिक समझी जाने वाली शब्दावली प्रदान करती है।

उपर्युक्त सभी परिभाषाओं से हम क्षमता की निम्नलिखित प्रमुख विशेषताओं को चुन सकते हैं:

1. संभावित क्षमता
2. दी गई स्थिति में कार्य करने की क्षमता
3. अपनी नौकरी की जिम्मेदारियों को पूरा करने के योग्य
4. कार्य स्थल पर प्रदर्शन अपेक्षाओं को पूरा करना
5. कठिन कौशल के रूप में भी जाना जाए
6. व्यक्ति की आधारभूत विशेषताएं जिससे प्रभावशाली या बेहतर अभिनय के परिणाम निकल।
7. प्रदर्शन की भाषा

सक्षमता को स्पष्ट करने के लिए इसका अर्थ यह है कि समाज कार्य में प्रभावपूर्ण ढ़ंग से काम करने के लिए ज्ञान, कौशलताओं और आत्म–चेतन/जागरुकता की आवश्यकता होती है। विशिष्ट कौशलों और ज्ञान की आवश्यकता आरंभ किए हुए विशिष्ट कार्यों पर निर्भर करती है। बहुत से विषय और प्रसंग हैं जो समाज कार्य के प्रारंभिक वर्गों में व्यवहार कर किसी व्यक्ति को इस योग्य बनाते हैं कि वह मुवक्किलों द्वारा प्रस्तुत समस्याओं की विभिन्नता के साथ कार्य करने के योग्य बनते हैं। हालांकि, किसी को अपनी दक्षता के भीतर रहने के लिए सावधान रहना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति एक विशेष स्थिति को संभालने के योग्य/सक्षम नहीं है, तो सक्षमता के नैतिक सिद्धांत सुझाव देते हैं कि उसे अन्य समाज कार्य व्यावसायिकों के मुवक्किलों के साथ संबंध रखना चाहिए जो आवश्यक कौशलताओं और ज्ञान का मालिक हो।

जब मुवक्किल विभिन्न प्रकार के लोगों के बीच सामाजिक समस्याओं को अनुभव करते हैं तो उन्हें सहायता प्रदान की जा सकती है जैसे–परिवार, मित्र, पड़ोसी, धर्मदान, कार्यकर्त्ता और व्यवसायिकों के बींच व्यवसायिक सहायता से अन्य प्रकार की सहायता को व्यवसायिक ज्ञान और कौशलों के प्रयोग से अलग/भिन्न किया जाता है। जब एक मुवक्किल सहायता मांगता है तो एक समाज कार्यकर्त्ता केवल उसे अपने व्यक्तिगत अनुभव या अर्न्तज्ञान से सलाह नहीं दे सकता। समाज कार्यकर्त्ता को स्थिति के अनुसार उचित व्यवसायिक ज्ञान और कौशलताओं का प्रयोग करना चाहिए।

सक्षमता कुछ ऐसी नहीं है जिसे हम एक कोर्स के पूरा होने के माध्यम से प्राप्त करते हैं। सक्षमता प्राप्त करना एक सतत् प्रक्रिया है। सभी समाज कार्यकर्त्ता योग्यता प्रापत करने के लिए निरंतर अभ्यास कर सकते हें। सीख सकते हैं कि कैसे निश्चित मामलों को प्रभावपूर्ण तरीके से कार्यान्वित किया जाता है और विभिन्न जनसंख्या समूहों के साथ नए शोध खोजकर ज्ञान को बढ़ाया जाता है। इस प्रकार सक्षमता के लिए प्रतिबद्धता सतत् प्रयत्न है। सक्षमता के कुछ प्रमुख घटक इस प्रकार है।

सी – कम्यूनीकेशन (संचार)

ओ – ओबज़रवेशन (अवलोकन)

एम – मैंटर (उपदेशक)

पी – प्रूडंट (बुद्धिमान)

ई – सम्पथी (सहानुभूति)

टी – टाईम मैनज़मेंट (समय संचालन)

ई – एनेरजैटिक (शक्तिशाली)

एन – नॉन जजमैंट (अनिर्णय)

सी – क्रिटिकल एनलाइजर (आलोचनावादी विश्लेषक)

ई – एनथयूज़ियासटिक (उत्साह/उत्साही)

- **संचार**

'संचार एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्तियों के बीच व्यवहार के लिए प्रतीकों, संकेतों की एक साधारण प्रणाली के द्वारा जानकारी का आदान–प्रदान किया जाता है' (वेबस्टर, 1983)। क्षमता के एक घटक के रूप मे संचार का अर्थ है कि समाज कार्यकर्त्ता की योग्यता अपने मुवक्किल के साथ उचित रूप से, स्पष्टता से, विशेषज्ञता से, संबद्धता से, प्रभावशीलता और औचित्य के साथ अच्छी तरह से बातचीत करना है।

- **अवलोकन**

अवलोकन सीखने और विकास का महत्वपूर्ण भाग है। क्षमता के घटक के रूप में, अवलोकन कार्यकर्त्ता को अपने ज्ञान, कौशलों ओर व्यावसायिक जीवन में व्यवहार का विकास करने के योग्य बनाता है और वह व्यक्तियों, समूहों और समुदायों के साथ कार्य करने में प्रतिबिंबित होता है।

- **उपदेशक**

उपदेशक एक पथप्रदर्शक होता है जो अपने शिष्य को सही रास्ता खोजने में सहायता कर सकता है और उनकी समस्याओं के समाधानों का विकास करने में उनकी सहायता कर सकता है योग्यता के घटक के रूप में निगरानी/परामर्श समाज कार्यकर्त्ताओं को अपनी क्षमता बढ़ाने, अपनी कौशलों का विकास करने में प्रोत्साहित करता है और सहायता देता है तथा समाज कार्य हस्तक्षेप प्रक्रिया में उनकी योग्यताओं और प्रदर्शन में सुधार करता है।

- **बुद्धिमान**

बुद्धिमान का अर्थ है, 'व्यवहारिक मामलों को ज्ञान पूर्वक सुलझाना या विविध परिस्थितियों में सही निर्णय लेना। बुद्धिमानी का नैतिक गुण व्यवसायिक समाज कार्यकर्त्ताओं को विविध समस्याओं से निपटने के लिए मजबूत बनाता है/शक्तिशाली बनाता हैं

- **सहानुभूति**

योग्यता के घटक के रूप में सहानुभूति का अर्थ समाज कार्यकर्त्ताओं की अनुभव/महसूस और समझने की योग्यता है कि कोई व्यक्ति कितने अच्छे संभावित तरीके से अनुभव/महसूस कर रहा है। इसे और अधिक समझने के लिए सहानुभूति का अर्थ है अन्य व्यक्ति के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित करना और उसकी समस्याओं को समझना। यह मुवक्किलों के साथ अच्छे संबंधों या घनिष्ठ संबंधों का निर्माण करने की नींव है।

- **समय संचालन**

समय संचालन योजना की प्रक्रिया या नियम है और विशेषकर प्रभावशाली और कार्य क्षमता में वृद्धि करने के लिए, विशेष गतिविधियों पर समय की मात्रा गुजारने पर सर्त

नियंत्रण करना हैं यह समाज कार्यकर्त्ताओं को प्रभावशाली बनने के योग्य बनाएंगे और ज्ञान और कौशलों का उपयुक्त प्रयोग करेंगे तथा सेवाएं प्रदान करेंगे।

- **शक्तिशाली**

शक्तिशाली व्यक्ति सरल और सहज होते हैं । वे स्पष्ट सोचने में सक्षम होते हैं औरकठिन परिस्थितियों में भी उनका पूर्णतावादी योजना होती है। शक्तिशाली होने की योग्यता समाज कार्यकर्त्ताओं को प्रभावशाली समस्याओं को सुलझाने वाला समाधानकर्ता बनाते हैं। जानकारी का विकास और आत्मसात करने के लिए सक्षम बनाने की उनकी योग्यता व्यक्तियों, समूहों, परिवारों और समुदायों के साथ समाज कार्य हस्तक्षेपों में वृद्धि करेगी।

- **नॉन जजमेंटल (अनिर्णय)**

अनिर्णय व्यवहार का गुण किसी भी सम्बन्ध को सुधारने के लिए आवश्यक मूलभूत योग्यताओं में से एक है। निरपेक्ष और नाकारात्मक निणर्यों से स्वयं को और अन्य को रोकना समाज कार्यकर्त्ताओं की योग्यता और बेहतर संबंधों के विकास के लिए सहायता करेगा।

- **आलोचनावादी विश्लेषण**

यह समाज कार्यकर्त्ताओं को मामलों के विषय में वस्तुगत दृष्टि से और विवेचनात्मक दृष्टि से सोचने के योग्य बनाएंगे और अभियान की कुशल परिभाषित योजना का विकास करेंगे और स्थिति के पूर्णतावादी अवलोकन के विकास के लिए उनकी सहायता करता है।

- **उत्साहपूर्ण**

उत्साह का अर्थ है अत्यंत आनंद, खुशी और रुचि। यदि समाज कार्यकर्त्ता उत्साहपूर्ण है तो वह अपने कार्य के अंदर नया उत्साह और नया रचनात्मक कौशल ला सकते हैं।

चिथम और शिवर (1996,1998) व्यवसायिक सक्षमता के पूर्णतावादी आदर्श की बात करते हैं, वे योग्यता और सक्षमताओं के अन्तःसमबद्ध करने के पांच समूहों का समावेश करते हैं उनकी सक्षमता के ढ़ांचे में पांच आयामों का समावेश है।

- **ज्ञानात्मक सक्षमता**

सैद्धांतिक, वैचारिक और औपचारिक अन्तर्निहित ज्ञान जो अनुभवों द्वारा प्राप्त होता है उसका उल्लेख करती है।

- **कार्यात्मक सक्षमताएं**

(कौशलताएं या जानना) वे चीजें है कि एक व्यक्ति जो दिए हुए व्यवसायिक क्षेत्र में कार्य करता है वह कार्य करने के योग्य होना चाहिए और उसे व्यक्त करने/या स्पष्ट करने के योग्य होना चाहिए।

- **व्यक्तिगत सक्षमता**

व्यवहारिक सक्षमताएं, 'कैसे व्यवहार करना है इसका ज्ञान होना कार्य में प्रभावशाली या श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए व्यक्ति की अपेक्षाकृत स्थायी विशेषताओं के रूप में परिभाषित किया गया है।

- **नैतिक सक्षमताएँ**

नैतिक योग्यताओं को समुचित व्यक्तिगत और व्यवसायिक मूल्यों के अधिकार और इन कार्य संबंधित स्थितियों के आधार पर निर्णय लेने की योग्यता के रूप में परिभाषित किया गया है।

- **मेटा सक्षमताएँ**

सीखने और पुर्नविचार के साथ–साथ अनिश्चितता का सामना करने की सक्षमता से संबंधित है।

6.3 सक्षमता के चरण

प्रारंभ में कहा जाता था कि, 'किसी भी नए कौशल को सीखने के लिए चार चरण होते हैं, सक्षमता के वे चार चरण अंतर्राष्ट्रीय गार्डन प्रशिक्षण के कर्मचारी, नॉल ब्रुश द्वारा मूलतः प्रस्तुत एक शिक्षा प्राप्ति का नमूना/आदर्श था। 1970 में धारणा का प्रथम प्रारुप बनाया गया, 'सचेतन योग्यता' शिक्षा प्राप्ति के नमूने (लर्निंग मॉडल) की मनोवैज्ञानिक अवस्थाओं के रूप में व्याख्या की गई जो कि अयोग्यता से योग्यता में रुपांतरित करने के कौशल में सम्मिलित है या पूर्णतया आधिपत्य। सक्षमता के विभिन्न चरणों को समझने के लिए निम्नलिखित खंड आप की सहायता करेंगे।

अचेतन सक्षमता

व्यक्ति नहीं समझते या जानना चाहते कि कोई कार्य कैसे करना है और कमी को पहचानने की आवश्यकता अनुभव नहीं होती। वे कौशल की उपयोगिता से इंकार/मना कर सकते हैं। किसी भी व्यक्ति को अपनी अवश्य पहचाननी चाहिए, और अगले चरण पर आगे बढ़ने से पहले, नए कौशल के मूल्य को अवश्य जानना चाहिए। व्यक्ति का इस चरण पर समय गुजारना सीखने के लिए उत्साह की क्षमता पर निर्भर करता हैं

चेतन सक्षमता

यद्यपि व्यक्ति को समझ नहीं आता या जानता नहीं है कि कोई कार्य कैसे करना है, कमी को पहचानने की आवश्यकता अनुभव नहीं होती इसके अतिरिक्त कमी को संबोधित करने में नए कौशल के मूल्य की भी आवश्यकता नहीं होती। इस चरण पर सीखने की प्रक्रिया के लिए गलतियों का होना संपूर्ण/अनिवार्य हो सकता है। गलतियों से सीखना या करते हुए सीखना वाक्यांश का यहां उल्लेख करना उचित हो सकता है।

चेतन सक्षमता

व्यक्ति जानता या समझता है कि कोई कार्य कैसे करना है, फिर भी, निरुपित कौशल या ज्ञान में एकाग्रता की आवश्यकता होती है। इन्हें चरणों में विभाजित किया जा सकता है, और कार्यान्वित नए कौशल में विशाल चेतन सम्मिलित है।

अचेतन सक्षमता

व्यक्ति के पास एक कौशल के साथ बहुत अधिक कार्य होता है जो कि 'द्वितीय प्रकृति' बनती है और इसे आसानी से प्रदर्शित किया जा सकता है। इसका नतीजा यह होता है कि कौशल का प्रदर्शन निष्पादित अन्य कार्य करते हुए किया जा सकता है। व्यक्ति दूसरों को शिक्षा देने के योग्य हो सकता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि उसने कैसे और कहां से शिक्षा प्राप्त की थी।

उपर्युक्त विभिन्न चरण आवश्यक सक्षमताओं के साथ दुर्बोध मूल व्यावसायिकों के लिए समाज कार्य प्रशिक्षार्थी की यात्रा की तस्वीरें प्रस्तुत करती हैं। यह बिल्कुल सुस्पष्ट है कि समाज कार्यकर्त्ता, सीखने और कौशलताओं का विकास करने की प्रक्रिया में इन सभी चरणों से निकलते हैं।

6.4 सक्षमताओं के प्रकार

सक्षमताओं का विभिन्न प्रकारों से उल्लेख किया गया है निम्नलिखित मार्ग आपको विभिन्न प्रकारों और प्रसंगों के विषय में बेहतर सुझाव देने में सहायता करेंगे जिसमें इसका अवलोकन किया जाता है।

मूल सक्षमताएँ / दक्षताएँ

कौशलताएं, दक्षताएँ और व्यवहार मूल योग्यताएं हैं जिन्हें संगठन के सभी सदस्यों के लिए उनके कार्य या स्तर (संयुक्त राष्ट्र) के द्वारा महत्वपूर्ण माना जाता है। दूसरे शब्दों में यह संगठन के लिए योगयताएं या एकमात्र तकनीकी सुविज्ञता है एक संगठनात्मक मूल योग्यता संगठन की अनुकूल क्षमता है। जी.ओ. की कुछ सहायक एजेंसियां और कल्याण एजेंसियों के पास विशेष क्षेत्र में अनुकूल योग्यता होती है जैसे बाल कल्याण, समुदाय विकास, केसवर्क, समाज कार्य, जनता रुचिवाद, संसाधन संघटन, वकालत आदि। समाज कार्य की भूसम्पत्ति विशेषज्ञ के क्षेत्र पर निर्भर करती है और मानव सेवा संगठन कार्य करने के लिए क्षेत्र का चुनाव करते हैं।

तकनीकी सक्षमताएँ / दक्षताएँ

तकनीकी योग्यताएं वो होती है जिनका सम्बन्ध कौशलताओं और ज्ञान से होता है जो विशेष काम को सही ढ़ंग से करने के लिए व्यक्ति के लिए आवश्यक होती है (ब्रिटीश परिषद) पद पर आधारित, दोनो तकनीकी और प्रदर्शन योग्यताओं का ध्यानपूर्वक महत्व रखना चाहिए क्योंकि रोजगार निर्णय निर्मित किए जाते है। उदाहरण के लिए, संगठन तकनीकी कौशलताओं के आधार पर अकेले ही प्रोत्साहन देते हैं या किराया देने की ओर अभिमुख होते हैं, जो अन्य योग्यताओं का बहिष्कार करके प्रदर्शन संबंधित मामलों में अनुभव की वृद्धि करते हैं (जैसे –सोफटवेयर संबंधित प्रबंधक कौशलताओं के विरुद्ध रुपरेखा बनाता है)। व्यावसायिक समाज कार्य के अभ्यास में, हमें तकनीकी योग्यताओं से बाहर अपने उद्देश्य को पहचानने की आवश्यकता होती है यद्यपि प्रौद्योगिकी में विशेषज्ञ वर्तमान प्रतियोगिता और आने वाले वर्षों के भीतर अवहेलना नहीं कर सकते।

व्यवहारिक सक्षमताएँ / दक्षताएँ

व्यवहारिक दक्षताएँ दर्शनीय और दृष्टिकोण व्यवहार, ज्ञान, कौशलताएं योग्यताएं और अन्य विशेषताएं होती हैं जो संगठन में व्यक्तिगत सफलता के लिए योगदान देती है (जैसे – समूहकार्य और सहकारिता, संचार)। व्यावहारिक योग्यताएं काम की अपेक्षा व्यक्ति के लिए सुनिश्चित होती है (जेनेट हेचत, 2008)। व्यक्तिगत प्रदर्शन सक्षमताएँ संगठनात्मक योग्यताओं और क्षमताओं की अपेक्षा अधिक सुनिश्चित होती है। उसी रूप में, यह महत्वपूर्ण है कि इनहें सुविज्ञता की उपाधि औरव्यावहारिकता को मान्य ठहराने के लिए परिमेय व्यवहारिक प्रसंग में परिभाति किया जाना चाहिए (जैसे–योग्यता का विकास)। व्यावसायिक समाज कार्य प्रक्रिया में प्रत्येक एंजेसी के लिए व्यक्तियों की व्यावहारिक योग्यताएं बहुत महत्वपूर्ण है। समाज कार्य व्यावसायिक सांस्कृतिक अति संवेदनशीलता के नैतिक सिद्धांतों, सामाजिक न्याय, संपूर्णता, कठिन परिश्रम, व्यवसाय के प्रति वफादारी और देशभक्ति जैसी संपत्ति के अधिकारी होते हैं जो एंजेसियों और स्वयं सहायता समूहों

की सहायता करते हैं। इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यावसायिक समाज कार्यकर्त्ता से आशा की जाती है कि व्यावहारिक योग्यता में वृद्धि करने के लिए वे समाज कार्य के प्रधान मूल्यों को आत्मसात् करें।

संचालन सक्षमताएँ

संचालन योग्यताओं में विशेष गुण और योग्यताएं होती हैं जो व्यक्ति की संचालन क्षमता की व्याख्या करती है। नेतृत्व विशेषताओं के विपरीत, संचालन विशेषताएं उचित प्रशिक्षण और संसाधनों के साथ सुशिक्षित और विकसित की जा सकती हैं। इस वर्ग में योगयताओं को प्रभावशाली संचालन के लिए उचित व्यवहार का प्रदर्शन करना चाहिए। जब यह समाज कार्य की विभिन्न प्रणालियों जैसे समूह कार्य, समुदाय संगठन, सामाजिक कल्याण प्रशासन, संसाधन संघटन, वकालत नेटवर्किंग आदि के प्रयोग में आता है तो संचालन योग्यताएं बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। संक्षेप में, संचालन योग्यता किसी व्यक्ति की योग्यता जो दिए हुए समय में उपलब्ध संसाधनों के सर्वोत्तम उपयोग द्वारा उचित ढ़ंग से चीजों का संचालन/प्रबंध करती है।

6.5 सक्षमता का निर्धारण करने वाले कारक

सक्षमता का निर्धारण करने वाले मुख्य कारक इस प्रकार हैः

प्रर्वतक और सर्जनात्मकता

एक व्यावसायिक समाज कार्यकर्त्ता को अपने कार्य की योजना बनानी चाहिए और बिना विस्तृत निर्देशों के कार्यों को पूरा करना चाहिए। उन्हें रचनात्मक सुझाव बनाने चाहिए जिसे वे अनुभव द्वारा प्राप्त करेंगे। एक सक्षम व्यक्ति अग्रसक्रिय होता है और पहले ही से समस्याओं या सुअवसरों के लिए तैयार होता है। हमेशा अतिरिक्त जिम्मेदारियों की जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार होते हैं। समस्याओं के अनूठे/ अद्भुत हलों का निर्माण करते हैं और मौजूदा समस्याओं के लिए संभावित हल निकालने के लिए नई तकनीक का मूल्यांकन करते हैं जिसे उनकी अन्य विशेषता के रूप में आंका जा सकता है। अग्रसक्रियता और सर्जनात्मकता व्यावसायियों की हस्तक्षेप के क्षेत्र में समाज कार्य के साक्ष्य आधारित कार्य के लिए सहायता करते हैं। सामाजिक मीडिया और अन्य तकनीकें विभिन्न प्रणालियों में उपयोग करने के लिए प्रयोग किए जा सकते हैं यदि क्षेत्र में समाज कार्य हों।

निर्णय

एक समाज कार्यकर्त्ता को सही निर्णय लेने चाहिए और वह भावनाओं की अपेक्षा तथ्य के आधार पर होने चाहिए। कुशलतापूर्वक समस्याओं का विश्लेषण करने की योग्यता और समाधानों तक पहुंचने के लिए तर्क सिद्ध संबंध अच्छे निर्णय का भाग है। समाज कार्य के सहायक व्यवसाय में एक कार्यकर्त्ता हस्तक्षेप के लिए स्थापित लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए समाज कार्य की विभिन्न प्रणालियों का उपयोग करते समय निर्णय के लिए अपनी कौशलता का प्रयोग करता है।

सहकारिता और समूह कार्य

एक समाज कार्यकर्त्ता दूसरों से काम करवाने के लिए सद्भावनापूर्ण ढ़ंग से कार्य करता है और निर्देशों तथा प्रक्रियाओं के लिए सकारात्मक रूप से भी प्रतिक्रिया दिखाता है। वह कर्मचारियों, सह–कार्यकर्त्ताओं, मित्रों और संचालकों के साथ अच्छे से कार्य करने के योग्य होता है और प्रत्येक व्यक्ति के साथ योजना से संबंधित काम की सूचना का

सहभाजन अवश्य ही करता है। वह परियोजना पर प्रभावपूर्ण ढ़ंग से कार्य करता है जिसमें प्रतिकूल कार्यात्मक रेखाओं की जटिलता होती है और कार्य समूह के भीतर और समूह के बाहर सहकारिता को दृढ़ बनाने में सहायता करता है। सहकारिता और समूह कार्य किसी भी सफलता पूर्वक हस्तक्षेपों के लिए महत्वपूर्ण है। ये कारक समुदाय, संगठन, समाज कार्य, वकालत, संसाधन संघटन, नेटवर्किंग इसक अतिरिक्त अभ्यास पर आधारित योग्यता से संबंधित है।

कार्य की गुणवत्ता

लक्षित योजना से संबंधित अंतिम तिथि के दबाव के होते हुए भी, एक व्यावसायिक उच्च स्तर बनाए रखता है। वे अपनी गलतियों को सुधारता है और हमेशा बिल्कुल सही, संपूर्ण, व्यावसायिक कार्य को प्रस्तुत करता है। अपने से पहले व्यवसाय के प्रति वफादारी, सांस्कृतिक अति संवेदनशीलता, कठिन परिश्रम, उत्तरदायित्व और वचनबद्धता, सेवा और सत्यनिष्ठा का नैतिक सिद्धांत कार्यकर्त्ता को उच्च स्तर का उत्तरदायित्व लेने के योग्य बनाता है और यह अपने आप व्यवसाय और मुवक्किलों के सर्वोत्तम रुचियों में किए गए कार्य की योग्यता है।

विश्वसनीयता

एक व्यावसायिक समाज कार्यकर्त्ता व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार होता है और अनुकूल तरीके से, समय पर कार्य पूरा करता है। वे निर्दिष्ट कार्य को पूरा करने के लिए अवश्य ही घंटो कार्य करेगा या कार्य को पूरा करने के लिए अतिरिक्त समय भी कार्य करेगा। वे नियमित और समयनिष्ठ होते हैं और कार्य के लिए तैयार रहते हैं। वे संगठन की श्रेष्ठ अभिरुचियों में कार्य करते हैं और सर्वोत्तम कार्य करने के लिए हर संभव तरीके से समर्पित होते हैं। वे वचनबद्धता को पूरा करते हैं और इस तरह एक व्यक्ति की विश्वसनीयता की योग्यता को सूचित करते हैं। इस प्रकार के कार्यकर्त्ता की समाज कल्याण एंजेंसियों और ग्राहकों द्वारा बहुत अधिक मांग होती है। कार्यकर्त्ता की यह योग्यता बेहतर विश्वास के लिए मुवक्किलों को भी योग्य बनाती है। इस प्रकार व्यावसायिक समाज कार्य प्रक्रिया में विश्वसनीयता बहुत जरुरी है।

सुरक्षा के लिए वचनबद्ध

एक समाज कार्यकर्त्ता समझता है, प्रोत्साहित करता है और समाकलित सुरक्षा संचालक के नियमों का पालन करता है। वह व्यावसाय की नीति संहिता और उसके सिद्धांतों का पालन करता है और व्यवसाय के ढ़ांचे के भीतर जिम्मेदारियां लेता है। सहायक व्यवसाय में ग्राहक की सुरक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण हैं और एक व्यावसायिक समाज कार्यकर्त्ता ग्राहकों की सुरक्षा के लिए वचन देता है चाहे व्यवसाय की नीति संहिता के ढ़ांचे में विस्तृत संभावना भी हो।

विविधता का समर्थन करना

व्यक्ति की योग्यता और गरिमा के मूल्यों का और मानवीय संबंधो के महत्व को ध्यान में रखते हुए, कार्यकर्त्ता सभी लोगों के साथ आदर से व्यवहार करते हैं। वे विभिन्न दृष्टिकोणों को महत्व देते हैं, विविध प्रशिक्षण अवसरों में भाग लेते हैं, बहुसांस्कृतिक कार्यों के लिए सहायक कार्य वातावरण प्रस्तुत करते हैं, व्यक्तिगत भेदभावों के लिए संवेदनशीलता दर्शाते हैं, जाति, लिंग, रंग, धर्म या लैंगिक स्थिति का सम्मान करते हुए दूसरों के साथ उचित रूप से व्यवहार करते हैं। वे सीखने के अवसरों के रूप में भेदभावों के साथ तादात्मय स्थापित करते हैं और इकट्ठेक कार्य करके लाभ प्राप्त करते हैं।

किसी भी समाज में समर्थन और विविधता के महत्व को पहचानना समाज कार्य की प्रक्रिया के लिए आवश्यक है।

कार्य का ज्ञान या तकनीकी ज्ञान

एक व्यावसायिक शिक्षित समाज कार्यकर्त्ता किसी कार्य के लिए तकनीकी ज्ञान, कौशलताएं, साधन, प्रक्रियाएं और सामग्री प्रस्तुत करता है। वे आंतरिक समस्याओं और मामलों को पहचान कर ज्ञान का प्रयोग करते हैं और अतिरिक्त तकनीकी ज्ञान और कौशलताओं का विकास करने के लिए कार्य करते हैं जो व्यवसाय और ग्राहक व्यवस्था में सहायता करेंगे। ये नया ज्ञान और कौशलताएं लिपिबद्ध की जाएंगी और समाज कार्य के योग्यता के मूल्य के भाग की तरह समाज कार्य भाई–चारे के लिए उपलब्ध कराए जाएंगे।

कार्य की मात्रा

एक कुशल शिक्षित समाज कार्यकर्त्ता कार्य की उचित भाग को प्रस्तुत करताा है, अनावश्यक विस्तार से नहीं फंसता, अनेकों योजनाओं का संचालन करने के योग्य होता है (अनेकों कार्य); अर्थपूर्ण और व्यवहारिक ढ़ंग से अत्यावश्यक परियोजना का निर्धारण करने के योग्य होता है, लोगों और कार्यों की सूची तैयार करता है और उन्हें सुव्यवस्थित करता है। कठिन परिश्रम समाज कार्य के नैतिक सिद्धांतों में से एक है। एक व्यावसायिक अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्र से संबंधित कार्य करने में संकोच नहीं करता। किसी व्यक्ति के लिए कार्य की योग्यता के साथ, कार्य की मात्रा का भी महत्व होता है। विशेषकर तब जब वह एजेंसी के द्वारा कार्यरत हो/नौकरी पर रखा हो। कार्यकर्त्ता को उसके बी.एस.डब्ल्यू. या एम.एस.डब्ल्यू कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षण दिया जाता है ताकि कार्यकर्त्ता कुशल प्रदर्शन करने के योग्य बने।

संचार

एक समाज कार्यकर्त्ता को प्रभावपूर्ण ढ़ंग से लिखने और बोलने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, जैसे–नौकरी पद के लिए उचित सम्मेलनों का प्रयोग अपने विचारों को स्पष्ट रूप से और संक्षिप्त रूप में प्रस्तुतकरना; उदारता और ईमानदारी व्यक्त करना, सभाओं और प्रतिक्रिया अधिवेशन के समय अच्छा श्रोता बनना, अपने विचारों के पीछे कारणों का उल्लेख करना, दूसरों से उनके विचारों और प्रतिक्रियाओं के बारे में पूछना, दूसरों को बात समझ आ गई है इसे सुनिश्चित करने के लिए प्रश्न पूछना, दूसरों के साथ संचार के सभी उचित साधनों का प्रयोग करते हुए व्यावसायिक दृष्टिकोण से व्यवहार करना, और मूल्यांकन को प्रस्तुत करते समसय सोच–विचार और व्यवहार कौशल का प्रयोग करना। समाज कार्य की किसी भी प्रणाली का अभ्यास करने के लिए समुचित संचार कौशलताओं को प्राप्त/अर्जित करने की आशा की जाती है।

समस्या का हल

एक व्यावसायिक समाज कार्यकर्त्ता विभिन्न प्रकृति की समस्याओं को सुलझाने के लिए प्रशिक्षित सामाजिक विशेषज्ञ होता है। वह विचार करता है कि कैसे एक समस्या दूसरी इकाईयों को प्रभावित करेगी इसलिए वह निर्णय लेने से पहले जानकारी एकत्रित करता है। वह ग्राहकों की सहायता करने के लिए समस्याओं का समाधान खोजने में वास्तविकताओं के प्रतिकूल विकल्पों को महत्व देता है और उचित निर्णय करने में सफलता प्राप्त करता है। वह प्राथमिकताओं, अन्तिम तिथियों और निर्देशों में परिवर्तन लाने के लिए अनुकूल होता है। वह उन प्रक्रियाओं को निकालने/हटाने के लिए कार्य करता है जिनमें नैतिक सिद्धांत जुड़े हुए नहीं होते और काम के बोझ केक होते हुए भी कार्रवाई करने के लिए

तत्पर रहता है। आलोचना या दुलर्भ अन्तिम तिथियां उसे प्रभावित नहीं करती। जितना अधिक वह अनुभवों को प्राप्त करता है उतनी ही अधिक उसमें कठिन समस्याओं को सुलझाने की योग्यता आती है।

लचीलापन

एक व्यावसायिक से आशा की जाती है कि वह खुले विचारों वाला व्यक्ति हो और नई जानकारी के आधार पर विचारों में परिवर्तन लाए। वह विभिन्न प्रकार के अनेक कार्य करता है और मांगों के परिवर्तन के अनुसार शीघ्र ही केन्द्रबिन्दु बदलने के लिए योग्य होता है। वह प्रभावशाली ढ़ंग से एक कार्य से दूसरे कार्य तक परिवर्तनों का संचालन करता है। ग्राहकों की विभिन्न आवश्यकताओं के अनुकूल बनता है।

कर्मचारी विकास

समाज कल्याण प्रशासन की प्रणाली के प्रयोग से, एक व्यावसायिक निरंतर सीखने और प्रतिक्रिया करने के लिए चल रहे सुअवसरों द्वारा अपने और दूसरों के प्रदर्शन को सुधारने का प्रयास करता है। वह रचनात्मक रूप से सहायता करता है और दूसरों को उनके व्यावसायिक विकास में परीक्षा के लिए तैयार करता है/सिखाता है और 'कर सकते हो' के दृष्टिकोण का प्रदर्शन करता है। विशिष्टता दिखाने के लिए सहयोगियों को प्रोत्साहित करता है और समूह मनोवृति का विकास करता है ताकि एजेंसी में स्थिरता सुनिश्चित हो जहां ग्राहक की संतुष्टि को प्रथम प्रधानता दी जाए।

सेवा के लिए आवेदनों के प्रति क्रियाशीलता

कार्यकर्त्ता समय से और संपूर्ण तरीके से सेवा के लिए आवेदनों के प्रति उत्तर देते हैं और ग्राहक की संतुष्टि को सुनिश्चित करने के लिए जो आवश्यक है वह काय्र करते हैं। प्रक्रिया में ग्राहक की आवश्यकताओं को प्राथमिकता दी जाती है और ग्राहक की संतुष्टि का मूल्यांकन करने के लिए अनुवर्ती कार्रवाई की जाती है। समाज कार्यकर्त्ता के मुख्य कार्यों में से एक ग्राहक को महत्व देना और समस्या के समाधान प्रक्रिया में उसके साथ कार्य करना है।

6.6 समाज कार्य के मूल्य के रूप में सक्षमता/सुयोग्यता

एम.एस.डब्ल्यू. की नीति संहिता व्यक्त करती है कि समाज कार्यकर्त्ताओं को सेवाएं प्रदान करनी चाहिए और स्वयं को अधिकारी के रूप में अपनी शिक्षा, प्रशिक्षण, अनुज्ञा, प्रमाणीकरण, परामर्श प्राप्ति, अधीक्षण अनुभव या अन्य प्रासंगिक व्यावसायिक अनुभवों की सीमाओं के भीतर प्रस्तुत करते हैं। यह आशा की जाती है कि जब एक बार कार्यकर्त्ताओं को तैयार कर दिया जाता है तो उन्हें वास्तविक क्षेत्रों में सेवाएं प्रदान करनी चाहिए या उन्हें हस्तक्षेप तकनीकों या दृष्टिकोण जो उनके लिए नए हो का प्रयोग करने देना चाहिए। ये केवल तभी होना चाहिए जब वे उचित अध्ययन, प्रशिक्षण परामर्श और निरीक्षण उन लोगों से प्राप्त करे जो उन हस्तक्षेपों और तकनीकों में सक्षम हों। जब आमतौर पर अभ्यास के लिए प्राप्त क्षेत्र में मान्यता प्राप्त आदर्श विद्यमान नहीं होते तो समाज कार्यकर्त्ताओं को सावधानीपूर्वक निर्णय का कार्य करना चाहिए और अपने कार्य की योग्यता को सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार कदम उठाने चाहिए (उचित शिक्षा, अनुसंधान, प्रशिक्षण, परामर्श, और निरीक्षण सम्मिलित हैं) और मुवक्किल को हानि से/नुकासान से बचाना चाहिए। एक व्यक्ति हमेशा दूसरे लोगों की सहायता कर सकता है जो उस क्षेत्र में निपुण हो। यदि वह ग्राहक के कल्याण से संबंधित मामलों को संभालने

में अयोग्यता/असक्षम अनुभव करता है तो उसे वह दूसरे व्यक्ति को दे देना चाहिए जो उस क्षेत्र में सक्षम/योग्य हो।

6.7 नीति संहिता में प्रतिबिंबित सक्षमता का मूल्य

भारतीय समाज कार्य में विभिन्न संस्थाओं के समाज कार्यकर्त्ताओं की नीति संहिता को अपनाया है जिसमें एन.ए.एस.डब्ल्यू., सी.ए.एस.डब्ल्यू,ए.ए.एस.डब्ल्यू सम्मिलित हैं और रशिया संस्था के समाज कार्यकर्त्ता योग्यता के मूल्य के आधार पर व्यावसायिक समाज कार्यकर्त्ताओं से निश्चित आकांक्षाओं को नियमबद्ध करते हैं। उनके द्वारा उल्लेखित आकाक्षांए निम्नलिखित हैं:

- समाज कार्यकर्त्ताओं को मानवीय व्यवहार में वातावरण और उसके कार्य की समझ होनी चाहिए और सभी समाजों में विद्यमान योग्यताओं की पहचान होनी चाहिए।
- समाज कार्यकर्त्ताओं को अपने मुवक्किलों की पृष्ठभूमि के आधार का ज्ञान/जानकारी होनी चाहिए।
- समाज कार्यकर्त्ताओं को सामाजिक विभिन्नता की प्रकृति को समझने का प्रयत्न और उसके बारे में शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए और जाति, गैर–जातीय, राष्ट्रीय उत्पति, रंग, लिंग, लैंगिक अनुकूलन, आयु, वैवाहिक स्थिति, राजनीतिक विश्वास, धर्म और मानसिक या शारीरिक अयोग्यता के कारण होने वाले अत्याचारों पर कार्य करना चाहिए।
- समाज कार्यकर्त्ताओं को केवल विद्यमान योग्यता के आधार पर नौकरी या उत्तरदायित्व को स्वीकार करना चाहिए या आवश्यक योग्यता को प्राप्त करने के उद्देश्य से काम करना चाहिए।
- समाज कार्यकर्त्ताओं को व्यावसायिक अभ्यास और व्यावसायिक कार्यों के प्रदर्शन में निपुणता प्राप्त करने और उसे बनाए रखने के लिए संघर्ष/मेहनत करनी चाहिए।
- समाज कार्यकर्त्ताओं को समाज कार्य से संबंधित प्रकट ज्ञानके साथ सक्रिय रहना चाहिए और गंभीर रूप से जांच करनी चाहिए।
- समाज कार्यकर्त्ताओं को नियमित रूप से व्यावसायिक साहित्यक रचना की समीक्षा करनी चाहिए और समाज कार्य प्रक्रिया और समाज कार्य नीतियों से संबंधित निरंतर शिक्षा में भाग लेना चाहिए।
- समाज कार्यकर्त्ताओं को व्यवसाय के मूल्यों, नीतियों और मापदंडों के अनुसार कार्य करने होंगे और पहचानना होगा कि कैसे व्यक्तिगत और व्यावसायिक मूल्य ग्राहकों की आवश्यकताओं के अनुकूल या प्रतिकूल हो सकते हैं।
- समाज कार्यकर्त्ताओं को अपने स्वयं व्यक्तिगत मूल्यों और विश्वासों की समझ का विकास कारने का प्रयत्न करना होगा जो लोगों के जीवन में बहु सांस्कृतिक मान्यताओं के महत्व को आंकने का एक तरीका/ढ़ंग होगा।
- समाज कार्यकर्त्ताओं को विशेष ज्ञान होना चाहिए और उसका निरंतर विकास करना चाहिए और वे जिन मुख्य ग्राहक समूहों के लिए कार्य करते हैं उनके इतिहास, रीति–रिवाज, मूल्यों, परिवार व्यवस्था और कलात्मक अभिव्यक्ति के बारे में जानना चाहिए।

- समाज कार्यकर्त्ताओं को उचित प्रणाली संबंधित दृष्टिकोणों, कौशलताओं और तकनीकों का प्रयोग करना चाहिए जो कि कार्यकर्त्ता की सहायक प्रक्रिया में संस्कृति की भूमिका की समझ को प्रतिबिम्बित करें।

- समाज कार्यकर्त्ताओं को उदार समाज और समुदाय में उपलब्ध सेवाओं के प्रयोग में निपुण होना चाहिए और उसके बारे में जानकार होना चाहिए।

एक पेशेवर व्यावसायिक समाज कार्यकर्त्ता में कार्य के लिए प्रवीणता होनी चाहिए और व्यक्तियों, परिवारों, समूहों, संगठनों और समुदायों को इकट्ठा करके मूल्यांकन करना चाहिए, उनकी परिस्थितियों और आवश्यकताओं को समझना चाहिए। समाज कार्यकर्त्ता में हस्तक्षेप के सबसे अधिक रूप को समझने के लिए व्यावसायिक संबंध को स्थापित करने की योग्यता होनी चाहिए, जब वे व्यक्तियों, परिवारों, समूहों, संगठनों, और समुदायों के साथ उनकी आवश्यकताओं, परिस्थितियों, संकटों, मुख्य विकल्पों और संसाधनों के बारे में चुनाव करने की सूचना देकर उनकी सहायता करने के लिए हस्तक्षेप करे। उन्हें हस्तक्षेप रणनीति का मार्गदर्शन करने के लिए चुनावों और आवश्यकताओं का मूल्यांकन करना चाहिए।

दूसरा क्षेत्र जो कार्य के लिए आवेदनों की अत्यावश्यकता और आवश्यक निधि का मूल्यांकन करने के लिए समक्षता को अनिवार्य बना दे। आवश्यकताओं को प्राथमिकता के आधार पर रखने और उन्हें योजना बनाने, कार्यान्वित करने तथा जरुरतों और आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किए गए कार्यों को लिपिबद्ध करने की योग्यता हो। उन्हें लक्षित समूहों के साथ परिवर्तन प्राप्त करने, क्षमता का अनुभव करने और जीवन सुअवसरों को सुधारने के लिए बातचीत करने की आवश्यकता है। हस्तक्षेप की जांच और परिवर्तन प्राप्त करने के लिए समाज कार्य प्रणालियों को साफ करने और प्रयोग में लाने की बहुत अधिक आवश्यकता है। इन परिवर्तनों को ध्यान में रखकर निरंतर जांच, लिपिबद्ध करने, समीक्षा करने की आवश्यकता है और परिस्थितियों में परिवर्तनों का मूल्यांकन करने की आवश्यकता है तथा उसके अनुसार योजना बनाकर कार्य किए जाने चाहिए।

6.8 सक्षमता के नैतिक सिद्धांत

भारतीय प्रसंग में समाज कार्यकर्त्ताओं के लिए (थॉमस, 2015) नीति संहिता में प्रकाशित योग्यता के नैतिक सिद्धांत इस प्रकार हैं:

1 समाज कार्यकर्त्ताओं को व्यवसाय और मुवक्किलों की सहायता के लिए उत्तरदायित्व और वचनबद्धता के साथ अपनी योग्यता के क्षेत्रों के भीतर कार्य करना चाहिए।

2 समाज कार्यकर्त्ताओं को अनुसंधान के द्वारा व्यवसाय के आधार पर कौशलता और ज्ञान के लिए योगदान देने की आकांक्षा करनी चाहिए और इसके परिणामों को दूसरे व्यावसायिकों, व्यावसायिक संस्थानों और विद्यालयों तथा विश्व भर में समाज कार्य के विभागों के साथ सहभागिता करनी चाहिए।

3 समाज कार्यकर्त्ताओं को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि जो सेवाएं दी जा रही हैं वह उच्चतम गुणों की ओर प्रभावशाली हों तथा उनका लक्ष्य ग्राहकों की सर्वोत्तम अभिरुचियों पर हो।

4 समाज कार्यकर्त्ताओं को स्वयं केवल अध्ययन के पश्चात् क्षमता के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए, सफलतापूर्वक उपाधि/डिप्लोमा को पूरा करके, मार्गदर्शित प्रशिक्षण, संबंधित क्षेत्रों से विशेषज्ञों के साथ परामर्श करके और लोगों से जो हस्तक्षेपों के

क्षेत्रों में योग्य हों उनसे निरीक्षण करवाकर ही स्वयं को प्रभावशाली प्रस्तुत करना चाहिए।

5. समाज कार्यकर्त्ताओं को शोध खोजों से नया ज्ञान और कौशलताएं प्राप्त करके, दूसरे व्यावसायिकों से अनुभव को सहभाजित करके तथा विभिन्न प्रकृति के निरंतर शिक्षा कार्यक्रमों में भाग लेकर लगातार योग्यता प्राप्त करनी चाहिए (थॉमस 2015)।

6.9 समाज कार्य प्रक्रिया में मूल सक्षमताएँ

सक्षमता के अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण को और अधिक समझने के लिए, समाज कार्य अभ्यास शिखा के लिए परिषद द्वारा दस मुख्य समाज कार्य अभ्यास की दक्षताएं का उल्लेख निम्नलिखित रूप में किया गया है:

1. **व्यावसायिक समाज कार्यकर्त्ता के रूप में पहचानना और उसके अनुसार आचरण करना**

   समाज कार्यकर्त्ताओं को समाज कार्य की सेवाओं को मुवक्किलों ग्राहकों तक पहुंचाने के लिए अवश्य ही आग्रही होना चाहिए। उन्हें व्यक्तिगत परिवर्तन के लिए अवश्य ही अभ्यास करना चाहिए और निरंतर व्यावसायिक विकास को निश्चित करने के लिए आत्म–शुद्धि करनी चाहिए। व्यावसायिक भूमिकाओं और सीमाओं पर ध्यान केंद्रित करना भी बहुत महत्वपूर्ण है। व्यवहार, दर्शन और संप्रेक्षण मं व्यावसायिक आचरण व्यक्त करना चाहिए और दीर्घकालीन व्यवसाय सीखने में शामिल होना चाहिए और निरीक्षण इसके अतिरिक्त परामर्श का प्रयोग करना चाहिए।

2. **व्यावसायिक अभ्यास के मार्गदर्शक के लिए समाज कार्य नैतिक सिद्धांतों का प्रयोग करना**

   समाज कार्यकर्त्ताओं को इस तरीके से व्यक्तिगत मूल्य का प्रबन्ध और उनके साथ तादात्मय स्थापित करना चाहिए कि अभ्यास मार्गदर्शक के लिए व्यावसायिक मूल्यों को नियत/स्वीकार किया जाए। उन्हें नैतिक विवादों के समाधान के लिए संशयात्मक स्थिति को स्वीकार करना चाहिए। सैद्धांतिक निर्णयों तक पहुंचने के लिए नैतिक विचारों की रणनीतियां प्रयोग में लानी चाहिए। व्यक्ति को नैतिक समस्याओं को पराजित करने के योग्य होना चाहिए जो व्यावसायिक दक्षता में बाधा डाल सकता है।

3. **व्यावसायिक निर्णय को सूचित करने और संवाद करने के लिए महत्वपूर्ण सोच का प्रयोग करना**

   समाज कार्यकर्त्ताओं के पास भेद करने, मूल्यांकन करने की योग्यता होनी चाहिए शोध आधारित ज्ञान सहित औरज्ञान के विविध साधनों को संघटित करना चाहिए तथा निर्णय लेने से पहले बुद्धिमता से अभ्यास करना चाहिए। उन्हें मूल्यांकन के आदर्शों, रोकथाम, हस्तक्षेप और मूल्यांकन का भी विश्लेषण करना चाहिए औ व्यक्तियों, परिवारोमं, समूहों, संगठनों, समुदायों और सहकम्रियों के साथ कमा करने में प्रभावी मौखिक और लिखित संचार का प्रदर्शन करना चाहिए।

4. **अभ्यास में विविधता तथा विभिन्नता सम्मिलित करना**

   समाज कार्यकर्त्ताओं को उस सीमा को पहचानना चाहिए जो सांस्कृतिक संरचनाओं और मूल्यों को प्रभावित कर सकते हैं, उपेक्षित कर सकते हैं, विमुख कर सकते हैं, विशेषाधिकार और शक्ति को बढ़ा सकते हैं। विभिन्न समूहोमं के साथ काम करने

में व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों और मूल्यों के प्रभाव को खत्म करने के लिए उनहें प्रर्याप्त आत्म–जागरुकता हासिल करनी चाहिए। उन्हें अपने जीवन के अनुभवों को आकार देने में अंतर के महत्व को समझ कर संपक्र बनाना चाहिए और मान्यता प्रदान करनी चाहिए। यह स्वयं को शिक्षार्थियों के रूप में देखने के लिए प्रशंसनीय है और उन लोगों को नियुक्त करते हैं जिनके साथ वे सूचक के रूप में कार्य करते हैं।

5. **मानव अधिकारों और सामाजिक तथा आर्थिक न्याय में प्रगति करना**

समाज कार्यकर्त्ताओं को दमन और भेदभावों के रुपों ओर यंत्र रचनाओं को समझने के लिए अवश्य ही ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। उन्हें मानव अधिकारों, सामाजिक तथा आर्थिक न्याय के लिए एक वकील के रूप में कार्य करना चाहिए और सामाजिक तथा आर्थिक न्याय में प्रगति के लिए स्वयं को कार्यों में संलग्न रखना चाहिए।

6. **अनुसंधान ज्ञानी अभ्यास और अभ्यास–सूचित अनुसंधान में संलग्न**

समाज कार्यकर्त्ताओं को वैज्ञानिक जांच को सूचित करने के लिए अनुभव अभ्यास/कार्य का प्रयोग करना चाहिए और अभ्यास को लाने के लिए अनुसंधान के साक्ष्य का उपयोग करना चाहिए। समाज कार्यकर्त्ता को गहन शोधकर्ता भी होना चाहिए। बेहतर परिणामों को ढूंढने के लिए फिर से खोज के माध्यम से सेवा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए यह उसकी सहायता करेगा।

7. **मानव व्यवहार और सामाजिक पर्यावरण के ज्ञान का प्रयोग करना**

समाज कार्यकर्त्ताओं को आंकलन, हस्तक्षेप और मूल्यांकन की प्रक्रियाओं का मार्गदर्शन करने के लिए वैचारिक रुपरेखा का उपयोग करना चाहिए और व्यक्ति तथा वातावरण को समझने के लिए ज्ञानका प्रयोग भी करना चाहिए। उसे व्यक्ति के गतिशील व्यवहार के बारे में समझ होनी चाहिए और व्यक्ति तथा उसके वातावरण को समझना चाहिए।

8. **सामाजिक और आर्थिक कल्याण की प्रगति के लिए और प्रभावपूर्ण समाज कार्य सेवाएं प्रदान करने के लिए नीति अभ्यास में संलग्न**

समाज कार्यकर्त्ताओं को नीतियों के लिए विश्लेषण करना, प्रतिपादित करना और वकालत करनी चाहिए ताकि सामाजिक कल्याण में प्रगति हो, और प्रभावपूर्ण नीति कार्य के लिए सहकर्मियों और ग्राहकों के साथ सहयोग करना चाहिए।

9. **अभ्यास को आकृति देने वाले संदर्भों के प्रति प्रतिक्रिया**

समाज कार्यकर्त्ताओं को स्थानीय, जनसंख्या, वैज्ञानिक और तकनीकी विकास को बदलने पर ध्यान देना चाहिए और निरंतर खोज तथा मूल्यांकन करना चाहिए, और संबंधित सेवाएं प्रदान करने के लिए उभरते सामाजिक रुझान पर ध्यान देना चाहिए और सामाजिक सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार के लिए सेवा वितरण और अभ्यास में स्थायी परिवर्तन को बढ़ावा देने में नेतृत्व प्रदान करना चाहिए।

10 **व्यक्तियों, परिवारों, समूहों, संगठनों और समुदायों के साथ संलग्न, आंकलन, हस्तक्षेप और मूल्यांकन करना**

समाज कार्यकर्त्ताओं को मूल रूप से और प्रभावशाली ढ़ंग से व्यक्तियों, परिवारों, समूहों, संगठनों और समुदायों के साथ कार्य करने के लिए तैयार रहना चाहिए। सहानुभूति और अन्य पारस्परिक कौशल का उपयोग करके और एक पारस्परिक रूप से सहमति पर कार्य करने का ध्यान करके, इच्छित परिणाम प्राप्त किए जाएं।

समाज कार्यकर्त्ता मुवक्किलतल की क्षमताओं और सीमाओं का मूल्यांकन करते हैं, ग्राहक आंकड़ों को प्रस्तुत करते हैं, सुव्यवस्थित करते हैं और इकट्ठा करते हैं, विशिष्ट उचित हस्तक्षेप रणनीतियों और हस्तक्षेप की रणनीतियों के भाग के रूप में पारस्परिक अनुकूल लक्ष्यों और उद्देश्यों का विकास करते हैं। उन्हें ग्राहकों की क्षमताओं को बढ़ाने वाली रणनीतियों को लागू करनाचाहिए, ग्राहकों की समस्याओं को हल करने में सहायता करना, ग्राहकों के लिए अधिवक्ता और मध्यस्थता का काम करना चाहिए। समाज कार्यकर्त्ताओं को गंभीर रूप से विश्लेषण, निगरानी और हस्तक्षेपों का मूल्यांकन और अच्छी तरह से आवश्यक जांच करनी चाहिए/आगे की कार्रवाई करनी चाहिए।

6.10 सारांश

समाज कार्यकर्त्ता अभ्यास में मूल्य की तरह सक्षमता का अर्थ है व्यवसाय के अभ्यास में कौशलताओं, ज्ञान और मूल्यों का एकीकरण। योग्यता का नैतिक सिद्धांत समाज कार्य के अभ्यास में व्यक्तियों, परिवारों, समूहों, संगठनों और समुदायों के साथ योग्यताओं के प्रयोग और एकीकरण को प्रदर्शित करता है। ऐसा नहीं है कि हम इसे एक मात्र पाठ्यक्रम के पूरा होने पर प्राप्त कर लेते हैं। यह एक चालू/सतत् प्रक्रिया है। सभी क्रियाशील समाज कार्यकर्त्ता योग्यता को निरंतर प्राप्त कर सकते हैं। विभिन्न लोगों के समूह के साथ कार्य करने के लिए कौशलों का विकास करते हैं, यह नए अनुसंधान/खोजों से ज्ञान प्राप्त करके, प्रभावपूर्ण ढ़ंग से विशेष परिस्थिति को कार्यान्वित करना सीखते हैं। यह अध्याय विभिन्न चरणों, मुख्य घटकों और योग्यता से संबंधित व्यवसाय के अन्य विभिन्न पहलुओं के विषय में विचार व्यक्त करते हैं। इस प्रकार सक्षमता के लिए वचनबद्धता एक चालू/सतत् प्रयास है जो व्यावसायिकों के कार्य को प्रभावपूर्ण ढ़ंग से करने में सहायता करेगा।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणी : क) उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ख) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1. योग्यता/क्षमता को परिभाषित करें और व्यावसायिक समाज कार्यकर्त्ताओं के लिए आवश्यक मुख्य दक्षताओं का उल्लेख करें।

.....

.....

.....

.....

2. सक्षमताओं के विभिन्न प्रकारों की व्याख्या करें। समाज कार्य के क्षेत्र से उदाहरण सहित इनकी व्याख्या करें

.....

.....

.....

.....

.....

6.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

किताबें

नोर्टन, डी.जी. (1978) अध्यात्मक दृष्टिकोण न्यूयाकः समाज कार्य शिक्षा पर परिषद

रावेन, जे, ओर स्टेफनसन, जे (2001) प्रशिक्षार्थी समाज में दक्षता न्यूयार्कः पिटरलैंग

थॉमस, ग्रेशियस (2015) समाज कार्यकर्त्ताओं के लिए नीति संहिताः नई दिल्लीः इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

पत्रिकाएं

करेशियो सी ईटीसी. (2002)स्थानांतरण मानदंडः फलेक्सनर से शैक्षणिक चिकत्सा के लिए समरुपता 77(5), 361–367

शीथाम, जी., एंड शिवर, जी(1996) पेशेवर क्षमता एक मॉडल के रूप में, यूरोपीय औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र की एक प्रत्रिका

फलावर, जे,(1999). मश के अनुसार, चिकित्सक एक्जीक्यूटिव 25 (1):64–6पीएमआईडी 10387273

मैनसफील्ड बी. (1999) सभी योग्यताओं के बारे सभी क्या हैः त्रैमासिक पत्रिका, स्प्रींग 1999

वेबसाइट

दक्षताओं का परिचय 12.10.2014 को http://learnenglish.britishcouncil.org/en/business-magazine/introduction-competencies प्राप्त क्षमता http://en.wikipedia.org/wiki/competence (humanresources) 15/10/2014 को पुनः प्राप्त

राष्ट्रीय समाज कार्यकर्त्ता संगठन (2000) एनएएसडब्ल्यू कोड ऑफ एथिकस, वाशिंगटन, डीसीःएनएएसडब्ल्यू www.naswdc.org/ 15/10/014 को पुनः प्राप्त

जैनेट हैशट, (2008) व्यवहार दक्षता और परिभाषाएं और व्यवहार संबंधी संकेतकhttp://ww.spa.ga.gov/pdfs/wfp/GAframework.pdf को पुनः प्राप्त

समाज कार्यकर्त्ता के राष्ट्रीय संगठन (2000) समाज कार्य व्यवसाय में सांस्कृतिक क्षमता–इन सोशल वर्क स्पीर्कसः एनएएसडब्ल्यू पॉलिसी स्टेटमेंट (पीपी.59–62). वाशिंगटन, डीसीःएनएएसडब्ल्यू प्रैस. www.naswdc.org/practice/standards/ NASWcultural standards.pdf 12/10/014 को पुनः प्राप्त

रैन्किन, एन. (2002)योग्यता और भावनात्मक विकास वार्षिक बेंचमार्किंग www. employment –studies.co.uk/pdflibrary/mp25.pdf 16/10/014 को पुनः प्राप्त

लंदन इंस्टीट्यूट ऑफ कार्मिक प्रबंधन http://docs.china-europaforum.net/competences_of_a_professional_soical_worker.pd 07/09/014 को पुनः प्राप्त

स्क्रोरटर, कैथरायन (2008) साहित्य योग्यता समीक्षा रिवयू: http://www.cc-institute.org/docs/default-document-librarycompetence_litreview.pdf 10/09/014 को पुनः प्राप्त

टैरी मिजराही एंड ईटी.एल. (2001) एनएएसडब्ल्यू स्टैंडर्ड फॉर सांस्कृतिक क्षमता के लिए मानक http://www.naswdc.org/practice/standards/ NASWcultural standards.pdf 12/08/014 को पुनः प्राप्त

यूनाईटेड नेशनस. भविष्य में योग्यताएं. http://careers.un.org/lbw/attachments/ comopetencies_booklet_en.pdf 03/11/2014 को पुनः प्राप्त

वूडरफ, सी. (1993)मूल्यांकन केन्द्रः पहचान करना और उन्नत करना www.eyrolles.com/ .../Chap-1_Levy-Leboyer.pd 18/10/2014 को पुनः प्राप्त

6.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) सक्षमता से तात्पर्य एक प्रदत्ता परिस्थिति कार्य करने की एक संभावित योग्यता तथा/अथवा क्षमता से होता है। सक्षमता एक परिस्थिति में व्यक्ति के वास्तविक प्रदर्शन पर केन्द्रित होती है।

समाज कार्य व्यवसाय में मूल सक्षमताएँ हैं :

- स्वयं की एक पेशेवर समाज कार्यकर्त्ता के रूप में पहचान करना तथा तद्नुसार आचरण करना है।
- समाज कार्य के नैतिक सिद्धांतों का पेशेवर अभ्यास का मार्गदर्शन करने हेतु प्रयोग करना।
- पेशेवर निर्णयों को सूचित करने तथा सम्प्रेषण करने हेतु आलोचकीय चिंतन का प्रयोग करना।
- अभ्यास में विभिन्नता तथा विभेदों को संलग्न करना।
- अनुसंधान आधारित अभ्यास तथा अभ्यास आधारित अनुसंधान में संलग्न होना।
- मानव व्यवहार तथा सामाजिक वातावरण के ज्ञान का प्रयोग करना।
- सामाजिक तथा आर्थिक कल्याण को प्रोत्साहित करने तथा प्रभावी समाज कार्य सेवाओं को प्रदान करने हेतु नीति अभ्यास में संलग्न होना।
- संन्दर्भों हेतु प्रतिक्रिया जो अभ्यास को आकार देती है।
- व्यक्तियों तथा समूहों के साथ संलग्न होना, आंकलन करना, अन्तक्षेप करना तथा मूल्यांकन करना।

2. सक्षमताओं के प्रकार हैः

- मूल सक्षमताएँ
- तकनीकी सक्षमताएँ
- व्यवहारात्मक सक्षमताएँ
- प्रबन्धन सक्षमताएँ